सच्ची गीता खण्ड-1

1.	श्रीमत क्या है और किसकी है
2.	श्रीमत से लाभ-हानि
3.	त्रिमूर्ति
	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)
	बाप की प्रत्यक्षता
	शिवबाप की प्रवेशता
	बच्चों में प्रवेशता
	सम्पूर्ण-अपूर्ण मम्मा-बाबा
	बाप की पहचान (नाम-रूप से)
	बाप का रूप, वेश-भूषा
	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)
	अलौकिक जन्म स्थली
	बाप के गुण
	बाप में विशेष शक्तियाँ
	बाप के कर्तव्य
	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)
	बाप की विचित्रता
	बाप की लौकिक आयु
	बाप की अलौकिक आयु
	बाप की फुटकर पहचान
	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2
	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं
	नया पार्ट
	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट
	राम बाप को कहा जाता है
	रामबाप ही पतित-पावन सद्गति दाता
	राम मत से राम राज्य
	राम फेल
	प्रजापिता (साकार)
	फर्रुखाबादी बेगर टू प्रिंस
	ब्रह्मा बडी माँ है

	ब्रह्मा टेम्परारी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ
	गुलजारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं
	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप
	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो
4.	जगतपिता-जगदम्बा
5.	याद किसको करें, किसको नहीं
6.	याद की विधि
7.	लक्ष्मी-नारायण
	सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है
	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी
	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी
	जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण
	भारत कौन?
8.	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल
	संगम की आयु
	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक
	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश
	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है
	चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार
	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति
	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स
9.	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)
	कन्वर्टेड हिंदू कौन?
	विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने
	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?
	रावण कौन?
	कामी इस्लामी
	क्रोधी क्रिश्चियन
	लोभी मुस्लिम
	मोही महर्षि
	अहंकारी रशियन्स
	यादव-कौरव-पाण्डव
	युधिष्ठिर-ब्रह्मा
	भीम-शंकर
	अर्जुन-बुद्ध

	नकुल-शंकराचार्य
	सहदेव-सिक्ख
	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स
	महाविनाश कब होगा?
	विनाश किसका होगा?
	महाभारत विनाश
	माला
	रुद्रमाला
	अष्टरत्न व नौरत्न
	100 और 16000
10.	सीढ़ी-
	इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?
	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि
	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर
	संगमयुगी कृष्ण जन्म
	संगमयुगी बालकृष्ण
	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स
	रावण-राज्य की शूटिंग -
	(1) अर्धविनाश
	(2) सोमनाथ स्थापना
	(3) गणेश-हनुमान की पूजा
	(4) चित्रकला प्रदर्शनी
	(5) शास्त्र निर्माण
	(6) मेला में मैला
	(7) तीर्थ यात्राएँ
	(8) हाय शिवबाबा बचाओ
	संगमयुगी स्वर्ग

श्रीमत क्या है और किसकी है

- एक ईश्वर की मत को ही श्रीमत कहेंगे। (मु०8.3.73 पृ०1 आदि)
- बच्चों को हमेशा समझना चाहिए हमको श्रीमत मिलती है। श्रीमत पर चलेंगे फिर रिस्पॉन्सिबल बाबा है। बाप कहते हैं, मैं इन द्वारा मत देता हूँ। समझो, कुछ उल्टा भी हो जाता है, तो रिस्पॉन्सिबल मैं हूँ। मैं इनको सुल्टा कर दूँगा। (मु०6.2.70 पृ०2 अंत)

• ऐसे नहीं, बाप–दादा, माँ को कोई बच्चों की मत पर चलना है। नहीं। बच्चों को श्रीमत पर चलना है। बाप को अपनी मत नहीं देनी है। ऐसे भी कई समझते हैं, मात–पिता अथवा बाप–दादा हमारी मत पर चलें; परंतु यह तो हो नहीं सकता। (मु०9.4.73 पृ०2 आदि)

• बाप तो तुम्हारे कल्याण के लिए ही आए हैं; परंतु बाप के श्रीमत पर चल नहीं सकते। श्रीमत कहे, यहाँ जाओ, तो जावेंगे नहीं। कहेंगे, यहाँ गर्मी है, यहाँ ठण्डी है। कुछ भी बाप की पहचान नहीं है। इनमें कौन हमको कहते हैं यह भी समझते नहीं हैं। यह साधारण रथ ही बुद्धि में आता है। दो बाप बुद्धि में आता ही नहीं। बड़े–2 राजाओं का कितना सबको डर रहता है। उनके आगे जाने में ही थर–2 हो जाते हैं। (मु०20.2.68 पृ०1 अंत)

• कदम पिछाड़ी कदम चलना है। तुम बेहद बाप की बन्नी बनती हो न। फिर वह जैसे कहे करना पड़े। बाबा ने कहा है चिट्ठी लिखो तो भी अंडर में करो– शिवबाबा मार्फत ब्रह्माकुमारीज़। (मु०20.12.73 पृ०3 मध्य)

• मेरे सिवाय और कोई की नहीं सुनो। ....मनुष्य मत न सुनो, एक ही ईश्वर की मत पर चलो। जो ईश्वर कहे वह राइट, जो मनुष्य (कहे) वह है रॉंग। (मु०23.3.68 पृ०1 मध्य)

• बाप कहते हैं, सदैव श्रीमत पर चलो। अपनी मत पर चलने से धोखा खावेंगे। सच्ची कमाई होती है सच्चे बाप की मत पर चलने से। (मु०17.1.73 पृ०2 मध्य) [मु०15.1.78 पृ०2 मध्यांत]

• बाप का कब सामना नहीं करना चाहिए। बाप का कहा कब भी मना नहीं करना चाहिए। (मु०6.9.69 पृ०1 मध्य)

• कहेंगे– बाबा, जैसे आप चलाओ। बाप भी मत तो इन द्वारा ही देंगे ना; परंतु इनकी मत भी लेते नहीं हैं, फिर भी पुरानी सड़ी हुई मनुष्य मत पर चलते हैं। देखते भी हैं शिवबाबा इस रथ से आकर मत देते हैं, फिर भी अपनी मत पर चलते हैं। जिसको पाई–पैसे की मत (कहें उस) पर चलते हैं। रावण के(की) मत पर चलते–2 इस समय कौड़ी मिसल बन गए हैं। (मु०10.12.68 पृ०2 मध्यादि)

• आसुरी मत पर चलने से मनुष्य नीचे ही गिरते रहेंगे। श्रीमत तो एक ही बाप की है। बाकी सब हैं आसुरी मत देने वाली आसुरी सम्प्रदाय। आसुरी मत देने वाला रावण है। (मु०19.5.73 पृ०2 आदि)

• शिवबाबा आकर तुमको अपना बनाते हैं। कहते हैं– सिर हथेली पर रख {कर} बाप के बने हैं उनके डायरैक्शन पर चलने {के लिए}। बच्चों को उनको मत देने की दरकार नहीं रहती। वह खुद मत देने वाला है। ऐसे नहीं, यह क्यों करते {कहते}? गोद में क्यों लेते? नहीं। यह तो सब बच्चे हैं। शिवबाबा नामी–ग्रामी है। वह जो मत देंगे, जो कुछ करेंगे, राइट ही करेंगे। इस (साकार ब्रह्मा) से भी जो कुछ कराते हैं, राइट ही कराते हैं; क्योंकि करन–करावनहार है न। (मु०24.5.64 पृ०1 मध्यादि)

• एक के(की) मत पर ही चलने से कल्याण हो सकता है। जिसको तुमने आधा कल्प याद किया, अभी वह तुमको मिला है तो उनको पकड़ लेना चाहिए। इसमें मूँझते क्यों हो? बाबा कहते ड्रामा अनुसार फिर से राज्य–भाग्य देने आया हूँ। मेरी मत पर चलना होगा। बुद्धि से याद करो। (मु०13.4.77 पृ०3 मध्यादि)

•श्रीमत है ही एक परमपिता परमात्मा की। बाकी सभी (की) है आसुरी मत। (मु०2.6.73 पृ०3 मध्य)

• लौकिक सम्बंधियों से कुछ न पढ़ना(पूछना) है, न उनकी मत पर चलना है। एक (की) ही मत पर चलना है। (मु०16.2.68 पृ०1 मध्यादि)

• ब्रह्मा की मत भी मशहूर है। शिवबाबा की श्रीमत भी मशहूर है। तो ब्रह्मा वा शिवबाबा के साथ उन्हों की औलाद की मत मशहूर होनी चाहिए। तुमको शिवबाबा और ब्रह्मा दोनों की मत पर चलना चाहिए। (मु०21.3.73 पृ०1,2)

• अब मैं सम्मुख हूँ। मैं भी ट्रस्टी बन फिर तुमको ट्रस्टी बनाता हूँ। जो कुछ करो पूछ कर करो। मैं तो जीता–जागता हूँ ना। बाबा हर बात में राय देते रहेंगे। (मु०14.3.70 पृ०3 आदि)

- एक की श्रीमत पर चलना है। अपनी मनमत पर चला तो यह मरा। श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात् देवता बनेंगे। (मु०28.8.73 पृ०3 मध्यांत)
- इतना वफादार और फरमानबरदार बनना है जो एक सेकेंड भी, एक संकल्प भी फरमान के सिवाय न चले। (अ०वा०22.6.71 पृ०114 मध्य)
- भल मुरली बहुत अच्छी चलाते हैं वा चलाती हैं; परंतु देह का अभिमान बहुत है। थोड़ा भी बाबा सावधानी देंगे तो झट टूट पड़ेंगे। नहीं तो गायन है मारो चाहे प्यार करो..। यहाँ बाप राइट बात कहते हैं तो भी गुस्सा चढ़ जाता है। ऐसे–2 बच्चे भी हैं कोई तो अंदर में बहुत शुक्रिया मानते हैं, कोई अंदर जल मरते हैं। (मु०18.3.70 पृ०3 आदि)
- तुम बेहद के बाप के सम्मुख बैठे हो। श्रीमत पर चलना होता है कदम–2 पर और चलेंगे भी वह जिनका सारा समाचार बाप को मालूम होगा। बच्चों की तो रहनी–करनी आदि का पूरा समाचार हरेक का बाप पास आना चाहिए तो बाप को भी मालूम पड़े और उस रीति फिर समय प्रति समय मत देते रहें। कदम–2 पर मत लेनी पड़े। (मु०29.2.72 पृ०1 मध्यादि)
- जो बिगर कहे काम करे वह देवता, कहने से करे वह मनुष्य, कहने से भी न करे तो उसे गधा कहेंगे। (मु०17.4.73 पृ०2 अंत)
- मुखवंशावली हैं तो जो बाबा मुख से कहे वो मानना पड़े। (मु०8.10.73 पृ०3 मध्यांत)
- माया कोई मुख से मत नहीं देती, एक्ट ऐसी करते हैं। अब बाप मुख से बैठ समझाते हैं। (मु०9.10.73 पृ०2 आदि)
- श्रीमत पर ज़रूर चलना चाहिए। अपनी मत नहीं चलानी है। मित्र–सम्बंधियों को श्रीमत पर चिट्ठी लिखनी है। श्रीमत पर न चलेंगे तो उसका कल्याण ही नहीं करेंगे। बहुत हैं जो छिपाकर चिट्ठियाँ लिखते हैं। बाप शिक्षक बैठे हैं, बताना चाहिए– बाबा, हम ऐसे–2 लिखते हैं। बाबा तुमको ऐसी चिट्ठियाँ लिखना सिखाएँगे जो पढ़ने वाले के रोमाँच खड़े हो जावेंगे। चिट्ठी कैसे लिखनी चाहिए, तुम बच्चों को एक को भी मालूम नहीं। बाबा मना नहीं करते हैं। तोड़ निभाना है, नहीं तो चैरिटी बिगन्स कैसे होगी! (मु०24.4.72 पृ०1 अंत, 2 आदि) [मु०25.4.77 पृ०1 अंत, 2 आदि]
- श्रीमत लेने बिगर तो काम न चले। बिगर गाइड अकेला पहुँच न सके। कोई रास्ता जानते ही नहीं तो जा कैसे सकते? गाइड का ज़रूर हाथ चाहिए। (मु०5.8.73 पृ०2 आदि)
- बाप की श्रीमत पर चलना है फिर रिस्पॉन्सिबल वह रहेगा। ब्रह्मा की मत भी गाई हुई है। उल्टी मत देंगे तो भी रिस्पॉन्सिबल यह हो जावेगा। (मु०11.4.73 पृ०3 आदि)
- अब बाप के मत पर तो ज़रूर चलना चाहिए। बाप डायरैक्शन देते हैं फिर कुछ उल्टा भी हो गया तो आपे ही उसको सुल्टा बना देंगे। राय देते हैं तो फिर ज़िम्मेवार वह है। (मु०14.12.71 पृ०3 अंत)
- कदम–2 पर बाप से राय लेनी है। कोई कहते हैं– बाबा, धंधे में झूठ बोलनी पड़ती है। बाप कहते हैं, वह तो धंधे में होता ही है। तुम बाप को याद करते रहो। उसका मतलब यह नहीं कि विकार में जाओ, फिर कहो मैं याद में था। (मु०29.10.76 पृ०3 अंत)
- भल कितना भी कहे हमारा बाप में प्यार है; परंतु ईश्वरीय कायदे के बरखिलाफ बात की तो रावण सम्प्रदाय का ही समझो। (मु०24.2.69 पृ०1 अंत)
- तुम बच्चों को भी कब भी सुनी–सुनाई बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए। ....धूतियाँ ही ऐसे–2 खराब काम करती हैं, झूठी बातें बनाकर औरों की भी दिल खराब कर देती हैं।(मु०18.8.68 पृ०3आदि)[मु०18.8.74 पृ०2अंत, 3आदि]
- हमेशा समझो कि शिवबाबा इन द्वारा डायरैक्शन देते हैं। .... अगर ईश्वरीय डायरैक्शन न समझ, मनुष्य का डायरैक्शन समझा तो मूँझ पड़ेंगे। बाबा कहते हैं मेरे डायरैक्शन पर चलने से फिर मैं रिस्पॉन्सिबल हूँ।

इन द्वारा जो कुछ होता है उनकी एक्टिविटी का मैं रिस्पॉन्सिबल हूँ। इसको हम राइट कर ही देंगे। तुम सिर्फ हमारे डायरैक्शन पर चलो। (मु०13.1.70 पृ०1 आदि)

• बाप सम्मुख आकर श्रीमत देते हैं। .....यहाँ तो बाप मत देते हैं, जैसे स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं। (मु०17.3.73 पृ०3 मध्य)

•अनेक मत हैं ना। अनेक मत से दुर्गति होती है। ....यह तो बहुत अच्छा स्लोगन है– 'मनुष्य, मनुष्य को दुर्गति में ले जाते हैं, एक ईश्वर सभी मनुष्यों को सद्‌गति देते हैं।' (मु०11.3.69 पृ०1 अंत) [मु०21.2.04 पृ०2 आदि]

• इन रत्नों के लिए ही कहा जाता है– एक–2 रत्न लाखों का है। कदम–2 पर पदम देने वाला तो बाप ही है ना। (मु०ता० 26.8.68 पृ०3 आदि)

•ज्ञान सागर तो एक ही बाप है। .....ज्ञान जब मेरे से सुनें तब ही ज्ञानी कहा जाए। बाकी सभी हैं भक्त। ....श्रीमत ही श्रेष्ठ है। बाकी वह सभी हैं मनुष्य मत। (मु०ता० 23.3.68 पृ०1 अंत) [मु०ता० 12.3.99 पृ०1 अंत]

•गवर्मेण्ट का कोई भी ऑर्डर हुआ तो उसमें कोई आनाकानी नहीं। यह मैं कर नहीं सकता हूँ, इसको ही कहा जाता है नाफरमानबरदार। श्रीमत मिलती ही है ऐसे–2 कार्य के लिए तो समझना चाहिए शिवबाबा की श्रेष्ठ मत है। ....उनकी मत कब उल्टी होती ही नहीं है। तो सब शिवबाबा का समझ ही करना है। शिवबाबा है ही सद्‌गति दाता। कब भी उल्टी मत नहीं देंगे। (मु०3.10.69 पृ०2 आदि) [मु०18.10.00 पृ०2 अंत]

• वहाँ तो अनेक मतें मिलती हैं। यहाँ तो एक ही मत मिलती है। वह है वंडरफुल मत। (मु०7.4.69 पृ०1 आदि)

• जो भी डायरैक्शन मिलते हैं, डायरैक्ट बाप द्वारा मिलते हैं। चाहे निमित्त आत्माएँ दादियों द्वारा मिलते हैं, उसको रिगार्ड देना अति आवश्यक है। इसमें न बहाना देना, न अलबेलापन करना। (अ०वा०30.3.98 पृ०146 आदि)

• सेन्सिबुल बच्चे जो होंगे उनको कोई भी राय पूछनी होगी तो श्रीमत लेंगे। श्रीमत पर चलने से कब धोखा नहीं खावेंगे। शिवबाबा की ही श्रीमत है। यह कोई दूर थोड़े ही है। (मु०11.12.77 पृ०2 मध्यादि)

• बी०के० की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रॉंग है? तुम बच्चों को राइट और रॉंग समझ भी अभी मिली है। (मु०27.1.95 पृ०3 मध्य)

• बाप कहते हैं अभी मुझे याद करो और ट्रस्टी (धरोहर का संरक्षक) बनकर श्रीमत पर चलो। हर बात में राय लेते रहो। बच्चों आदि की शादी करानी है, मना थोड़े ही है। हर एक का हिसाब–किताब अलग है। जैसा–2 जो बच्चा होगा उनका हिसाब देख राय दी जाती है। ....पैसा तुम्हारे पास है तो मकान भल बनाओ, मना नहीं है। मकान आदि बनाकर बच्चों की शादी आदि कराकर हिसाब चुक्तू कर फिर आकर तुम बाबा के बनो। (मु०14.9.73 पृ०3 मध्य)

• हम हैं सच्चे–2 मुखवंशावली ब्राह्मण। तो बच्चों को बाप जो मुख से कहे वह मानना पड़े। (मु०15.9.71 पृ०3 आदि) [मु०22.10.96 पृ०3 मध्यांत]

• डायरैक्ट ईश्वर मत देते हैं कि यह करो, रिस्पॉन्सिबल हम हैं। ......हमेशा समझो यह डायरैक्शन ईश्वर हमको देते हैं। (मु०13.1.70 पृ०1 अंत)

श्रीमत से लाभ-हानि

• सिवाय श्रीमत के कोई भी श्रेष्ठाचारी बन नहीं सकता। (मु०31.10.73 पृ०3 मध्य)

- बाप तुम्हारी सभी कामनाएँ बिगर माँगे पूरी कर देते हैं, अगर बाप की आज्ञा पर चलते हो तो। अगर बाप की आज्ञा का उल्लंघन कर उल्टा रास्ता लिया तो हो सकता है स्वर्ग में जाने के बदली नर्क में गिर जायँ। (मु०2.1.71 पृ०1 मध्य)
- बेहद के बाप की श्रीमत पर न चलेंगे तो जानवरों मिसल मर पड़ेंगे। (मु०18.2.69 पृ०2 मध्यादि)
- श्रीमत को(का) उल्लंघन किया तो लम्पट, वैश्या बन जावेंगे। पता भी नहीं पड़ेगा। बाप तो बच्चों को सावधान करते हैं। श्रीमत को(का) उल्लंघन न करना है। आसुरी मत पर चलने से ही तुम्हारी यह बुरी गति हुई है। (मु०2.1.69 पृ०1 मध्यांत)
- बाबा कहे यह काम न करो, मानेंगे नहीं। ज़रूर उल्टा काम करके दिखावेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें तो हर प्रकार की(के) चाहिए ना। (मु०10.12.68 पृ०3 मध्यांत)
- बहुत गोप हैं आपस में कमिटियाँ आदि बनाते हैं। जो कुछ करते हैं श्रीमत के आधार बिगर करते हैं, तो डिससर्विस करते हैं। बिगर श्रीमत करेंगे तो गिरते ही जावेंगे। बाबा ने शुरू में भी कमिटी बनाई थी तो माताओं की ही बनाई थी। (मु०2.1.69 पृ०1 अंत)
- जब किसी न किसी ईश्वरीय मर्यादा वा श्रीमत के डायरैक्शन को संकल्प में वा वाणी में वा कर्म में उल्लंघन करते हो तब कन्फ़्यूज़ होते हो। (अ०वा०14.1.84 पृ०101 मध्य)
- मेहनत तब करनी पड़ती है जब मर्यादाओं की लकीर से संकल्प, बोल वा कर्म से बाहर निकल आते हैं। मर्यादाएँ हर कदम के लिए बाप–दादा द्वारा मिली हुई हैं, उसी प्रमाण कदम उठाने से स्वतः ही मर्यादा पुरुषोत्तम बन जाते हैं। (अ०वा०21.4.83 पृ०156 मध्य)
- श्रीमत पर चलने वाले ही समझदार बनते हैं। वह फिर छिपे नहीं रह सकते। वह सदैव श्रेष्ठाचारी ही काम करेंगे। (मु०9.8.71 पृ०3 मध्यादि)
- अपना हठ करते हो। जैसे बाल हठ होता है ना। बाल–हठ करके अपनी मनमत पर चल पड़ते हो; इसीलिए अपने आपको परेशान करते हो। यह बाल–हठ नहीं करो। श्रीमत में अगर मनमत मिक्स करते हो तो ऐसे मिक्स करने वालों को सज़ा मिलती है। सज़ा बाप नहीं देता; लेकिन स्वयं, स्वयं को सज़ा के भागी बना देते हैं। खुशी, शक्ति गायब हो जाना ही सज़ा है ना। (अ०वा०3.5.77 पृ०123 मध्य)
- अगर श्रीमत पर कदम होगा तो कभी भी अपना मन असंतुष्ट नहीं होगा। मन में किसी प्रकार की हलचल नहीं होगी। स्वतः श्रीमत पर चलने से नैचुरल खुशी रहेगी। ....मनमत पर चलने वाले के मन में हलचल होगी। श्रीमत पर चलने वाला सदा हल्का और खुश होगा। (अ०वा०29.5.77 पृ०194 आदि)
- कदम–2 श्रीमत पर चलना ज़रूरी है। आपस में भी बहुत मीठा रहना है, नहीं तो बापदादा का नाम बदनाम करेंगे। (मु०9.2.73 पृ०2 अंत)
- श्रीमत पर चलने से सदा सलामत रहेंगे। सदा सलामत का अर्थ भी बड़ा भारी है। कब तुमको चोट नहीं लगेगी, कोई तकलीफ न होगी– इतना तुमको सदा सलामत बनाते हैं। निरोगी काया रहेगी। (मु०26.5.64 पृ०3 मध्यांत)
- और सभी की मत है कुमत, कलियुगी आसुरी मत। उनसे कुमत ही बनेंगे। अब मैं तुमको सुमत बनाता हूँ। और कोई की भी मत पर न चलो। मैं श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हूँ, ज़रूर ऊँच बनाऊँगा। तो वह श्रीमत पकड़नी चाहिए। और कोई की मत ली तो धोखा खाया। (मु०2.4.73 पृ०2 अंत, 3 आदि)
- जो बाबा बोले वह करते चलो, फिर बाबा जाने, बाबा का काम जाने। जैसे बाबा कहे वैसे चलो तो उसमें कल्याण भरा हुआ है। बाबा कहे ऐसे चलो, ऐसे रहो– जी हाज़िर, ऐसे क्यों? नहीं, जी हाज़िर। समझा– जी हज़ूर वा जी हाज़िर। तो सदा उड़ती कला में जाते रहेंगे। (अ०वा०12.10.81 पृ०40 अंत, 41 आदि)
- बड़ा बाबा जो कहे वह मानना चाहिए ना। ...... उनकी बात तो आँख बंद कर माननी चाहिए; परंतु ऐसे निश्चय बुद्धि हैं नहीं। भल उसमें नुकसान हो वा फायदा हो, मान लेना चाहिए। भल नुकसान भी हो जाय

फिर भी बाबा कहते हैं ना हमेशा ऐसे समझो शिवबाबा कहते हैं, ब्रह्मा के लिए मत समझो। रिस्पॉन्सिबल शिवबाबा हो गया। उनका यह रथ है। वह आपे ही ठीक कर देंगे। कहेंगे मैं बैठा हूँ। हमेशा समझो शिवबाबा ही कहते हैं। (मु०4.4.71 पृ०3 मध्यादि)

• जो बाप के फरमान पर चलेंगे उन्हों की ही सद्गति है। (मु०12.5.77 पृ०2 मध्य)

• अब मेरी श्रीमत पर चलो। अपनी आसुरी मत बंद कर दो। अपनी मत पर चला गोया वह दुर्गति को पाने का पुरुषार्थ करते हैं। आखिर अधोगति को पा लेते हैं। (मु०25.1.73 पृ०2 मध्य)

• जो श्रीमत पर नहीं चलते उनके लिए समझना चाहिए यह तो अजामिल में भी (अजामिलों से भी ज़्यादा) अजामिल हैं। (मु०16.4.73 पृ०1 मध्यादि)

• ईश्वर तो मालिक है न। वह श्रीमत देते हैं कि यह करो। अगर वह नहीं करते तो नास्तिक ठहरे न। (मु०18.12.73 पृ०3 आदि)

•अब मेरी मत पर एक्युरेट चलो। यह मम्मा–बाबा एक्युरेट चलते हैं; इसलिए पहले–2 बादशाही इन्हों को मिलती है। (मु०3.3.72 पृ०2 मध्य) [मु०5.3.97 पृ०2 अंत]

• श्रीमत देने वाला बाबा साजन बैठा है ना। ....कदम–2 श्रीमत पर न चले तो रोला पड़ जावेगा। बाबा कोई दूर थोड़े ही है। सम्मुख आकर पूछना चाहिए। (मु०3.1.78 पृ०2 अंत)

•दूसरे की मत (पर) चला तो यह मरा। बाबा को लिखते हैं– बाबा, माया को कहो हम पर क्षमा करे। बाबा कहते– नहीं, अभी तो माया को हम ऑर्डर करते हैं कि खूब तूफान मचाओ। दुःख के, विकर्मों के एकदम पहाड़ गिरा दो। अच्छी तरह नाक से फथकाओ। (मु०7.5.73 पृ०3,4) [मु०11.4.03 पृ०4 आदि]

• चंडिकाएँ भी हैं ना जो बाप की श्रीमत पर नहीं चलती हैं। बाप के बच्चे आज्ञाकारी नहीं होते हैं तो उनको चंडाल कह देते हैं। (मु०13.2.68 पृ०2 मध्य)

• जो बच्चा हजूर की हर श्रीमत पर हाज़िर हजूर कर चलता है उसके आगे सर्व शक्तियाँ भी हजूर हाज़िर करती हैं। (अ०वा०2.11.04 पृ०19 अंत)

• बाप के फरमान पर न चलेंगे तो बड़ा धक्का आ जावेगा। बाबा खुद कहते हैं अगर मेरी आज्ञा न मानेंगे, हमारे बच्चे बन भारत को पावन बनाने में मदद करने बदली विघ्न डालेंगे तो फिर सज़ा बहुत कड़ी मिलेगी। मंज़िल बड़ी भारी है। (मु०23.9.71 पृ०3 आदि)

• कहते हैं अगर तुम मेरी मत पर चलेंगे तो मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाऊँगा। कल्प–2 तुम मेरी श्रीमत से ऐसे श्रेष्ठ बनते हो। आधा कल्प बाद जब मेरी मत पूरी हो आसुरी मत होती है तो तुम कंगाल, कौड़ी तुल्य बन पड़ते हो। (मु०7.4.73 पृ०4 आदि)

त्रिमूर्ति

• ब्रह्मा वा विष्णु वा शिव तो विनाश नहीं करेंगे। शंकर द्वारा विनाश गाया हुआ है। इसलिए त्रिमूर्ति का चित्र है मुख्य। (मु०26.11.72 पृ०1 अंत)

• ज्ञानदाता, सर्व की सद्गति दाता त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव ही है। ब्र०वि०शं० तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ शिवजयंती नहीं है; परंतु त्रिमूर्ति शिवजयंती। (मु०27.9.75 पृ०3 आदि)

• बाबा कितना सहज करके समझाते हैं, सिर्फ त्रिमूर्ति चित्र के सामने जाकर बैठो तो बुद्धि में सारा चक्र आ जावेगा। यह शिवबाबा है, यह ब्रह्मा है। (मु०9.9.77 पृ०3 आदि)

• त्रिमूर्ति दिखाते हैं; परंतु शिवबाबा को उड़ा दिया है। फिर कहते ब्रह्मा को तो 3 मुख होते हैं। यह एक मुख वाला फिर कौन है? (मु०12.4.72 पृ०2 अंत)

• बच्चे, तुम त्रिमूर्ति शिवजयंती अक्षर लिखते हो; परंतु इस समय 3 मूर्तियाँ तो हैं नहीं। तुम कहेंगे शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रचते (हैं) तो ब्रह्मा ज़रूर साकार में चाहिए ना। बाकी विष्णु और शंकर इस

समय कहाँ हैं जो तुम त्रिमूर्ति कहते हो? यह बहुत समझने की बातें हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही ब्र०वि०शं० है। त्रिमूर्ति ब्र०वि०शं० के राज़ को तुम ही जानते हो। (मु०18.2.76 पृ०1 अंत)

- यह त्रिमूर्ति जो दिखाया जाता है, उसमें वास्तव में होना चाहिए ब्र०वि० और शिव, न कि शंकर; परंतु बाजू में शिव को कैसे रखें? तो फिर शंकर को रख दिया है और शिव को ऊपर में रखा है। इससे शोभा भी अच्छी होती है। सिर्फ दो से शोभा न हो। नहीं तो वास्तव में शंकर का कोई पार्ट है नहीं।

(मु०16.4.68 पृ०1 मध्यांत) [मु०7.5.69 पृ०1 मध्य]

- कहते भी हैं त्रिमूर्ति ब्रह्मा। त्रिमूर्ति शंकर वा त्रिमूर्ति विष्णु नहीं कहेंगे। देव देव महादेव तो शंकर को कहते फिर त्रिमूर्ति ब्रह्मा क्यों कहते? इनसे प्रजा रचते हैं तो यह उनकी बन्नी बनती है। शंकर वा विष्णु बन्नी नहीं बनते। यह बहुत वंडरफुल बातें समझने की हैं। (मु०11.1.73 पृ०3 मध्य)

- त्रिमूर्ति भी दिखाते हैं। सिर्फ शिव को उड़ा दिया है, उनका विनाश कर दिया है। ठिक्कर–भित्तर में ठोक उनका(उनकी) लाश गुम कर दिया है। वह है तो आत्मा ही। खाती भी है, वह ज्ञान का सागर भी है। (मु०10.9.73 पृ०1 मध्य)

- ब्रह्मा द्वारा वाइसलेस वर्ल्ड देवताओं की स्थापना हो रही है। शंकर द्वारा विनाश भी होने वाला है फिर वैष्णो राज्य होगा। (मु०22.1.78 पृ०2 मध्यादि)

- प्रदर्शनी में पहले–2 त्रिमूर्ति पर ही सारा समझाना है। यह तुम्हारा बाबा है। वह डाडा है। (मु०31.10.71 पृ०2 मध्य)

- उन्होंने तो त्रिमूर्ति से शिव को निकाल खण्डन कर दिया है। जैसे चित्र खण्डन करने वाले भी होते हैं ना। एक मुस्लिम राजा था जो देवताओं के चित्र एकदम तोड़ डालता था। अब तुम बच्चे समझते हो इन त्रिमूर्ति के चित्र में कितना राज़ है। (मु०17.11.76 पृ०1 मध्यादि)

- यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी अपना पार्ट बजाकर फिर वापस चले जावेंगे। (मु०22.5.71 पृ०2 मध्यादि)

- भारत में त्रिमूर्ति का चित्र भी बनाते हैं; परंतु उससे शिव का चित्र गुम कर दिया है। जैसे मनुष्यों की सिर काटी जाती है वैसे त्रिमूर्ति से शिव सिर काट दिया है। (मु०26.6.71 पृ०2 अंत)

- जैसे बाप को भी तीन मूर्तियों द्वारा कार्य कराना पड़ता है; इसलिए त्रिमूर्ति का विशेष गायन और पूजन है। त्रिमूर्ति शिव कहते हो। एक बाप के तीन विशेष कार्यकर्ता हैं जिन द्वारा विश्व का कार्य कराते हैं। (अ०वा०4.1.80 पृ०173 अंत)

- त्रिमूर्ति शिव के चित्र में सारी नॉलेज है। सिर्फ त्रिमूर्ति के चित्र में नॉलेज देने वाले (शिव) का चित्र है नहीं। नॉलेज लेने वाले (ब्रह्मा) का चित्र है। (मु०23.1.70 पृ०2 मध्यादि)

- अभी शिवजयंती आती है, तुमको त्रिमूर्ति शिव का चित्र निकालना चाहिए। त्रिमूर्ति ब्र०वि०शं० का एक्युरेट क्यों न निकालें। (मु०19.1.75 पृ०3 मध्यादि)

- शंकर को भी प्रजापिता नहीं कहेंगे। शंकर का तो एक बार पार्ट है। (मु०9.9.77 पृ०2 मध्यांत)

- त्रिमूर्ति की महिमा को कोई जान नहीं सकते हैं। ....जो अनन्य बच्चे हैं वे समझाते हैं हमारी सब मनोकामना पूरी हो रही है।(रात्रि मु०10.3.92 पृ०3मध्य)

- उन्होंने तो त्रिमूर्ति से शिव को निकाल खण्डन कर दिया है। ......अब तुम बच्चे समझते हो इन त्रिमूर्ति के चित्र में कितना राज़ है। (मु०17.11.76 पृ०1 मध्यादि) [मु०20.11.96 पृ०1 मध्य]
- शिवबाबा सभी को बैठ समझाते हैं। न समझने कारण त्रिमूर्ति में शिव रखते ही नहीं हैं, ब्रह्मा को दिखाते हैं, जिसको प्र० ब्रह्मा कहते हैं। (मु०13.10.68 पृ०1 अंत) [मु०18.9.04 पृ०2 आदि]
- बाप जब आते हैं तो ब्र०वि०शं० भी ज़रूर चाहिए। कहते हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। अब तीनों द्वारा (एक साथ) तो नहीं बोलेंगे ना। (मु०26.2.67 पृ०1 आदि)

• उनकी शिवजयंती मनाते हैं। वास्तव में शिव के साथ त्रिमूर्ति भी होना चाहिए। त्रिमूर्ति शिवजयंती मनाते हैं। सिर्फ शिवजयंती मनाने से कोई बात सिद्ध न होगी। (मु०19.1.75 पृ०2,3)

• नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश करने वाला बाप के सिवाय और कोई हो नहीं सकता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना– यह भी लिखते हैं। यहाँ के लिए ही है। (मु०9.10.70 पृ०3 मध्य)

• परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश कराते हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है– ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना। (मु०15.1.67 पृ०1 अंत) [मु०17.1.90 पृ०1 अंत]

• ब्र०वि०शं० को भी याद करते हैं, वह तो इन आँखों से देखने में आते हैं। (मु०19.8.73 पृ०1 मध्य)

शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)

• शंकर कहते मेरा विनाश का पार्ट है। तत्वों को भी प्रेरणा करता हूँ– तुम अर्थक्वेक करो, मूसलाधार बरसात करो। यह विनाश का डायरैक्शन शंकर द्वारा मिलता है, स्थापना का डायरैक्शन ब्रह्मा द्वारा। (मु०7.4.73 पृ०3 अंत)

• कुमारका बताओ शिवबाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते हैं 500 करोड़, कोई कहते एक बच्चा ब्रह्मा है। क्या शंकर बच्चा नहीं है? तब शंकर किसका बच्चा है? यह भी गुंजाइश है। मैं कहता हूँ शिवबाबा को दो बच्चे हैं; क्योंकि ब्रह्मा वह तो विष्णु बन जाते हैं। बाकी रहा शंकर तो दो हुए ना। तुम शंकर को क्यों छोड़ देती हो? भल त्रिमूर्ति कहते हैं; परंतु ऑक्युपेशन तो अलग–2 है ना। (मु०14.5.72 पृ०2 अंत)

• जो–2 मैंने काम किए हैं वह नाम रख दिए हैं। कहते हैं हर–2 महादेव। सभी के दुःख काटने वाला। वह भी मैं ही हूँ। शंकर नहीं है। शंकर भी मेरी प्रेरणा से सर्विस पर हाज़िर है। ब्रह्मा भी सर्विस पर हाज़िर है। (मु०4.11.73 पृ०2 मध्य)

• शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको। (मु०14.5.70 पृ०2 आदि)

• शंकर न होता तो हमको (शिवबाबा को) शंकर के साथ मिलाते भी नहीं। चित्र बनाया है तो मुझे भी शंकर साथ मिला दिया है। शिव–शंकर महादेव कह देते तो महादेव बड़ा हो जाता। (मु०26.6.70 पृ०2 अंत)

• वास्तव में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को देव–2 महादेव कहते हैं; क्योंकि शिव के बाद है शंकर। ब्रह्मा और विष्णु पुनर्जन्म में आते हैं, बाकी शंकर नहीं आता। जैसे शिवबाबा सूक्ष्म है वैसे शंकर भी सूक्ष्म है। (मु०29.9.77 पृ०2 अंत)

• बाप ने समझाया है शंकर का इतना पार्ट नहीं है। वह नेक्स्ट टू शिव है। (मु०8.3.76 पृ०2 मध्य)

• विष्णु को, शंकर को भी देह का अहंकार हो सकता है। (मु०7.4.72 पृ०1 मध्य)

• तुम्हारा मार्शल है ही शंकर। उनका काम है ही विनाश कराना। हथियार–पवार तो न तुम चलाते हो, न वह चलाते हैं। शंकर का काम है विनाश कराना। शिवबाबा का काम है स्थापना का कार्य कराना। शिव और शंकर तो एक नहीं हैं। वह शंकर तो शिवबाबा का बच्चा है। (मु०20.12.73 पृ०2 मध्य)

• मुख्य शिवबाबा है। फिर ब्र०वि०शं०। इनकी डिनायस्टी 84 जन्म भोगती है। शंकर है विनाश के लिए तो वह हुआ नेक्स्ट टू शिव। (मु०21.2.71 पृ०4 अंत)

• ऐसी कोई बात है नहीं शंकर–पार्वती है ही नहीं। यह तो स्थूलवतन है। (मु०8.5.70 पृ०2 आदि)

• बाप तो एवर पूज्य है। वह कब पुजारी बनते नहीं हैं। अच्छा, फिर सेकंड नम्बर में कहेंगे शंकर भी एवर पूज्य है। वह कब पुजारी बनते नहीं। उनका पार्ट यहाँ है नहीं। (मु०28.8.71 पृ०2 मध्य)

• ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हुआ? यह भी गुह्य रहस्य है। जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन? इस पर भी रूह–रूहान करना। (अ०वा०1.1.79 पृ०166 आदि)

• शंकर के लिए कहते हैं ना एक सेकेंड में आँख खोली और विनाश। यह संहारकारीमूर्त के कर्तव्य की निशानी है। (अ०वा०4.11.76 पृ०1 अंत)

•शंकर का वास्तव में इतना पार्ट है नहीं। विनाश तो होना ही है। बाप विनाश उनसे कराते हैं जिस पर कोई पाप न लगे। अगर कहें भगवान विनाश करता है तो उस (पर) दोष पड़ जाए। (मु०29.4.70 पृ०1 मध्य) [मु०11.5.90]

• बहुत मनुष्य पूछते हैं शंकर का क्या पार्ट है? प्रेरणा से कैसे विनाश कराते हैं? बोलो, यह तो गाया हुआ है। चित्र भी है। तो इस पर समझाया जाता है। वास्तव में तुम्हारा कोई इन बातों से कनेक्शन है नहीं। (मु०20.3.73 पृ०3 आदि)

•पहले तो समझो हमको बाप से वर्सा लेना है। मन्मनाभव हो जाओ। शंकर क्या करता, फलाना क्या करता, इनमें जाने की दरकार क्या है? तुम सिर्फ दो अक्षर पकड़ लो– बाप और वर्से को याद करो तो राजधानी मिल जावेगी। बाकी शंकर को गले में साँप क्यों दिया है, योग में ऐसे क्यों बैठता, इन बातों से कुछ कनेक्शन नहीं। मुख्य बात है ही बाप को याद करना। बाकी ऐसे–2 तो ढेर प्रश्न उठेंगे। इनसे तुम्हारा क्या फायदा? तुम सभी बातें भूल जाओ। .... उल्टे–सुल्टे प्रश्न कोई पूछे तो बोलो पहले नॉलेज तो समझो, अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाकी सभी बातें छोड़ दो। आगे चल समझते जावेंगे।
(मु०20.3.73 पृ०3 आदि) [मु०14.3.88 पृ०2 अंत, 3 आदि]

• शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। ज़रूर शंकर भी है तब तो साक्षात्कार होता है। (मु०26.2.73 पृ०1 अंत)

• शंकर देवता है। इन्होंने फिर शिव–शंकर इकट्ठे कर दिए हैं। अभी बाप कहते हैं हमने इसमें प्रवेश किया है तो तुम कहते हो बाप–दादा। वो फिर कहते हैं शिवशंकर। शंकर–शिव नहीं कहते, शिव–शंकर कहते हैं। (मु०11.2.67 पृ०2 आदि) [मु०11.2.75]

• शंकर से अगर पूछेंगे, पूछ नहीं सकते; परंतु समझो करके सूक्ष्मवतन में पूछो तो कहेंगे यह सूक्ष्म शरीर हमारा है। शिवबाबा कहते हैं यह हमारा नहीं है, यह हमने उधार लिया है। (मु०16.4.71 पृ०1 आदि)

• गॉड इज़ वन, उनका बच्चा भी वन। कहा जाता है त्रिमूर्ति ब्रह्मा। देवी–देवताओं में बड़ा कौन? महादेव शंकर को कहते हैं। (मु०10.2.72 पृ०4 मध्यांत)

• शंकर का भी समझाया है कि उनका कोई पार्ट नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि शंकर को उड़ा देना है। ....एक तरफ तो गाते भी हैं देव–2 महादेव..। महादेव तो शंकर को कहा जाता है। महादेव तो बड़ा हो गया ना। (मु०24.9.69 पृ०2 आदि)

• ऊँच ते ऊँच भगवान का भी विचित्र पार्ट है। ब्रह्मा और विष्णु का विचित्र पार्ट नहीं कहेंगे। दोनों ही 84 का चक्र लगाते हैं, बाकी शंकर का इतना पार्ट है नहीं। (मु०26.8.69 पृ०1 मध्यादि)

• वह तो सिर्फ 3 हैं। उनमें भी वास्तव में ब्रह्मा तो स्थूल ही है, विष्णु भी स्थूल है। सिर्फ शंकर ही सूक्ष्म है। (मु०10.12.83 पृ०1 आदि)

• अब शंकर तो है सूक्ष्मवतनवासी। सूक्ष्मवतन में बैल आदि तो होते ही नहीं। बैल अर्थात् मेल। भागीरथ मेल को दिखाते हैं। (मु०22.10.71 पृ०3 मध्यांत)

•वह तो भोला भंडारी शिव–शंकर कह देते हैं। शंकर को भोलानाथ समझ लेते हैं। वास्तव में भोलानाथ शंकर तो नहीं लगता। (मु०20.3.69 पृ०1,2) [मु०11.2.99 पृ०2 मध्य]

• शंकर तो जन्म–मरण से न्यारा है। (मु०14.5.70 पृ०2 आदि)

•युगल तो वास्तव में सिर्फ विष्णु ही है। ......शंकर भी युगल नहीं है। इस कारण ....शिव–शंकर कह देते। अब शंकर क्या करते हैं? विनाश तो होना ही है एटम बॉम्ब से। बाप कैसे बैठ बच्चों का मौत करावेगा! यह तो पाप हो जाए। (मु०21.10.75 पृ०3 मध्यादि) [मु०17.11.00 पृ०3 अंत]

• ब्रह्मा द्वारा स्थापना नई दुनिया की, शंकर द्वारा .....अनेक धर्मों का विनाश कराते हैं। (मु०4.6.66 पृ०1 मध्य)

बाप की प्रत्यक्षता

• सारी विश्व की आत्माओं को चाहे स्वप्न में, चाहे एक सेकेण्ड की झलक में, चाहे प्रत्यक्षता के चारों ओर के आवाज़ द्वारा यह ज़रूर साक्षात्कार होना है कि इस ड्रामा के हीरो पार्टधारी स्टेज पर प्रत्यक्ष हो गए, धरती के सितारे धरती पर प्रत्यक्ष हो गए। सब अपने–2 ईष्टदेव को प्राप्त कर बहुत खुश होंगे। सहारा मिलेगा। (अ०वा०20.2.86 पृ०200 मध्य)

• लास्ट बॉम्ब अर्थात् परमात्म बॉम्ब है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गए हैं। डायरैक्ट ऑलमाइटी अथॉरिटी का कर्तव्य चल रहा है। .... सिखाने वाला डायरैक्ट ऑलमाइटी है, ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है यह अभी गुप्त है। ...... इस अंतिम बॉम्ब द्वारा...... हरेक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। विश्व में विश्वपिता स्पष्ट दिखाई देगा। (अ०वा०28.12.78 पृ०159 आदि, 161 मध्य)

• प्रत्यक्षता का पर्दा खुलने का भी आरम्भ हो गया है। चारों ओर की आत्माओं में अभी इच्छा उत्पन्न हो रही है कि नज़दीक जाकर देखें। सुनी–सुनाई बातें अभी देखने के परिवर्तन में बदल रही हैं। .... अभी तक बाप और कुछ निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के शक्तिशाली प्रभाव का परिणाम यह दिखाई दे रहा है। अगर मैजॉरिटी इस विधि से सिद्धि को प्राप्त करें तो बहुत जल्दी सर्व ब्राह्मण सिद्धि–स्वरूप में प्रत्यक्ष हो जाएँगे। (अ०वा०2.11.87 पृ०113 मध्य)

• डायमण्ड जुबली अर्थात् प्रत्यक्षता का नारा बुलन्द करना। तो इस वर्ष से प्रत्यक्षता का पर्दा अभी खुलने आरम्भ हुआ है। एक तरफ विदेश द्वारा भारत में प्रत्यक्षता हुई, दूसरे तरफ निमित्त महामण्डलेश्वरों द्वारा कार्य की श्रेष्ठता की सफलता। विदेश में यू०एन० वाले निमित्त बने, वे भी विशेष नामीग्रामी और भारत में भी नामीग्रामी धर्मसत्ता है। तो धर्मसत्ता वालों द्वारा धर्म–आत्माओं की प्रत्यक्षता हो– यह है प्रत्यक्षता का पर्दा खुलना आरम्भ होना। अजुन खुलना आरम्भ हुआ है। ...... विदेश के बच्चे जो कार्य के निमित्त बने, यह भी विशेष कार्य रहा। प्रत्यक्षता के विशेष कार्य में इस कार्य के कारण निमित्त बन गए। तो बापदादा विदेश के बच्चों को इस अंतिम प्रत्यक्षता के हीरो पार्ट में निमित्त बनने के सेवा की भी विशेष मुबारक दे रहे हैं।(अ०वा०1.10.87 पृ०63अंत,64आदि)

• यह ईश्वरीय कार्य चल रहा है, कोई साधारण बात नहीं है। यह अनुभव यहाँ आकर करना चाहिए। .... सभी प्रकार के साधनों से बाप के प्रैक्टिकल पार्ट की प्रत्यक्षता अवतरण भूमि पर तो प्रत्यक्ष मिलनी चाहिए। (अ०वा०17.5.72 पृ०280 अंत)

• बापदादा कब प्रत्यक्ष दिखाई देते, कब पर्दे के अंदर छिपा हुआ दिखाई देते; लेकिन बापदादा सदा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं। .... बाबा चला गया यह कह अविनाशी सम्बंधों को विनाशी क्यों बनाते हो? सिर्फ पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी सेवा स्थान चेंज करते हो ना। तो ब्रह्मा बाप ने भी सेवा स्थान चेंज किया है। रूप वही, सेवा वही है। हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएँ बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकतीं। भुजाएँ बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है तब तो कर रहे हैं। (अ०वा०18.1.78 पृ०34 अंत, 35 आदि)

• इस वर्ष में कोई नई बात ज़रूर होनी है। सन् 76 में जिसका प्लैन बनाया है; लेकिन निमित्त बनना पड़ता है; परंतु होना तो ड्रामानुसार है; लेकिन जो निमित्त बनता है उसका सारे ब्राह्मण कुल में नाम बाला होता है। यह भी प्राइज़ है। (अ०वा०31.10.75 पृ०255 अंत)

• ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है। जब तक स्थापना का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है तब तक निमित्त बनी हुई आत्मा (प्रजापिता ब्रह्मा) का पार्ट समाप्त नहीं होना है। वह तब तक दूसरा पार्ट नहीं बजा सकते। जगतपिता का नए जगत की रचना सम्पन्न करने का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। मनुष्य सृष्टि की सर्व वंशावली रचने का सिर्फ ब्रह्मा के लिए ही गायन है। ग्रेट–2 ग्रैंड फादर इसीलिए गाया हुआ है। सिर्फ स्थिति, स्थान और गति (स्पीड) का परिवर्तन हुआ है; लेकिन पार्ट ब्रह्मा का अभी तक वही है। (अ०वा०30.6.74 पृ०83 मध्य)

• जैसे आदि में स्थापना के कार्य प्रति साकार रूप में निमित्त एक ही बने, अल्फ की तार पहले एक (लेखराज ब्रह्मा) को आई, सेवा अर्थ सर्वस्व त्यागमूर्त एक अकेले बने........ अब अंत में भी (बच्चों को ऊँचा उठाने के लिए वा अव्यक्त बनाने के लिए) बाप को ही अव्यक्तवतनवासी बनना पड़ा। इस साकारी दुनिया से ऊँचा स्थान अव्यक्त वतन अपनाना पड़ा। अभी बाप कहते हैं बाप समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो, बाप समान अव्यक्तवतनवासी बन जाओ। (अ०वा०18.1.79 पृ०228 आदि)

• अभी तक महान आत्माओं तक पहुँचे हैं, परमात्मा तक नहीं। परमात्मा से मिलाने वाले हैं यह भी समझते हैं; लेकिन परमात्मा से मिलकर जो करना है वह प्लैन बनाना पड़े। (अ०वा०23.2.78 पृ०2 अंत, 3 आदि)

• विधाता द्वारा अविनाशी तकदीर की लकीर खिंचवा सकते हो; क्योंकि भाग्यविधाता दोनों बाप इस समय बच्चों के लिए हाज़िर–नाजिर हैं। (अ०वा०14.10.81 पृ०55 अंत, 56 आदि)

• व्यक्त में भी अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा है। पहले भी निमित्त ही थे, अब भी निमित्त है। यह पूरा (एडवांस) परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। अव्यक्त में तो साथ है ही। .... साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। साकार अकेला नहीं है, प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है। (अ०वा०18.1.70 पृ०166 अंत)

• भारत में किस तरफ और कौन आध्यात्मिक लाइट देने के निमित्त है, अभी यह स्पष्ट होना है। सभी के अंदर अभी यह खोज है कि भारत में अनेक आध्यात्मिक आत्माएँ कहलाने वाली हैं, आखिर भी इनमें धर्मात्मा कौन और परमात्मा कौन है? यह तो नहीं है, यह तो नहीं है– इसी सोच में लगे हुए हैं। ''यही है'' इसी फैसले पर अभी तक पहुँच नहीं पाए हैं। (अ०वा०28.12.82 पृ०15 अंत)

• सबके मुख से वा मन से यही आवाज़ निकले कि यह वही है। ऐसे अनुभव करें बस इन्हों से मिले तो बाप से मिले। जो कुछ मिला है इन्हों द्वारा ही मिला है। यही मास्टर है, गाइड है, एन्जिल है, मैसेंजर है। बस यही है, यही है और वही है– यह धुन सबके अंदर लग जाय। इन्हीं दो शब्दों की धुन हो– यही है और वही है। मिल गए–मिल गए.. यह खुशी की तालियाँ बजाएँ। ऐसे अनुभव कराओ। (अ०वा०10.1.82 पृ०229 अंत)

• आने वाले यह दो मास विशेष बुलन्द आवाज़ से चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष करने के नगाड़े बजाने हैं। जिन नगाड़ों की आवाज़ को सुनकर सोई हुई आत्माएँ जाग जाएँ। (अ०वा०23.1.73 पृ०14 अंत, 15 आदि)

• इस शिवरात्रि पर बाप को प्रत्यक्ष करने का कार्य करना है। अथॉरिटी से निर्भय हो वास्तविक परिचय देना है। इस शिवरात्रि उत्सव मनाने समय सब ऐसा प्रोग्राम रखें जिसमें सबका अटेंशन विश्व के रचयिता तथा जिसके द्वारा पार्ट बजाया उस आदिदेव अर्थात् साकार ब्रह्मा को पहचानें। यह शिवरात्रि विशेष बाप को प्रत्यक्ष करने वाली, नवीनता वाली हो। .... यह शिवरात्रि प्रत्यक्षता की शिवरात्रि करके मनाओ। सबका अटेंशन जाए यह कौन हैं और किसके प्रति सम्बंध जोड़ने वाले हैं, सब अनुभव करें कि जो आवश्यकता है वह यहाँ से ही मिल सकती है। सब सुखों के खान की चाबी यहाँ ही मिलेगी। (अ०वा०3.2.79 पृ०266 अंत, 267 आदि)

• जैसे एक ही सूर्य वा चंद्रमा समय के अंतर में दिखाई तो एक ही देता है ना। ऐसे यह ज्ञान सूर्य के बच्चे कोने–2 से दिखाई दें। ...... सबके संकल्प में, मुख में यही बात हो कि ज्ञान सितारे ज्ञान सूर्य के साथ

प्रकट हो चुके हैं। तब सब तरफ का मिला हुआ आवाज़ चारों ओर गूँजेगा और प्रत्यक्षता का समय आएगा। अभी तो गुप्त पार्ट चल रहा है। अब प्रत्यक्षता में लाओ। इसका प्लैन बनाओ फिर बाप–दादा भी बताएँगे। (अ०वा०11.3.81 पृ०40 आदि)

• कमाल यह है जो विस्तार द्वारा बीज को प्रकट करें। विस्तार में बीज को गुप्त कर देते हैं। अब तो वृक्ष की अंतिम स्टेज है ना। मध्य में गुप्त होता है। अंत तक गुप्त नहीं रह सकता। अति विस्तार के बाद आखरीन बीज ही प्रत्यक्ष होता है ना। मनुष्य आत्माओं की यह नेचर होती है जो वैराइटी में आकर्षित अधिक होते हैं। (अ०वा०17.5.72 पृ०281 मध्य)

• अभी तैयारी तो करनी पड़े ना! जाएँगे, यह नहीं सोचो; लेकिन सबको ले जाएँगे, यह सोचो। सबको साक्षात्कार कराके, तृप्त करके प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजाके फिर जाएँगे। पहले क्यों जाएँ? अब तो बाप के साथ–2 जाएँगे। प्रत्यक्षता की भी वण्डरफुल सीन अनुभव करके जाएँगे ना। (अ०वा०26.11.84 पृ०32 मध्य)

• जब तक इस दैवी संगठन की एकरस स्थिति प्रख्यात नहीं होगी तब तक बापदादा की प्रत्यक्षता समीप नहीं आएगी। (अ०वा०14.4.73 पृ०32 अंत)

• इस शिवरात्रि पर ......ऐसा संकल्प करो कि परिचय के साथ बाप की झलक देखने या अनुभव करने का प्रसाद भी लेवें। (अ०वा०5.12.78 पृ०102 अंत,103 आदि)

• बच्चे ही बाप का शो करेंगे– सन शोज़ फादर। सन का फिर फादर शो करते हैं। आत्मा का शो करते हैं ना। (मु०19.12.70 पृ०3 आदि)

• बापदादा जानते हैं कि इस ग्रुप में कई ऐसे रत्न हैं जो बापदादा के गले के माला के मणके हैं। ऐसे मणकों को बाप भी सदा विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने के वा विश्व के आगे बच्चों द्वारा बाप प्रत्यक्ष होने के कई दृश्य देख भी रहे हैं। अभी प्रत्यक्ष हो रहे हैं और आगे चलके भी होंगे। (अ०वा०1.1.79 पृ०167 मध्य)

• यह आना चाहिए कि यही है, यही है, यही है...। अभी तक तो यह भी है, यही है, नहीं आया है। (अ०वा०11.3.02 पृ०74 अंत, 75 आदि)

• प्रत्यक्ष किसको करना है– बच्चों को या बाप को? बाप को भी करना है बच्चों द्वारा; क्योंकि अगर ज्योतिबिंदु का साक्षात्कार भी हो जाए तो कई तो बिचारे, बिचारे हैं ना! तो समझेंगे ही नहीं यह क्या है। अंत में शक्तियाँ और पांडव बच्चों द्वारा बाप को प्रत्यक्ष होना है। (अ०वा०16.12.00 पृ०4 अंत)

• कोई भी रेडियो खोले, कोई भी टी०वी० का स्विच खोले तो यह आवाज़ आवे– ''हमारा शिवबाबा आ गया।'' तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झंडा लहराया। (अ०वा०31.12.05 पृ०6 आदि)

• दादी की जीवन का एक ही संकल्प रहा कि अब जल्दी से जल्दी बाप की प्रत्यक्षता का आवाज़ फैलाएँ। तो प्रत्यक्षता, दादी की प्रत्यक्षता द्वारा ईश्वरीय विश्व–विद्यालय और बापदादा की प्रत्यक्षता का फर्स्ट चैप्टर, छोटा–सा चैप्टर आरम्भ हुआ है। (अ०वा०6.9.07 पृ०1 मध्य)

• क्वालिटी और क्वांटिटी दोनों की सेवा साथ–2 हो। ... बाप की प्रत्यक्षता तब होगी जब क्वालिटी वाले कार्य को और बाप को प्रत्यक्ष करें। (अ०वा०20.3.04 पृ०4 आदि)

• ब्रह्मा बाप के प्रत्यक्ष होने की भूमि कलकत्ता है....जहाँ से आदि हुई, वहाँ समाप्ति भी हो। (अ०वा०18.1.05 पृ०2 अंत)

• सबके दिल से यह आवाज़ निकले– हमारा बाप आ गया है, मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। ... जो भी साइंस के साधन हैं उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा– मेरा बाप आ गया। ... जहाँ भी सुनेंगे, एक ही आवाज़ सुनेंगे– आने वाले आ गए। इसको कहा जाता है बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता। (अ०वा०18.1.97 पृ०16 अंत)

• अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित्त बने, ऐसे समाप्ति के समय भी बाप के साथ–2 अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात् अनुभव होंगे। (अ०वा०13.11.97 पृ०68 मध्य)

• जानते भी हैं कि इन्हों का बैकबोन कोई अथॉरिटी है; लेकिन वही बापदादा है और हमें भी बाप से वर्सा लेना है... वो अभी होना है। (अ०वा०18.1.97 पृ०17 आदि)

• यहाँ वारिस तैयार करेंगे तब एडवांस पार्टी भी प्रत्यक्ष होगी और बाप के नाम का, प्रत्यक्षता का नगाड़ा चारों ओर बजेगा। अभी तक की रिज़ल्ट में कहते हैं कि यह भी अच्छा काम कर रहे हैं या कोई–2 कहते हैं कि यही कर सकते हैं; लेकिन परम आत्मा की तरफ अटेंशन जाए, परम आत्मा का यह कार्य चल रहा है, वह अभी इनकॉगनिटो (गुप्त) है। (अ०वा०31.12.96 पृ०8 मध्य)

• यह मैं पन का पर्दा थोड़ा आगे आ जाता है, यह पर्दा हट जाएगा तो हर एक से बाप का सा० होगा। तब यह नारा लगेगा– साक्षात् बाप आ गए, आ गए...। सा० दिव्य दृष्टि से नहीं, साक्षात् रूप का सा० होगा। सबके मुख से एक ही आवाज़ निकलेगा– यह तो साक्षात् बाप है। (अ०वा०28.2.03 पृ०92 मध्य)

शिवबाप की प्रवेशता

• ऊँच ते ऊँच बाप को ज़रूर ऊँच ते ऊँच में ही प्रवेश करना चाहिए। मनुष्य समझते हैं ऊँच है श्रीकृष्ण। (मु०11.2.69 पृ०2 मध्य)

• 10 वर्ष से साथ में रहने वाले, ध्यान में जाय(जाती थी), मम्मा–बाबा को भी ड्रिल कराते थे(कराती थी)। हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे। कितना मर्तबा था। मम्मा–बाबा भी उनसे सीखते थे। आज वह भी हैं नहीं। उस समय यह इतना ज्ञान नहीं था। (मु०25.7.67 पृ०2 अंत)

• शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया। ऐसे भी नहीं साक्षात्कार हुआ तब आया। नहीं, अंदाज कर सकते हैं। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि उस समय प्रवेश किया। साक्षात्कार तो हुआ कि हम फलाना बनेंगे, दुनिया को आग लगेगी। मिनिट–सेकेंड का हिसाब नहीं बता सकते हैं। उनका तो अवतरण भी अलौकिक है। (मु०12.1.69 पृ०3 अंत, 4 आदि) [मु०ता०1.1.76 पृ०3 अंत]

• यह ब्रह्मा भी एडॉप्ट किया हुआ है। बाप खुद कहते हैं मैं इस रथ का आकर रथी बनता हूँ। इनको ज्ञान देता हूँ। शुरू इनसे करता हूँ। कलष देता हूँ माताओं को। माता तो यह भी ठहरी ना। पहले–2 यह बनते हैं, फिर तुम। (मु०2.3.73 पृ०2 आदि) [मु०2.3.78 पृ०2 आदि]

• बाप समझाते हैं इस जन्म के जो भी भक्त हैं उनमें नहीं आता हूँ। मैं उसमें आता हूँ जिसने पहले–2 भक्ति शुरू की है। (मु०26.6.68 पृ०2 अंत)

• बाप भी समझाते हैं मैं इस पतित तन में प्रवेश करता हूँ। इन द्वारा ही सबको सतोप्रधान बनाता हूँ। (मु०20.1.75 पृ०3 मध्य)

•बाबा कहते हैं हम भी 60 वर्ष की आयु में बहुत जन्मों के अंत में, इनकी वानप्रस्थ अवस्था हुई तब मैंने प्रवेश किया। (मु०26.11.72 पृ०2 अंत) [मु०6.11.02 पृ०3 आदि]

• बहुत जन्मों के अंत के जन्म के भी अंत में मैं प्रवेश करता हूँ। (मु०26.3.74 पृ०1 अंत)

• बाप तो कहते हैं मैं कोई बैल–गधे आदि में थोड़े ही आऊँगा। जो ऊँच ते ऊँच था फिर 84 जन्म पूरे किए हैं, उनमें ही आता हूँ। (मु०3.6.68 पृ०3 अंत) [मु०31.5.99 पृ०4 मध्य]

• मैं प्रवेश ही इनमें करता हूँ जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं। गाँवड़े का छोरा था। फिर श्याम से सुंदर बनते हैं। ... बाप खुद कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अंत में प्रवेश करता हूँ। जो सभी से पतित बना है, फिर पावन भी वही बनेगा। 84 जन्म पूरा इसने ही लिया है। ततत्वम्। (मु०9.9.68 पृ०3 अंत) [मु०14.8.04 पृ०4 मध्य]

• सबसे जास्ती पतित कौन है, यह बाप बतलाते हैं। मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हूँ। (मु०26.6.68 पृ०3 अंत)

• ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और इसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ...... अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। (मु०17.3.73 पृ०2 अंत)

• वानप्रस्थ अवस्था में ही मनुष्य गुरू करते हैं, 60 वर्ष के बाद। इसमें भी 60 वर्ष के बाद बाप ने प्रवेश किया तो बाप, टीचर, गुरू बन गए। (मु०26.12.68 पृ०2 आदि)

•पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इनमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अंत वाले साधारण मनुष्य में प्रवेश करता हूँ। ...सूक्ष्मवतनवासी पावन ब्रह्मा में नहीं आते हैं। (मु०4.11.65 पृ०1 आदि) [मु०6.11.97 पृ०1 मध्य]

बच्चों में प्रवेशता

• मैं कोई बच्चे में प्रवेश कर किसका भी कल्याण कर सकता हूँ। बाकी पशु में थोड़े ही मैं प्रवेश कर साक्षात्कार कराऊँगा। (मु०6.9.73 पृ०3 अंत)

• बच्चों का सारा अटेंशन जाता है शिवबाबा तरफ। वह तो कब बीमार पड़ नहीं सकते। वह चाहे तो ब्रह्मा तन से, नहीं तो और कोई अच्छे बच्चे द्वारा भी मुरली चला सकते हैं। (मु०17.1.70 पृ०1 मध्यादि)

• बाप भी देखते हैं यह बुद्धिमान पढ़ा–लिखा है, उनको समझाने वाला बुद्धू मिला है तो फिर खुद प्रवेश कर उनको उठा लेंगे। फिर कई समझदार बच्चे जो हैं वह कहते हैं हमारे में तो इतना ज्ञान नहीं था जितना बाप ने बैठ समझाया। कोई को अपना अहंकार आ जाता है। (मु०20.3.68 पृ०3 अंत)

• बाबा कहते हैं भल कैसा भी कोई बच्चा है; परंतु दूसरे का कल्याण करने अर्थ उनमें भी मुझे जाना पड़ता है। बाबा प्रवेश कर मुरली चलाते हैं। (रात्रि क्लास मु०2.1.73 पृ०4 अंत)

• भल छोटी बच्ची हो तो भी इसमें आकर साक्षात्कार करा देता हूँ जो वह चकित हो जावे और फिर ब्रह्मा की बन जाए। बाप से प्रीत बुद्धि हो जाए। (मु०5.8.73 पृ०2 मध्यादि)

• बच्चों द्वारा भी बाप बहुत सर्विस करते रहते हैं। कोई में प्रवेश कर सर्विस करते हैं। सर्विस तो करनी ही है। जिनके माथे मामला वह कैसे नींद करे? (मु०17.1.70 पृ०2 अंत)

•बाप कहते हैं मैं कोई में जाता ही नहीं हूँ।... हाँ, कोई डल बुद्धि बच्चे हैं और कोई अच्छा जिज्ञासु आ जाता है तो उनकी सर्विस अर्थ हम प्रवेश कर दृष्टि दे सकता हूँ। सदैव नहीं बैठ सकता हूँ। ....बहु रूप धारण कर किसका भी कल्याण कर सकते हैं। बाकी ऐसे कोई नहीं कहेंगे मेरे में शिवबाबा है। मुझे शिवबाबा यह कहते हैं। नहीं। (मु०28.9.68 पृ०1 मध्य) [मु०9.9.04 पृ०1 अंत]

• बाबा ने समझाया है कोई का कल्याण करने अर्थ में जाता हूँ। आता तो पतित तन में ही हूँ ना। इनमें तो फिर भी ज्ञान है। कोई बिल्कुल इडियट है उनमें भी प्रवेश करता हूँ कोई के कल्याण करने अर्थ, सिर्फ ब्राह्मण हो। (मु०7.3.67 पृ०2 मध्य)

• मैं इनमें प्रवेश करता हूँ फिर चला जाता हूँ। बैल पर सारा दिन कोई सवारी थोड़े ही करते हैं। मुझे जिस समय बच्चे याद करते मैं हाज़िर हूँ। (मु०4.6.66 पृ०3 आदि)

सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा

• ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाते हैं। शास्त्र तो एक होना चाहिए न। तो अभी ब्रह्मा के हाथ में है शिरोमणि गीता। बाबा बैठ ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों–ग्रन्थों का सार बताते हैं। (मु०31.7.73 पृ०2 अंत)

- ऐसे नहीं कि मम्मा चली गई तो वह नहीं पढ़ाती है। जैसे बापदादा कम्बाइंड हैं वैसे यह मम्मा–बाबा भी कम्बाइंड हैं। दोनों ने यह रूहानी यूनिवर्सिटी खोली है। दोनों इकट्ठे पढ़ाते हैं। (मु०25.8.70 पृ०2 मध्यांत)
- मैं इन ब्रह्मा–सरस्वती द्वारा और ब्राह्मणों द्वारा भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। जो मेहनत करते हैं उन्हों की फिर यादगार बनती है। (मु०5.2.71 पृ०2 मध्य)
- मुख्य है शिवबाबा, फिर ब्रह्मा–सरस्वती युगल। (मु०4.11.78 पृ०2 मध्य)
- मैं साजन बड़ा हूँ तो सजनी भी बड़ी चाहिए। ...सरस्वती है ब्रह्मा मुखवंशावली। वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगदम्बा क्यों कहते है? क्योंकि यह मेल है न। तो माताओं की सम्भाल के लिए उनको रखा है। ब्रह्मा मुखवंशावली सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी हो गई। मम्मा तो जवान है। ब्रह्मा तो बूढ़ा है। सरस्वती जवान ब्रह्मा की स्त्री शोभती भी नहीं। हाफ पार्टनर कहला न सके। (मु०4.11.73 पृ०2 अंत, 3 आदि)
- आप सभी के मन में तो होगा ही कि हमारी मम्मा कहाँ गई? अभी यह राज़ इस समय स्पष्ट करने का नहीं है। कुछ समय के बाद सुनाएँगे कि वह कहाँ और क्या कार्य कर रही है। स्थापना के कार्य में भी मददगार है; लेकिन भिन्न नाम–रूप से। (अ०वा०2.2.69 पृ०33 आदि)
- कोई बुरा काम किया तो बेइज्जती होगी ना। सो भी बाप के आगे। शिवबाबा बैठते हैं ना। तुमको साक्षात्कार करावेंगे। हम इसमें था। तुमको कितना समझाते थे। अभी मैं सम्पूर्ण(ब्रह्मा) में हूँ। तुम बच्चियाँ सम्पूर्ण बाबा पास जाती हो। उस द्वारा शिवबाबा डायरैक्शन आदि देते हैं ना। (मु०7.11.71 पृ०2 आदि)
- ब्रह्मा के रूप में जो आदि से अंत तक हर कर्म में, हर चरित्र में, हर सेवा के समय में साथी रहे हैं वह भविष्य में भी साथी रहेंगे। (अ०वा०27.10.81 पृ०82 अंत)
- मनुष्य समझते हैं एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह रॉंग है। निराकार गॉड फादर है तो मदर भी ज़रूर होगी। (मु०18.5.73 पृ०2 मध्य)
- ब्रह्मा–सरस्वती भी वास्तव में मम्मा–बाबा नहीं हैं।(मु०31.3.72 पृ०1 मध्य)
- भोग किसको लगाया जाता है यह भी बाबा समझाते हैं। शिवबाबा तो अभोक्ता है। उनको भोग लगता नहीं। यह भोग लगता है सम्पूर्ण मम्मा–बाबा को। (मु०22.12.71 पृ०3 अंत)
- ब्रह्मा द्वारा स्थापना किसकी? देवता धर्म की। ब्रह्मा सतयुग में तो नहीं है। यहाँ संगम पर ही कहा जावेगा। ब्रह्मा भी ज़रूर चाहिए। ब्रह्मा का सच्चा चित्र कोई के पास है नहीं। कोई दाढ़ी वाला दिखाते हैं, कोई कैसा दिखाते। (मु०3.8.72 पृ०4 आदि)
- ब्रह्मा भी बाबा, शिव भी बाबा। विष्णु और शंकर को बाबा नहीं कहेंगे ना। (सम्पूर्ण ब्रह्मा) (मु०15.1.67 पृ०3 अंत)
- बोलो (अपूर्ण) ब्रह्मा कोई हमारा गुरू आदि कुछ भी नहीं है। वो तो दादा है। बाबा भी नहीं है, बाबा से तो वर्सा मिलता है। ब्रह्मा से थोड़े ही वर्सा मिलता है। (मु०3.2.67 पृ०2 अंत)
- बाप खुद आकर ब्रह्मा तन से स्वर्ग स्थापन करते हैं। (मु०24.1.70 पृ०2 अंत)
- यह प्रजापिता ब्रह्मा जो अब व्यक्त है, वह जब सम्पूर्ण बन जाते, पाप कट जाते, तब फरिश्ता बन जाता है। सूक्ष्मवतनवासियों को फरिश्ता कहा जाता है। (मु०21.1.73 पृ०2 मध्यादि)
- यह ज्ञान सूर्य है। गुप्त मम्मा अलग है। इस राज़ को तो कोई मुश्किल समझ और समझा सके। उस मम्मा का नाम अलग है। मंदिर उनके हैं। इस बूढ़े माँ का मंदिर थोड़े ही है।(मु०15.11.72 पृ०3मध्यांत)[मु०17.11.77 पृ०3मध्य]

• परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देते हैं। इसको ब्रह्मा ज्ञान कहा जाता है। ब्रह्मा को भी ज़रूर किसने दिया होगा ना। ज्ञान सागर तो परमपिता परमात्मा है। वह ब्रह्मा द्वारा आए कर देते हैं। (मु०3. 12.71 पृ०1 अंत)

• बच्चे सम्पूर्ण मम्मा का सा० भी करते हैं। ...कहाँ बहुत ज़रूरी होगा तो बाबा भी आवेंगे। (मु०ता० 9. 3.68 पृ०2 अंत) [मु०ता० 11.3.04 पृ०3 आदि]

• उनको मात–पिता कहते। तुम मात–पिता जो गाते हैं वह ब्रह्मा–सरस्वती को नहीं कह सकते। ब्रह्मा थोड़े ही वैकुण्ठ रचता है। (मु०ता०14.10.72 पृ०3 आदि) [मु०ता०11.10.87 पृ०2 अंत]

• भक्तिमार्ग में मेल्स में नारद उत्तम गिना गया है, फीमेल्स में मीरा। ...ज्ञानमार्ग में फिर देखते हो मम्मा–बाबा का नाम बाला है। (मु०29.9.73 पृ०2 मध्यांत)

• मम्मा–बाबा भी जाएँगे, अनन्य बच्चे भी एडवांस में जाएँगे। ...ऐसे नहीं कि मम्मा–बाबा कोई परिपूर्ण हो गए हैं। परिपूर्ण अवस्था अंत में होगी। (मु०ता०10.11.88 पृ०3 मध्य)

• दादा पुरुषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं है। (मु०ता० 20.7.68 पृ०1 रात्रि क्लास)

बाप की पहचान (नाम-रूप से)

• मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है? जब नॉलेज देते हैं। बच्चों को बैठ समझाते हैं। (मु०26.10.68 पृ०2 मध्य)

• सोमनाथ नाम रखा है; क्योंकि सोमरस पिलाते हैं, ज्ञान धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना धन खर्चा करते हैं उनका मंदिर बनाने पर; क्योंकि सोमरस दिया है ना। सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी। यथा राजा–रानी तथा प्रजा सभी सोमनाथ–सोमनाथिनी हैं।(मु०3.3.70 पृ०2 मध्यादि)

• सोमनाथ का मंदिर कितना बड़ा है। कितना सजाते हैं।...आत्मा की सजावट नहीं है वैसे परमात्मा की भी सजावट नहीं है। वह भी बिंदी है। बाकी जो भी सजावट है वह शरीरों की है। ... अभी तुम (बच्चे) अंदर में जानते हो हम सोमनाथ बन रहे हैं। (मु०5.7.75 पृ०1 मध्यादि–अंत)

• हनुमान का भी दृष्टांत है न। इसलिए तुम्हारा महावीर नाम (तीर्थंकर) रखा है। अभी तो एक भी महावीर नहीं... अभी वीर हैं। पूरा महावीर पिछाड़ी में होंगे (मु०8.1.74 पृ०1 मध्यादि)

• बाप जब आते हैं तो ब्र०वि०शं० भी ज़रूर चाहिए। कहते हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच्य। अब तीनों द्वारा (एक साथ) तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करने की हैं।(मु०26.2.67 पृ०1आदि)[मु०22.2.75 पृ०1 आदि]

• बड़े भाई को हमेशा बाप समान समझते हैं। ......यह सारा ज्ञान के ऊपर है। जिसमें अधिक ज्ञान है वह बड़ा ठहरा। भल शरीर में छोटा हो; परंतु ज्ञान में तीखा है तो हम समझते हैं यह भविष्य पद में बड़ा बनने वाला है। ऐसे बड़ों का फिर रिगार्ड भी रखना चाहिए; क्योंकि ज्ञान में तीखे हैं। कम ज्ञान वाले को उनका रिगार्ड रखना चाहिए। (मु०3.5.73 रात्रि क्ला. पृ०1 मध्य)

• महावीर बनते हैं जो कब इनको माया हिला न सके। वह अचल स्थिरियम हैं, अखण्ड रहते हैं। अखण्ड अर्थात् शुरू से लेकर चलते आते हैं। (मु०7.11.72 पृ०2 मध्यांत)

• महावीर तो दुश्मन का आह्वान करते हैं कि आओ और हम विजयी बनें। महावीर पेपर को देख घबराएँगे नहीं, चैलेंज करेंगे; क्योंकि त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हैं कि हम कल्प–2 के विजयी हैं।(अ०वा०19.12.78 पृ०139आदि)

• एक शिवबाबा ही सर्व का सद्‌गति दाता है। ...गाते भी हैं एक राम। शिवबाबा को राम कहते हैं। ... असल नाम है शिव। उनको सोमनाथ भी कहते हैं। सोमरस पिलाया अर्थात् ज्ञान धन दिया। (मु०26.6.71 पृ०2 मध्य)

• थमे रहते हैं, उनको कहेंगे महावीर, हनुमान। तुम हो महावीर–महावीरनियाँ। नम्बरवार तो हैं ना। सबसे पहलवान को महावीर कहा जाता है। आदिदेव को भी महावीर कहते हैं, जिससे यह महावीरनियाँ पैदा होती हैं, जो विश्व में राज्य करती हैं। (मु०16.9.68 पृ०3 मध्यादि)

• अब बाप बैठ समझाते हैं कि मैं कृष्ण नहीं हूँ। मुझे रुद्र वा सोमनाथ कह सकते हैं। (मु०ता०11.1.73 पृ०2 मध्यांत)

•अच्छे–2 बच्चे जो हैं वह अपनी तैयारी कर रहे हैं। सुदामा को भी ख्याल हुआ– चावल मुट्ठी ले आया। (मु०18.7.69 पृ०2 मध्य) [मु०24.8.00 पृ०2 अंत]

• गोया तुम माया पर जीत पाते हो। तो फिर कोई हिला न सकेंगे। हनुमान का भी दृष्टांत है न; इसलिए तुम्हारा महावीर नाम रखा है। (मु०ता० 8.1.74 पृ०1 मध्यादि) [मु०ता० 29.1.99 पृ०1 मध्य]

• तुम सभी पार्वतियाँ हो, अमरकथा सुन रही हो शिवबाबा द्वारा। वह है ऊँच ते ऊँच। ....अमरनाथ है शिवबाबा। अमरनाथ पर बर्फ का लिंग बनाते हैं।...अमरनाथ अथवा शंकर–पार्वती वहाँ कहाँ से आए? (मु०ता०5.1.72 पृ०1 आदि)

• बाप है रुद्र। रुद्र बाप कहो, शिव कहो, सोमनाथ कहो, उसने ज्ञान यज्ञ रचा है जिसमें तुम बैठे हो। (मु०ता० 25.9.73 पृ०2 आदि)

• प्रजापिता नाम बाप का शोभता है। (मु०ता०11.1.73 पृ०1 आदि)

• शिव–शंकर महादेव कहते हैं। अब कृष्ण कहाँ से आया? उनको तो रुद्र वा शंकर नहीं कहेंगे। (मु०ता०11.1.73 पृ०1 आदि)

• नेहरु को भी पाकिस्तानी दुश्मन समझते थे। तो वह एफीजी बनाकर जलाते थे। (मु०ता० 24.9.73 पृ०1 मध्य)

•उनका नाम है शिव। ... दूसरा कोई नाम देना ही नहीं चाहिए। ...काशी में भी शिव का मंदिर है ना। वहाँ साधु लोग मंत्र जाय जपते हैं– शिव काशी विश्वनाथ गंगा। ...अब मैं तो विश्वनाथ हूँ नहीं। विश्व के नाथ तुम बनते हो, मैं बनता ही नहीं हूँ। (मु०7.8.67 पृ०2 मध्यांत)

• जनक जो सीता का बाप था उसको जीवनमुक्ति एक सेकेण्ड में मिली थी। ... कमल फूल समान पवित्र बनना है जनक मिसल। वही जनक फिर अनु जनक बना। (मु०26.12.73 पृ०1 आदि–मध्य)

• जैसे बंबई में बबूलनाथ कहते हैं अर्थात् काँटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला। नहीं तो असली नाम उनका है ही शिव। इनमें प्रवेश करते हैं तब भी नाम शिव ही है। (मु०ता० 8.9.68 पृ०1 मध्य)

• व्यास कहा जाता है वाचक को, जो मुरली चलाते हैं। (मु०4.11.65 पृ०1 अंत)

•नाम राम का रटते हैं; क्योंकि यह तो कोई जानते नहीं कि ईश्वर का नाम–रूप क्या है। (मु०ता० 5.12.71 पृ०1,2) [मु०ता० 19.12.01 पृ०2 मध्य]

• बाबा कहते हैं तुमको राजतिलक दे रहा हूँ। ...तुमको राजतिलक न दूँगा तो कौन देगा? कहते हैं ना– तुलसीदास चन्दन घिसे... यह बात यहाँ की है। वास्तव में राम शिवबाबा है। (मु०ता०5.3.73 पृ०3 आदि)

• एक अल्फ का पता नहीं, तो बाकी तो ज़ीरो, ज़ीरो हो जाता है। अल्फ के साथ ज़ीरो लगाने से फायदा होता है। (मु०ता० 14.4.67 पृ०2 मध्य)

• आप(बाप) अल्फ ही समझाते हैं। अल्फ से ही वर्सा मिलता है। (मु०29.7.70 पृ०2 अंत)

{देखिए प्रकरण 'शिव–शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो' में नीचे से प्वा० नं० 4}

बाप का रूप, वेश-भूषा

- बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ साधारण तन में। न बहुत गरीब, न बहुत साहुकार। (मु०21.4.70 पृ०2 आदि)
- शिवबाबा को कोई अहंकार है? है कितनी बड़ी अथॉरिटी। कहते भी हैं मैं साधारण तन में, साधारण घर में आता हूँ। साहुकारों के घर में थोड़े ही आता हूँ। (मु०9.7.71 पृ०2 अंत)
- इनका तो वही साधारण रूप है, वही ड्रेस आदि है। फर्क नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते। (मु०11.2.68 पृ०2 आदि)
- वह है निराकारी, निरअहंकारी, कोई भी अहंकार नहीं। कपड़े आदि भी वही हैं, (शरीर रूपी मिट्टी के सिवाय) कुछ भी बदला नहीं है। ... इनका तो वही साधारण तन है, साधारण पहरवाइस है। कोई फर्क नहीं। (मु०30.4.68 पृ०1 अंत) [मु०8.4.74 पृ०1 अंत]
- बाप कहते हैं मैं बहुत साधारण तन में आता हूँ (ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ का तन तो असाधारण था) इसलिए कोई विरला ही पहचानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ रहने वाले भी समझते नहीं हैं। (मु०5.2.68 पृ०3 अंत)
- वही महाभारत लड़ाई है। तो ज़रूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में हैं वह सिवाय तुम बच्चों के और किसी को पता नहीं है। कहते भी हैं मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण के (अर्थात् ब्रह्मा के शोभायमान) तन में नहीं आता हूँ। (मु०13.8.76 पृ०3 अंत)
- श्रीनाथ–जगन्नाथ है एक ही चीज़; परंतु जैसा देश वैसा ठाकुर बनाकर उनको भोग लगाते हैं। अगर पकवान आदि खिलावे तो पेट में दर्द पड़ जाए। (मु०20.7.73 पृ०1 मध्यांत)
- फकीर से अमीर बनेंगे। अंदर में यह मस्ती चढ़ी हुई है इसलिए मस्त कलंकीधर कहते हैं। (मु०28.2.68 पृ०1 अंत)
- बेगर बनना मासी का घर थोड़े ही है। बेगर के पास तो (धन, पद, मान, मर्तबा) कुछ भी न हो। (मु०21.1.74 पृ०4 अंत)
- बड़ा पद जो मिला है तो उसमें ही रहते हैं। पैसे वालों को अपने पैसे ही याद पड़ते हैं। ...नहीं तो धन–मर्तबा आदि याद पड़ता रहेगा। (मु०25.1.68 पृ०2 मध्य) [मु०26.1.74 पृ०2 मध्यांत]
- जो(जब) गोरा है तो ताज होना चाहिए। साँवरा है तो ताज कहाँ से आवेगा? ...... गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना। (मु०8.2.70 पृ०2 मध्य)
- यहाँ भीड़ का कायदा नहीं है। गुप्त वेश में काम चलता रहेगा। (मु०11.1.73 पृ०1 मध्यांत)
- बाप तो है बिल्कुल साधारण ना। ड्रेस आदि सभी वही है, कुछ भी फर्क नहीं। सन्यासी लोग तो फिर भी घर–बार छोड़ गेरु कफनी पहन लेते हैं। उनकी तो वही पहरवाइस है। सिर्फ बाप ने प्रवेश किया है, और तो कोई फर्क नहीं। जैसे बाप बच्चों को प्यार से सम्भालते हैं, पालन–पोषण करते हैं, वैसे यह भी करते हैं। कोई अहंकार की बात नहीं। बिल्कुल ही साधारण चलते हैं। बाकी रहने के लिए मकान तो बनाना पड़े। वह भी साधारण है।(मु०25.4.68 पृ०2 अंत)
- मैं रूप भी हूँ, बसन्त भी हूँ। आत्मा रूप है, उनमें सारा ज्ञान है। वर्षा बरसाते हैं। (मु०ता०29.12.67 पृ०1 मध्यांत)
- बाबा तो है बिल्कुल ऊँच ते ऊँच। चलन गरीब ते गरीब चलते हैं। बाप गरीब निवाज़ है ना। (मु०ता० 25.9.72 पृ०1 मध्यादि)
- जब विनाश शुरू हो जावेगा फिर समझेंगे भगवान ज़रूर गुप्त वेश में हैं। (मु०ता० 17.8.65 पृ०2 आदि)

{देखिए प्रकरण 'बाप की पहचान (नाम–रूप से)' में ऊपर से प्वा० नं० 7}

बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)

- सभी बच्चों पर मालिक को ही तरस पड़ेगा। बहुत हैं जो सृष्टि के मालिक को मानते हैं; परंतु वह कौन है, उनसे क्या मिलता है, वह कुछ पता नहीं है। फर्रुखाबाद में सिर्फ मालिक को मानते हैं। समझते हैं वह मालिक ही हमारा सब कुछ है। (मु०22.2.78 पृ०1 आदि)
- जैसे फर्रुखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं; परंतु वास्तव में विश्व का वा सृष्टि का मालिक तो ल०ना० बनते हैं। (मु०12.1.78 पृ०2 अंत)
- फर्रुखाबाद में तो मालिक को मानते हैं न। तुमने मालिक का भी अर्थ समझा है। वह है मालिक। हम उनके बच्चे हैं। तो ज़रूर वर्सा मिलना चाहिए न। (मु०7.12.73 पृ०2 मध्य)
- जैसे फर्रुखाबाद के रहवासी मालिक को मानते हैं। अनेक मत तो हैं ना। अच्छा, उस मालिक से फिर क्या मिलेगा? कुछ भी पता नहीं। मालिक को कैसे याद करें? उनका नाम–रूप क्या है? कुछ पता नहीं है। मालिक तो सृष्टि का मालिक ठहरा ना। वह हुआ रचयिता। हम हुए रचना। (मु०22.1.72 पृ०1 आदि)
- फर्रुखाबाद में बच्चियाँ तो हैं; परंतु अजुन इतनी ताकत नहीं। वहाँ मालिक को मानने वाले हैं तो समझाना चाहिए तुम कहते हो वह मालिक है, बाप फिर कहते हैं तुम मालिक हो। (मु०22.1.72 पृ०3 आदि)
- बाबा है बेहद के(की) सारी दुनिया का मालिक, सभी आत्माओं का बाप। बाप को मालिक कहा जाता है। फर्रुखाबाद तरफ मालिक को मानते हैं। घर का मालिक तो बाप ही होता है। बच्चों को बच्चे ही कहेंगे। जब वह भी बड़े होते हैं, बच्चे पैदा करते हैं तब फिर मालिक बनते हैं। यह सभी राज़ समझने की है। (मु०11.4.68 पृ०3 अंत) [मु०2.5.69 पृ०3 अंत]
- बाप कहते हैं मैं भी मगध देश में आता हूँ। (मु०8.6.70 पृ०3 अंत)
- बंदरों की महफिल में आता हूँ। मैं देवताओं की महफिल में कब आता ही नहीं हूँ। जहाँ माल मिलता है, 36 प्रकार के भोजन मिल सकते हैं वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ रोटी भी नहीं मिलती बच्चों को, उन्हों को आय गोद में लेकर बच्चा बनाय गोद में लेता हूँ। साहुकारों को गोद में नहीं लेता हूँ। (मु०15.8.76 पृ०3 मध्यादि)
- ज्ञान सागर को कोई महल तो नहीं है, झोंपड़ी है। ज्ञान सागर झोंपड़ी में रहना पसंद करते हैं। (मु०16.9.73 पृ०1 मध्यादि)
- इतना ऊँच ते ऊँच (बाप) कैसे छी–2 गाँवरों में आते हैं। ....बच्चों को बहुत ही प्यार से समझाते हैं। (मु०31.7.68 पृ०3 मध्यादि)
- बाबा इतना अंग्रेजी नहीं पढ़ा हुआ है। तुम कहेंगे बाबा अंग्रेजी नहीं जानते। बाबा कहते वाह! मैं कहाँ तक सब भाषाएँ बैठ सीखूँगा। मुख्य है ही हिंदी, तो मैं हिंदी में ही मुरली चलाता हूँ। जिसका शरीर धारण किया है वह भी तो हिंदी ही जानता है। (मु०26.11.73 पृ०2 मध्य)
- अब भगवान तो सभी भाषाओं में नहीं सिखावेंगे। वह तो हिंदी में ही समझाते हैं। जैसे इंगलिश टूटी–फूटी सभी जानते हैं, वैसे ही हिंदी भी टूटी–फूटी सभी जानते हैं। सहज है बहुत। (मु०1.2.72 पृ०2 मध्य) [मु०2.2.77 पृ०2 मध्यादि]
- सोमनाथ मंदिर में बैठने वाला शिवबाबा आज कहाँ पढ़ा रहे हैं। भक्तिमार्ग में इनको हीरों–जवाहरों के महल दे दिए हैं। कितना मान है। यहाँ इनको पहचानते ही नहीं तो पूरा रिगार्ड में नहीं ठहरते। राजऋषि भारत को स्वर्ग बनाने वाले पढ़ते देखो कितना साधारण हैं जैसे गरीबों का सतसंग होता है। साहूकारों के तो बड़े–2 हॉल होते हैं। (मु०11.3.73 पृ०4 मध्य)
- जहाँ बाप का जन्म होता है वह भूमि सबसे ऊँच तीर्थ है। (मु०7.11.72 पृ० 2 अंत)

- बाप आते भी हैं मगध देश में, जो कि बहुत गिरा हुआ देश है, बहुत पतित है, खान–पान भी बहुत गन्दा है। (मु०ता० 16.9.68 पृ०2,3)
- बाप कैसे, कहाँ आते हैं, किसको कुछ भी पता नहीं है। तुम जानते हो मगध देश में आते हैं, जहाँ मगरमच्छ होते हैं। (मु०ता० 28.12.68 पृ०3 मध्यादि)
- यू०पी० को धर्म युद्ध का खेल दिखाना चाहिए।(अ०वा०24.12.79 पृ०146अंत)

•फर्रुखाबाद में एक पंथ है, जो ''एक मालिक'' कहते हैं। ...क्या विश्व का, सारी सृष्टि का मालिक है? परमपिता परमात्मा सृष्टि का मालिक है नहीं। (मु०ता० 17.12.82 पृ०2 आदि) [मु०ता० 19.6.97 पृ०2 मध्य]

अलौकिक जन्म स्थली

- अहमदाबाद को सभी से ज़्यादा सर्विस करनी है; क्योंकि अहमदाबाद सभी सेंटर्स का बीजरूप है। बीज में ज़्यादा शक्ति होती है। खूब ललकार करो, जो गहरी नींद में सोए हुए भी जाग उठें। (अ०वा०24.1.70 पृ०190 मध्य)
- अहमदाबाद में स्वामीनारायण के 108 मंदिर हैं। करोड़ों पैसे आते होंगे। मिलते तो स्वामीनारायण को होंगे ना। तो (अंत में अहमदाबादी पाण्डव भवन तैयार होने पर विश्व विजेता 108 मणकों से कनेक्शन जोड़ने के लिए) सभी सेंटर्स से भी यहाँ ही आवेंगे ना। (मु०5.3.75 पृ०3 आदि)
- अहमदाबाद को तो वरदान है, सेवा का फल भी है और सेवा का बल भी है। (अ०वा०21.11.98 पृ०9 अंत)

बाप के गुण

- सागर खारा भी, मीठा भी है। मीठा जल बादल खैंच बरसाते हैं। (मु०29.5.72 पृ०1 मध्य)
- सागर में दो विशेष शक्तियाँ सदैव देखने में आवेंगी।...... (ज्ञान) लहरों द्वारा सामना भी करते हैं और हर वस्तु व व्यक्ति को स्वयं में समा भी लेते हैं। (अ०वा०21.9.75 पृ०121 आदि)
- तुम जानते हो कि ऊँच ते ऊँच है भगवान फिर सेकंड नम्बर में ब्रह्मा। उनसे ऊँच कोई होता नहीं। इससे बड़ी आसामी कोई है नहीं; परंतु चलते देखो कितना साधारण हैं। कैसे साधारण रीति बच्चों से बैठते हैं, ट्रेन में जाते हैं। कोई क्या जाने कि यह कौन हैं? (मु०13.8.76 पृ०3 मध्य)
- सूत ही सारा मूँझा हुआ है। सिवाय बाप के कोई उसको सुलझा नहीं सकते। (मु०20.5.65 पृ०5 मध्यांत)
- इन सन्यासियों आदि को अपना नशा कितना रहता है। वह पहले–2 नज़र रखते हैं साहूकारों में, बाबा पहले–2 नज़र रखते हैं गराबों पर। गरीब निवाज़ है ना। (मु०28.6.70 पृ०2 अंत)
- धनवान बाप का बच्चा कब गरीब की एडॉप्शन थोड़े ही कबूल करेगा। (मु०28.1.68 पृ०3 आदि)
- हम उस बाप के बच्चे हैं जिसका कोई बाप नहीं। हमारा वह टीचर है जिसका कोई टीचर नहीं। उनसे वर्सा मिलना है। (मु०19.8.72 पृ०4 मध्य)
- हम नम्बर वन बनते हैं तो फिर सेकिंड–थर्ड की पूजा क्यों करें? (मु०12. 8.68 पृ०3 मध्यादि)
- मम्मा–बाबा यह (ल०ना०) बनते हैं तो हम फिर कम बनेंगे क्या? (मु०14.3.70 पृ०3 अंत)
- तो देखो, ऊँच ते ऊँच भगवान और पढ़ाते देखो किन्हों को हैं? अहिल्याओं–कुब्जाओं को। (मु०7.11.73 पृ०3 आदि)

• बाप कहते हैं मैं जानता हूँ तुमको कितने धक्के खाने पड़ते हैं। समझते हैं भगवान कोई न कोई रूप में आवेगा। कब बैल पर सवारी भी दिखाते हैं। अब बैल पर सवारी कोई होती थोड़े ही है। (यह तो अड़ियल स्वभाव की बात है) (मु०17.2.69 पृ०3 मध्य)

• बाप है ज्ञान का सागर, उनके भेंट में फिर है अज्ञान का सागर भक्तिमार्ग के गुरू लोग। (मु०25.2.68 पृ०2 मध्य)

• जैसे आत्मा को देख नहीं सकते हैं, जान सकते हैं, वैसे ही परमात्मा को भी (ज्ञान से) जान सकते हैं। देखने में तो आत्मा और परमात्मा दोनों एक जैसी बिंदी, बाकी तो है सारी नॉलेज। यह बड़ी समझ की बातें हैं। (मु०11.1.66 पृ०3 मध्यांत)

• बिगर अर्थ बकने वाले को चरिया कहा जाता है। ...बाप आकर (भक्तिमार्ग की) इन चरियाई से निकालते हैं (अर्थ बताकर)। (मु०29.1.70 पृ०3 अंत) [मु०28.1.75 पृ०3 अंत]

• कभी भी कुछ भी हो जाए बाप नहीं निकालेंगे। बच्चे कहते हैं प्यार करो या ठुकराओ हम तेरे दर से नहीं निकलेंगे। बाप कहते हैं मैं ठुकराता कहाँ हूँ? मैं तो प्यार करता हूँ। (मु०29.4.73 पृ०3 अंत)

• बाप तो कहते मैं बिल्कुल साधारण हूँ। तो साहुकार कोई विरले आते हैं ... परंतु अंत में। (मु०21.1.73 पृ०2 अंत)

• बाप तो कहेंगे ना बाप चमाट भी मारेंगे। मम्मा मीठी होती है। बाकी बाबा कभी–2... परंतु हाथ तो नहीं चलाते। (मु०17.4.72 पृ०3 मध्यांत)

• बाप हैविन का मालिक बनाने के लिए पढ़ाते देखो कितना साधारण हैं। ऐसे बाप को याद करना भी भूल जाते हैं। (मु०1.11.73 पृ०3 आदि)

• अभी हम संगमयुग पर हैं। न उस राजाई के हैं, न इस राजाई के हैं। हम बीच में हैं, जा रहे हैं। खिवैया भी है निराकार, बोट भी निराकार है। बोट को खैंच कर परमपिता परमात्मा ले जाते हैं। बाप सभी बच्चों को साथ में ले जावेंगे। (मु०17.1.69 पृ०3 मध्यांत)

• बाप भी है गुप्त, नॉलेज भी गुप्त, तुम्हारा पुरुषार्थ भी है गुप्त। (मु०13.9.68 पृ०2 अंत)

• बाप है ही गरीब निवाज़। भारतवासी ही सबसे गरीब हैं। (मु०7.1.74 पृ०3 मध्य)

• बाबा को घड़ी–2 प्वाइंट रिपीट करनी पड़ती है; क्योंकि नए–2 बहुत आते हैं। (मु०ता० 18.2.68 पृ०3 मध्यादि)

• बाबा ने समझाया है गरीब की एक पाई, साहुकार का एक रुपया समान है। उनको वर्सा उतना ही मिलता है। बाप है ही गरीब निवाज़। इसलिए गायन भी है अजामिल जैसे पापी, अहिल्याएँ। साहुकार का नाम नहीं गाया जाता। (मु०ता० 29.11.76 पृ०2 मध्यादि)

बाप में विशेष शक्तियाँ

• तुम्हारे दुश्मन भी बहुत हैं। तुम्हारी सारी दुनिया दुश्मन बनती है; क्योंकि तुम गुप्त रीति अपना राज्य लेती हो। (मु०20.5.76 पृ०3 अंत)

• अभी जो कुछ भी लेना चाहो वह ले सकते हैं, फिर बाद में बाप के रूप का स्नेह बदल कर सुप्रीम जस्टिस का रूप हो जावेगा। जस्टिस के आगे चाहे कितना भी स्नेही सम्बंधी हो; लेकिन लॉ इज़ लॉ। अभी लव का समय है, फिर लॉ का समय होगा। (अ०वा०30.5.73 पृ०80 मध्य)

• लक्ष्य तो सबका यह है कि बाप समान बने...... अब प्रैक्टिकल में क्या है? बाप के समान सामना करने की शक्ति नहीं है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अंतर है। ... 50 प्रतिशत अंतर तो बहुत है। ...अंतिम समय का सामना करने के लिए अब तैयार होना है ना। (अ०वा०13.3.78 पृ०1 आदि)

• स्थापना के आदि समय तो सारी दुनिया एक तरफ और एक आत्मा दूसरी तरफ थी ना। यह तो पीछे सभी सहयोगी बने। पहले निमित्त तो एक आत्मा बनी ना। (अ०वा० 9.4.73 पृ०19 अंत, 20 आदि)

• इस समय विशेष आत्माएँ जस्टिस के रूप में हैं। (अ०वा०22.5.73 पृ०1 आदि)

•उस योग और ज्ञान से कुछ बल मिलता है हद का। यहाँ इस योग और ज्ञान से बल मिलता है बेहद का; क्योंकि बाप सर्वशक्तिवान अथॉरिटी है। (मु०ता० 19.1.75 पृ०1 आदि) [मु०ता० 17.1.00 पृ०1 मध्य]

बाप के कर्तव्य

• बाप के पास तो सिवाय बच्चों के और तो कोई है नहीं जिनको कि याद करें। तुम्हारे लिए तो बहुत हैं। तुम्हारी बुद्धि इधर–उधर जाती है, धंधे आदि में बुद्धि जाती है। हमारे लिए तो कोई धंधा आदि भी नहीं है। तुम अनेक बच्चों के अनेक धंधे हैं। हमारा तो एक ही धंधा है। (मु०18.6.67 पृ०2 अंत) [मु०18.6.75 पृ०2 मध्य]

• फर्स्ट विशेषता क्या हुई जो आत्माओं को बाप का भी मालिक बनाती है, वो बाप से भी श्रेष्ठ बनते हैं? वह विशेषता है बाप को प्रत्यक्ष करना, बाप के सम्बंध में समीप लाना, बाप के वारिस बनाना। यह आप पहली रचना का कर्तव्य है। बाप बच्चों द्वारा ही प्रत्यक्ष होते हैं। (अ०वा० 18.6.73 पृ०101 मध्य)

• विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जब से स्थापना का कार्य–अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ–2 यज्ञ कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रकट हुई।... तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को। शंकर समान ज्वाला रूप बनकर प्रज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। (अ०वा०3.2.74 पृ०13 अंत)

• बाप विनाश उनसे कराते हैं जिस पर कोई पाप न लगे। (मु०29.4.70 पृ०1 मध्य)

• सूर्य निकलता है तो उसकी तपत हो जाती है। (मु०22.6.73 पृ०1 आदि)

• फैमिली प्लानिंग की ड्यूटी तो गीता के कथन अनुसार बाप की ही है। ... गीता है फैमिली प्लानिंग का शास्त्र। (मु०27.3.74 पृ०1 आदि)

• फैमिली प्लानिंग की ड्यूटी तो गीता के कैनन(कायदे) अनुसार बाप की ही है। ... गीता है ही फैमिली प्लानिंग का शास्त्र। (मु०21.4.69 पृ०1 आदि)

• नए–2 पुरानों से तीखे चले जाते हैं। बाप से पूरा योग लग जाए तो बहुत ऊँचा चला जावेगा। सारा मदार है ही योग पर। (मु०4.9.74 पृ०2 आदि)

• बाबा कहते हैं बाप को निरंतर याद करना, इसमें तुम मेरे से भी जास्ती तीखे जाते हो; क्योंकि इनके ऊपर तो मामला बहुत है। (मु०2.12.70 पृ०2 मध्यादि)

• बाप आकर गुलामपने से छुड़ाते हैं। .... गुरु लोगों की ज़ंजीरों, फिर भक्ति के(की) ज़ंजीरों से बाप आकर छुड़ाते हैं। (मु०25.6.73 पृ०2 अंत)

• डूबने से ...निकालने वाला एक ही बाप है, फँसाने वाले हैं अनेक। (मु०24.2.69 पृ०3 मध्यादि) [मु०30.1.74 पृ०3 मध्य]

• (आत्माएँ) यहाँ के संस्कार अनुसार ही वहाँ जाकर जन्म लेंगे। जैसे लड़ाई वालों की बुद्धि (में) लड़ाई का ही संस्कार रहते(रहता) है तो वह संस्कार ले जाते हैं, लड़ने बिगर रह न सकेंगे।(मु०9.2.68 पृ०2आदि) [मु०6.2.74 पृ०2आदि]

• वह सिर्फ अपना–2 धर्म स्थापन करते हैं, राजधानी स्थापन नहीं करते हैं। एक परमपिता परमात्मा ही राजधानी स्थापन करते हैं।(मु०3.4.69 पृ०2 मध्यादि)

• ईश्वर का अंत पाया जा सकता है; परंतु उनकी रचना का अंत पाना मुश्किल है। (मु०25.9.73 पृ०4 अंत)

• तुम हो जैसे लाइट हाउस, सभी को ठिकाने लगाने वाले। ... ऐसी कोई बात नहीं जो तुमसे लागू नहीं होती है। (मु०14.4.68 पृ०3 अंत)

• मुख से कब कुवचन न निकलें। बाप की तो बात और है– उनको तो शिक्षा देनी होती है। (मु०3.2.67 पृ०3 आदि) [मु०3.2.75 पृ०3 आदि]

• इनके (ब्रह्मा के) लिए भी कहते हैं इनके ऊपर तो बहुत मामले हैं। (मु०28.11.71 पृ०3 अंत)

• सभी से जास्ती झंझट बाप के ऊपर रहता है।(मु०ता० 28.11.71 पृ०3 अंत)

• हम महिमा थोड़े ही करेंगे। यह तो उनकी ड्यूटी है पतित से पावन बनाने की। ...मैं पावन बनाने बिगर रह नहीं सकता हूँ। ...सेकेण्ड ब सेकेण्ड जो पास होता, ड्रामा मेरे से कराता है। मैं परवश हूँ। (मु०3.2.84 पृ०2 आदि) [मु०16.2.99 पृ०2 मध्य]

बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)

• भल कितने भी बड़े–2 सन्यासी, पंडित आदि हैं; परंतु तीसरा नेत्र देने की ताकत कोई में भी नहीं है। यह तीसरा नेत्र देने के लिए ज्ञान सूर्य बाप को आना पड़ता है। (मु०4.10.68 पृ०1 अंत)

• बुद्धि में फुल नॉलेज आने से फुल वर्ल्ड की राजाई मिल जावेगी। (मु०2.1.74 पृ०1 मध्यादि)

• भील अर्जुन से भी तीखा हो गया। बाहर में रहने वालों ने तीर पूरा जीत लिया। तब तो बाप कहते हैं घर वाले इतना उठा न सकेंगे जितना कि बाहर वाले। कहा जाता है घर की गंगा को मान नहीं देते। (मु०3.8.68 पृ०3 मध्यादि)

• जिसमें जास्ती नॉलेज होगी वह ऊँच पद पावेगा। (मु०25.1.68 पृ०1 अंत)

• मैं स्वर्ग का रचयिता तुमको राजतिलक न दूँगा तो कौन देगा? कहते हैं ना तुलसीदास चंदन घिसे... । यह बात यहाँ की है। (मु०5.3.73 पृ०3 आदि)

• जब ज्ञान घिसेंगे तब ही राजतिलक के लायक बनेंगे। (मु०8.8.73 पृ०3 अंत)

• बाप में ज्ञान और योग दोनों हैं। (मु०2.1.69 पृ०3 आदि)

• ऐसे नहीं कि मंत्र दे और चला जाता हूँ। बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधारा और फिर सुधारते भी हैं। सेकेंड का ज्ञान देकर फिर चले जाएँ तो ज्ञान का सागर नहीं कहा जाए। (मु०ता० 9.10.79 पृ०2 मध्य)

• तुम कोई जवाहरी दादा के पास थोड़े ही आए हो। तुम तो शिवबाबा के पास आए हो। ज्ञान का सागर तो वह है ना। (मु०ता० 14.12.71 पृ०4 आदि)

• वह परमपिता परमात्मा कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूँ; परन्तु मैं निराकार ऊपर बैठ प्रेरणा से कैसे पढ़ाऊँ! ऐसे तो कब पढ़ाई होती नहीं। प्रोफेसर घर में बैठ जाए तो प्रेरणा से पढ़ा सकेंगे? ज़रूर स्कूल में आना पड़े ना। (मु०ता०11.8.83 पृ०1 अंत)

• यह नॉलेज मैं ही सम्मुख सुना सकता हूँ। (मु०ता० 16.2.74 पृ०3 आदि)

• बाप भी हमको नित्य नई–2 बातें सुनाते जाते हैं। पहले हल्की पढ़ाई थी। अभी तो बाप गुह्य–2 प्वाइंट्स सुनाते जाते हैं। ज्ञान का सागर है ना। (मु०8.8.68 पृ०2 अंत)

• ऐसे बहुत बच्चे हैं जो ब्राह्मणी से भी तीखे हैं। ...जगदीश को भी कोई ने पढ़ाया। वो पढ़ाने वाले से भी तीखा हो गया। (मु०ता० 17.8.69 पृ०3 मध्यांत)

• अब सर्विस का लक्ष्य यही हुआ कि बाप (को) प्रत्यक्ष करना। वह तब कर सकेंगे जब पहले अपने को ज्ञान–योग के प्रत्यक्ष प्रमाण बनावेंगे। जितना स्वयं को प्र(त्यक्ष) प्रमाण बनावेंगे उतना बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। (अ०वा०6.8.70 पृ०2 अंत)

बाप की विचित्रता

• चाहे कितनी भी पब्लिक हो; लेकिन बाप पब्लिक में भी पर्सनल मुलाकात करते हैं; लेकिन गुह्यता के रहस्य को कोई समझ नहीं सकेंगे। (अ०वा०30.4.77 पृ०113 आदि)

• यह मेरे महावाक्यों की कोई कॉपी नहीं कर सकते। (मु०29.5.71 पृ०1 अंत)

• तुमने बाप द्वारा बाप को जाना है। बाप ने समझाया है फादर शोज़ सन फिर सन शोज़ फादर। ऐसा कायदा है। (मु०15.9.73 पृ०1 आदि)

• बाप है विचित्र तो उनकी नॉलेज भी विचित्र है। (मु०1.5.73 पृ०1 मध्यांत)

• बाप कहते हैं मेरे द्वारा मेरे को जानने से तुम सबको जान जावेंगे; क्योंकि मुझे कहते भी हैं मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। (मु०30.11.73 पृ०1 आदि)

• स्थापना की बातें तो वंडरफुल हैं। बाप पहले–2 अपनी पहचान देते हैं। यह समझानी और कोई दे न सके। (मु०ता०26.2.68 पृ०2 मध्यादि)

• गाया हुआ है जिन्हों को 3 पैर पृथ्वी के न मिले थे वे सारे विश्व के मालिक बन गए। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं। (मु०1.5.73 पृ०2 मध्यादि)

• अख़बारों में भूँ–2 करते रहते हैं। करने दो। तुम कुछ भी न करो। नहीं तो फिर और ही जास्ती भूँ–2 करेंगे। गाया हुआ है कलंकीधर पिछाड़ी कुत्ते भौंकते हैं। तुम अब कलंकीधर बन रहे हो। पतित मनुष्य तुम्हारे पीछे भौंकेंगे; क्योंकि नई बात है। (मु०26.6.72 पृ०4 अंत)

• एकदम काँटों को बैठ शिक्षा देते हैं। प्रवेश भी काँटे में किया है। तो काँटों पर भी प्यार है ना, तब तो उनको फूल बनाते हैं। ......नम्बर वन काँटे में आकर नम्बर वन फूल बनाता हूँ। (मु०27.2.68 पृ०2 अंत)

• निराकार बाप को सौदागर, जादूगर भी कहते हैं। (मु०8.7.65 पृ०1 अंत)

• मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कोई भी नहीं जानते हैं। जब मैं आकर अपनी पहचान दूँ तब मुझे जाने। (मु०19.1.71 पृ०1 आदि)

• बाप तो बड़ा गरीब निवाज है। गरीबों का ही लेंगे। साहूकारों का लेवें तो फिर इतना देना पड़े। (मु०ता० 4.9.74 पृ०3 अंत)

• धरती का करके माप कर भी सकें, सागर का तो कर नहीं सकते हैं। आकाश का और सागर का अन्त कोई पा नहीं सकते हैं। (मु०ता० 27.8.69 पृ०2 अंत)

• बाप भी कहते, मेरे को कोई विरला ही जानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, तुम बच्चों में भी विरले एक्युरेट रीति जानते हैं। (मु०ता० 13.10.68 पृ०2 अंत)

• तुम्हारे मिट–मायट(मित्र–संबंधी) यह नहीं जानते कि तुम क्या पढ़ाई पढ़ते हो। ...क्योंकि यह विचित्र पढ़ाई है ना। विचित्र बाप ही पढ़ाते हैं। (मु०ता० 8.11.68 पृ०1 मध्य)

• बाप तो है विचित्र। वह तुम्हारे सामने बैठे हैं, तब तो नमस्ते करते हैं। ...मेरे चित्र का कोई नाम बताओ। बस, शिवबाबा ही कहेंगे। (मु०ता०24.8.70 पृ०1 अंत)

•वह लौकिक बाप समझेगा बच्चा बड़ा हो अपने धंधे में लग जाए फिर हम बूढ़े होंगे तो हमारी सेवा करेगा। यह बाप तो सेवा नहीं माँगते हैं। यह है ही निष्काम। ......बाप तो कहते हैं मैं निष्काम सेवा करता हूँ। मैं राजाई नहीं करता हूँ। (मु०29.1.81 पृ०2 अंत) [मु०14.1.96 पृ०2 अंत, 3 आदि]

{देखिए प्रकरण 'बाप का रूप, वेश–भूषा' में ऊपर से प्वा० नं० 5}

बाप की लौकिक आयु

• बाप आत्माओं को बुलाते हैं यह समझाने लिए कि तुम ज्ञान में आते थे ना। तुमको कितना समझाया था कि बाप को याद करो, पवित्र बनो। फिर भी न माना। अब तुम्हारा पद भ्रष्ट हो गया। आगे जो मरे थे फिर भी बड़े हो कोई 20/25 के ही हुए होंगे। ज्ञान भी ले सकते हैं। (मु०16.2.67 पृ०1 अंत)

बाप की अलौकिक आयु

• ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष (=10वर्ष)। मैं इनके वानप्रस्थ अवस्था (60=6 वर्ष अर्थात् 1976) में प्रवेश करता हूँ।(मु०16.7.68पृ०1मध्यादि)[मु०17.7.74 पृ०1मध्य]

• (बेहद के ज्ञान) गर्भ में भी 5/6 मास बाद (अर्थात् सन् 69 से 5/6 वर्ष बाद 1976 के प्रत्यक्षता वर्ष में) आत्मा प्रवेश करती है तब ही चुर्र–पुर्र होती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। (मु०21.8.68 पृ०3 आदि)

• जबकि गाया हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा भी 100 वर्ष बाद चले जाते हैं। बाप आते ही हैं 60 वर्ष के बाद। ब्रह्मा चला जावेगा तो बाप भी चला जावेगा। तो 40 वर्ष बैठ समझाते हैं। (मु०17.9.68 पृ०1 अंत)

{देखिए प्रकरण 'सीढ़ी– इक्कीसवाँ जन्म कौन–सा?' में ऊपर से प्वा० नं० 1}

बाप की फुटकर पहचान

• भगवान कोई लाखों–करोड़ों को नहीं पढ़ाते हैं। (मु०7.4.72 पृ०3 आदि)

•यह पाठशाला अजुन बहुत वृद्धि को पावेगी। विघ्न आदि नहीं पड़े तो बढ़ जावे इसलिए यह विघ्न पड़ते हैं। 500 इकट्ठे थोड़े ही बैठ पढ़ते हैं, फिर तो माइक्रोफोन लगाना पड़े। माइक्रोफोन से बुढ़ियाँ क्या समझेंगी; इसलिए लिमिट है। जिनको बाप सम्मुख देख भी सके। बाप देखते हैं तो आत्माओं को देखते हैं, शरीरों को नहीं। ज़ोर से देखेंगे तो उनको शरीर ही भूल जावेगा। चुम्बक है न। तो जैसे अनकॉन्सस होता जावेगा। (मु०27.6.73 पृ०3 अंत) [मु०25.6.78 पृ०3 अंत]

• बड़ी–2 सभाओं में बाबा तो नहीं जा सकता। वो बच्चों का काम है। बच्चों से सवाल–जवाब करेंगे। सन्यासी आदि तो बाप के आगे उठेंगे भी नहीं। उनको तो मान चाहिए। बाबा का पार्ट तो बड़ा वंडरफुल है। (मु०14.10.65 पृ०5 अंत) [मु०12.10.72 पृ०2 अंत]

• 84 जन्मों का राज़ परमपिता परमात्मा के सिवाय कोई समझा न सके। (मु०24.9.73 पृ०3 मध्यादि)

• दिन–प्रतिदिन देखेंगे बाबा मधुबन से बाहर कहाँ जावेंगे ही नहीं। (मु०29.11.72 पृ०2 आदि)

• सन्यासी लोग शास्त्रों को बहुत मानते हैं। बड़ी गाड़ी अथवा ट्रक्स में भरकर रस्सियाँ डालकर फिर सारी परिक्रमा देते हैं।.........वैसे ही जगन्नाथ में फिर देवी–देवताओं के चित्र हैं। उन्हों को भी रथ में बिठाकर परिक्रमा दिलाते हैं। यह उन्हों का मान है। (बात है संगम की) (मु०28.4.73 पृ०1 मध्यांत)

• यहाँ रहकर पुरुषार्थ करने वालों से वहाँ घर में रह पुरुषार्थ करने वाले तीखे हो सकते हैं। (मु०5.4.71 पृ०2 आदि)

• अरविन्द घोष अकेला भागा था। फिर उसमें आकर अच्छी सोल ने प्रवेश किया। अब कितनी वृद्धि हो गई है। यह तो होता ही है। (मु०13.10.73 पृ०3 मध्यादि)

• बाप कहते हैं जो धक्के खाते हैं वे मुझे नहीं जानते हैं। उनको पता नहीं है कि बाप पढ़ाकर वरसा दे रहे हैं, विश्व का मालिक बनाने। तुम अभी धक्के खाने से छूट गए हो। (मु०2.6.73 पृ०3 मध्य)

• भगवान को जितना रुलाया है उतना और किसको नहीं रुलाया है। (मु०30.9.74 पृ०3 मध्य)

• शिवबाबा कहते हैं हम तो हैं ही रमतायोगी। जिसमें भी चाहूँ तो जाकर कल्याण कर सकता हूँ। (मु०24.4.70 पृ०3 अंत)

• अमेरिका के अख़बार में भी पड़ गया कि एक कलकत्ते का जवाहरी कहता है कि हमको 16,108 रानियाँ चाहिए, अभी 400 मिली हैं। (मु०30.8.73 पृ०3 आदि)

• तुम्हारा परमपिता परमात्मा के साथ क्या संबंध है? जब तक इस बात का एक्युरेट जवाब लिखकर न दें तब तक बाबा का मिलना ही फालतू है। (मु०26.3.87 पृ०3 अंत)

• जैसे अरविन्द घोष था, कितने में महिमा निकली। ...उन द्वारा छोटा मठ स्थापन हुआ। कितनी उनकी महिमा है। शादी की हुई थी, बाल–बच्चे भी थे। (मु०6.8.73 पृ०1 मध्यांत)

• वह है हैविनली गॉड फादर तो ज़रूर हैविन के गेट खोलने आवेंगे। ......फिर हम नर्क में क्यों पड़े हैं? (मु०ता० 8.4.71 पृ०2 अंत)

ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2

• शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमार–ब्रह्माकुमारियों को वर्सा देते हैं। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा ब्राह्मण कुल की रचना रचते हैं। (मु०24.10.66 पृ०3 मध्य)

• प्रजापिता ब्रह्मा वह दोनों तो नामी–ग्रामी हैं। प्रजापिता ब्रह्मा अभी तुमको मिलता है। (मु०19.3.68 पृ०3 आदि)

• बाप और दादा दोनों कम्बाइंड हैं। दो बच्चे इकट्ठे जन्मते हैं ना। दो का पार्ट इकट्ठा है। (मु०15.6.72 पृ०3 मध्य)

• कपिल अर्थात् जोड़ी। बापदादा, मातपिता यह कपिल जोड़ी है ना। (मु०26.5.65, 26.5.72 पृ०2 अंत)

• बाप और दादा दोनों ही निरअहंकारी हैं। (मु०15.7.72 पृ०1 मध्य)

• बाबा तो दो हैं। यह बातें कोई शास्त्र में नहीं हैं। ब्रह्मा का चित्र दिखाते हैं। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन ब्रह्मा द्वारा तुमको पढ़ाता हूँ। इन द्वारा स्थापना कराता हूँ। ... तो बच्चे समझते हैं दोनों को नमस्ते करनी पड़े, बापदादा नमस्ते। (मु०7.2.70 पृ०1 आदि)

• क्रियेटर ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। (मु०13.2.67 पृ०2 मध्यांत)

• प्रजापिता ब्रह्मा भी तो अनादि है। आत्माओं का बाप इनमें आए हैं। आकर ब्रह्मा को एडॉप्ट करना पड़ता है। (मु०19.7.73 पृ०1 अंत) [मु०20.7.78 पृ०1 अंत]

• समझाया जाता है ब्रह्मा तन से परमपिता परमात्मा ने आकर इन (ब्रह्मा) को भी एडॉप्ट किया। ...... गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्रह्मा द्वारा सभी शास्त्रों का सार सुनाते हैं। (मु०30.12.73 पृ०1 अंत, 3 आदि) [मु०11.12.83 पृ०1 अंत, 3 आदि]

• बाप–दादा एक का ही नाम तो कब होता ही नहीं। (मु०6.11.71 पृ०3 मध्यादि)

• प्रजापिता ब्रह्मा है साकार। वह है निराकार और साकार दोनों इकट्ठे हैं। दोनों का हाइएस्ट पोजीशन है। उनसे बड़ा कोई होता ही नहीं और कितनी साधारण रीति बैठते हैं। (मु०16.12.71 पृ०3 अंत)

• ऊँच ते ऊँच शिवबाबा और ब्रह्मा दोनों हाइएस्ट हैं। (मु०13.6.70 पृ०3 अंत)

• गॉड को हाइएस्ट और लोएस्ट थोड़े ही रखना होता है। वो तो मनुष्यों को रखना होता है। (मु०2.2.67 पृ०2 आदि)

• प्रजापिता (ब्रह्मा) को भी क्रियेटर कहते हैं। (मु०27.7.65 पृ०2 आदि)

• सूक्ष्मवतनवासी को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ प्रजा होती नहीं। तो ज़रूर प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ होगा। वही फिर अव्यक्त सम्पूर्ण बनेगा। वह तो है अव्यक्त। ज़रूर व्यक्त भी चाहिए, जो फिर अव्यक्त होना है। दोनों अभी दिखाई पड़ते हैं। (मु०24.9.73 पृ०3 मध्य)

• ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतन में है; परंतु प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ का ही होगा न। (मु०25.11.73 पृ०5 मध्यांत) [मु०15.11.83 पृ०2 अंत]

• कृष्ण को प्रजापिता नहीं कह सकते। (मु०4.11.73 पृ०1 अंत)

• मुझे प्र० ब्रह्मा ज़रूर चाहिए। ... ब्रह्मा का बाप कौन है? कोई बतावे। (मु०ता० 4.11.73 पृ०2 मध्य)

• मुझे ब्रह्मा ज़रूर चाहिए, तो प्र० ब्रह्मा भी चाहिए। ... यह मेरा रथ मुकर्रर है। (मु०ता० 15.11.87 पृ०3 आदि)

• बापदादा की भी आपस में कभी रूह–रिहान चलती है। (मु०16.3.90 पृ०3 मध्यादि)

• परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन द्वारा आदि स० दे० दे० धर्म की स्थापना करते हैं। (मु०ता० 4.6.66 पृ०1 मध्य)

• परमात्मा कहते हैं मैं जिस साधारण तन में आता हूँ उसका नाम ब्रह्मा पड़ता है। वह सूक्ष्म ब्रह्मा है, तो दो ब्रह्मा हो गए। (मु०28.2.98 पृ०2 आ)

• स्वर्ग की स्थापना करना, यह ब्रह्मा का काम नहीं, यह परमपिता परमात्मा का ही काम है।(मु०ता० 29.9.73 पृ०1 अंत) [मु०ता०18.9.83 पृ०1 अंत]

• ब्रह्मा है तो शिवबाबा भी है। अगर ब्रह्मा नहीं होता तो ...शिवबाबा बोलेंगे कैसे? ...ऐसे तो नहीं समझेंगे, शिवबाबा ऊपर में है। (मु०ता० 7.1.69 पृ०1 आदि)

• जो पिया के साथ है। सो भी दोनों बापदादा बैठे हैं। सम्मुख बैठ सुनते हैं। (मु०10.3.72 पृ०1 अंत)

• यह बाप और दादा दोनों इकट्ठे हैं। ... इनकी आत्मा भी इकट्ठी हैं। (मु०ता० 4.1.74 पृ०3 मध्य)

ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं

• माता–पिता हैं तो सन्मुख गोद लेनी पड़ती है। निश्चय किया, गोद न ली और मर गया तो वर्सा नहीं मिल सकता। ऐसे बहुत हैं जो वर्सा नहीं पाते, फिर प्रजा में चले जाते हैं। बाप कहेंगे, ...निश्चय हो गया यह वही मात–पिता हैं तो गोद में आना पड़े। फिर सर्विस कर आप समान बनाना है। (मु०30. 7.64 पृ०3 मध्यादि) [मु०26.7.78 पृ०2अंत, 3आदि]

• ब्रह्मा से तो कुछ भी मिलने का है नहीं। वर्सा बाप से ही मिलता है इन द्वारा। बाकी ब्रह्मा की कोई वैल्यू नहीं है। (मु०3.2.67 पृ०2 अंत)

• रचना से कब वर्सा नहीं मिल सकता। तुम जानते हो ब्रह्मा से कुछ भी वर्सा नहीं मिल सकता। ब्रह्मा वर्थ नॉट ए पैनी हैं। (मु०25.2.67 पृ०1 अंत) [मु०26.2.75 पृ०1 अंत]

• शिवबाबा कहते हैं बच्चे, ख्याल रखना वर्सा तुमको हमसे लेना है, ब्रह्मा से नहीं मिलना है। बिल्कुल नहीं मिलता है। स्वर्ग की राजधानी का वर्सा हमसे ही मिल सकता है। रचयिता स्वर्ग का मैं हूँ। इसको हैविनली गॉड फादर कहा जाता है। (मु०1.7.73 पृ०1 मध्यांत) [मु०30.6.78 पृ०1 मध्य]

• इस माता को भी छोड़ो, सभी देहधारियों को छोड़ो; क्योंकि अब वर्सा बाप से लेना है। (मु०4.1.73 पृ०2 मध्यादि)

• तुमको मालूम है दो बाप हैं। दो से वर्सा मिलता है। तीसरा फिर होता नहीं। ब्रह्मा से कोई वर्सा थोड़े ही मिलता है। यह तो दलाल हो गया। दो से मिलता है– लौकिक और पारलौकिक। इन द्वारा बाप तुमको सिखलाते हैं, वर्सा देते हैं। (मु०1.2.68 पृ०2 मध्य)

• बाप से हमेशा पूरा वर्सा लेने का पुरुषार्थ करना है। जैसे मम्मा–बाबा भी उस मात–पिता से पूरा वर्सा ले रहे हैं। (मु०17.4.73 पृ०4 अंत)

• बड़ा भाई बाप समान हो सकता है; लेकिन भाई से कोई वर्सा नहीं मिल सकता है। (अ०वा०3.12.83 पृ०30 अंत)

• धर्म स्थापकों का भी वह निराकार एक बाप है।......... क्राइस्ट को वा ब्र०वि०शं० को बैठ प्रार्थना करने से वह कुछ भी दे नहीं सकते। (मु०29.11.72 पृ०1 मध्य–मध्यांत)

• राजाई भी बाप बिगर तो कोई दे न सके।......... इस ब्रह्मा के पास तो कुछ भी नहीं है।...... इनका चित्र रखने की भी दरकार नहीं। (मु०27.2.70 पृ०2 आदि)

• ब्रह्मा को भी उड़ा देना है। शिव को भी उड़ा दिया। (मु०6.6.72 पृ०2 आदि)

• ब्रह्मा को सर्व का सद्‌गति दाता, पतित–पावन, लिबरेटर नहीं कहा जा सकता। यह शिवबाबा की ही महिमा है। (मु०6.3.76 पृ०2 आदि)

• फाइनल बाप, बाप है, टीचर है, सतगुरू है, यह निश्चय बुद्धि अभी नहीं है। अभी तो भूल जाते हैं। (सन् 65 की मुरली) (मु०10.12.68 पृ०1 मध्य)

•स्वर्ग का रचयिता कोई ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। वास्तव में तुम्हारा गुरू ब्रह्मा नहीं है। सतगुरू है ही एक। यह ब्रह्मा भी उनसे सीख रहा है। ऐसे नहीं कि वो सीख कर मर जावेगा तो हम गद्‌दी पर बैठेंगे। नहीं, ऐसे होता नहीं। सतगुरू एक ही सतगुरू है। हम सब उनसे सीख कर और सद्‌गति को पाते हैं। (मु०25.7.65 पृ०2 अंत) [मु०28.7.77 पृ०2 अंत]

• सद्‌गुरू तो एक ही है। ब्रह्मा का भी गुरू वह हो गया। विष्णु का गुरू नहीं कहेंगे। ब्रह्मा का गुरू बन उनको विष्णु देवता बनाते हैं। शंकर का भी गुरू कैसे हो सकता? शंकर तो पतित बनता ही नहीं। उनको गुरू की क्या दरकार? ब्रह्मा तो 84 जन्म लेते हैं। शंकर के थोड़े ही 84 जन्म होते हैं। ब्रह्मा की सद्‌गति होती है तो जाकर विष्णु बनते हैं। (मु०4.9.72 पृ०3 अंत)

• सतगुरू के रूप में सभी को वापिस ले जाने वाला है। वह तो गुरू एक मर जाए तो फिर दूसरे फॉलोअर को गद्‌दी पर बिठाते हैं। यह तो व्यभिचारपना हो गया। यह बाबा तो गारंटी करते हैं मैं सभी को ले जाऊँगा। कहाँ? जिसके लिए आधा कल्प भक्ति की है। मुक्तिधाम ले जाऊँगा। (मु०25.4.78 पृ०3 अंत)

• सतगुरू के रूप में सभी को वापिस ले जाने वाला है। वह तो गुरू एक मर जाए तो दूसरे फॉलोअर को गद्‌दी पर बिठाते हैं। यह तो व्यभिचारीपना हो गया। यह बाबा थोड़े ही गारंटी करते हैं मैं सभी को ले जाऊँगा। कहाँ? जिसके लिए आधा कल्प भक्ति की है। मुक्तिधाम ले जाऊँगा। (मु०20.4.73 पृ०3 अंत)

• यह मात–पिता, ब्रह्मा–सरस्वती दोनों कल्पवृक्ष के नीचे बैठे हैं, राजयोग सीख रहे हैं। तो ज़रूर उन्हों के गुरू चाहिए। (मु०28.1.73 पृ०2 मध्यादि)

• बाप के तो बच्चे बने हो। टीचर रूप में इनसे शिक्षा पा रहे हो। अंत में सतगुरू बन तुमको सच खंड में ले जावेंगे। तीनों काम प्रैक्टिकल में करते हैं। (मु०17.2.73 पृ०1 आदि)

• वहाँ बाप मिला नहीं, टीचर मिला नहीं, फट से गुरू बन गए। यहाँ कितने कायदे का ज्ञान है। यहाँ तुम्हारा बाप, शिक्षक, गुरू एक मैं ही हूँ। (मु०20.4.72 पृ०2 अंत)

• धर्म स्थापन करने वाले को गुरू कहना नम्बर वन नालायकी है। (मु०30.7.67 पृ०3 अंत)

• ऐसा भी कोई नहीं जो कहे कि मैं बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ, गुरू भी हूँ। यह ब्रह्मा भी ऐसे नहीं कह सकते। एक शिवबाबा ही कहते हैं मैं सभी का बाप, टीचर, गुरू हूँ। (मु०ता० 19.10.76 पृ०1 मध्यादि)

• यह मूर्ति एक ही है; परंतु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं। (मु०ता० 28.6.84 पृ०1 आदि)

•जबकि यह खुद कहते हैं मेरे से वर्सा नहीं मिल सकता तो उस गांधी बापू जी से फिर क्या वर्सा मिल सकेगा! (मु०ता० 11.10.68 पृ०2 अंत) [मु०ता० 1.9.04 पृ०3 मध्य]

• ब्रह्मा को भी पावन बनाने वाला वह एक सतगुरू है। सत बाबा, सत टीचर, सतगुरू तीनों इकट्ठे हैं। (मु०ता०25.9.73 पृ०2 अंत)

• ब्रह्मा को भी वर्सा शिवबाबा से मिलता है। यह भी भाई हो गया। ... तुमको वर्सा मिलता है दादा से। (मु०ता० 16.7.73 पृ०2 मध्य)

• क्रियेटर तो एक ही है। बाकी सभी पढ़ रहे हैं। इसमें यह (ब्रह्मा) भी आ गया। फिर भी यह रचना हो गई ना। (मु०ता० 8.1.68 पृ०2,3)

• ब्रह्मा कोई क्रियेटर नहीं है। रचयिता तो एक बाप है।(मु०5.3.73पृ०1मध्य)

•......तुमको मालूम है दो बाप हैं। दो से वर्सा मिलता है। ....ब्रह्मा से कोई वर्सा थोड़े ही मिलता है। यह तो दलाल हो गया। ....इन द्वारा बाप तुमको सिखलाते हैं, वर्सा देते हैं।(मु०ता०1.2.68 पृ०2 मध्य) [मु०ता०30.1.04 पृ०2 अंत]

• बाबा ने समझाया है क्रियेशन से कोई वर्सा नहीं मिलता है, क्रियेशन को क्रियेटर से वर्सा मिलना है। (मु०ता० 25.6.65 पृ०1 अंत)

•बाबा कहते हैं कि बाबा भी चला जाए तो तुम बच्चों को फिर भी नॉलेज तो मिली हुई है ना कि हमको शिवबाबा से वर्सा लेना है, कोई इनसे तो लेने का नहीं था ना। (मु०ता० 25.6.65 पृ०3 आदि) [मु०ता० 30.8.03 पृ०2 मध्य]

• वह लोग समझते हैं यह ब्रह्मा को ही परमात्मा समझते हैं। ....इनसे तो वर्सा नहीं मिलता। (मु०ता० 25.3.69 पृ०3 मध्यादि)

• बाबा अनुभव अपना बताते हैं– शुरू में बनारस गए तो दीवालों पर गोले आदि निकालते रहते थे। समझ में कुछ भी नहीं आता था यह क्या है; क्योंकि यह तो जैसे बच्चा बन गए। (मु०21.8.73 पृ०2 आदि)

• ब्रह्मा वल्द? क्योंकि ब्रह्मा भी क्रियेशन है ना। (मु०8.9.68 पृ०2 आदि)

नया पार्ट

• सभी तेरे पर सदके जावेंगे। प्रभाव निकलना तो है ना। अभी तो तेरा बहुत सामना करते हैं; क्योंकि तुम सभी के दुश्मन हो। सभी का विनाश कराय तुम राज्य लेते हो तो तेरे दुश्मन बनेंगे ना। इसमें भी पहले घर के दुश्मन बने। बाबा के भी घर वाले, मित्र–सम्बंधी आदि दुश्मन बने। (मु०17.2.73 पृ०3 आदि)

• जब तक इनका यह शरीर है तब तक नॉलेज देता रहूँगा। राजाई स्थापन हो जावेगी फिर विनाश शुरू होगा और मैं चला जाऊँगा। (मु०1.12.73 पृ०3 आदि)

• टेलिविज़न भी निकलेगा, कहाँ भी बैठ देखते रहेंगे। यह ब्रह्मा है, इसमें शिवबाबा आए हैं, शिवबाबा मुरली चलाते हैं– आगे चल यह भी निकलेगा। (सन् 65 की मुरली) (मु०26.6.70 पृ०3 अंत)

• एक दिन टेलिविज़न भी निकलेगा; परंतु सभी तो देख नहीं सकेंगे। देखेंगे बाबा मुरली चला रहे हैं। आवाज़ भी सुनेंगे। (मु०23.8.73 पृ०3 आदि)

• बाप नहीं(न हो) तो बच्चों को कैसे सावधान करेंगे? मुरली द्वारा। टेप द्वारा समझावेंगे। फिर टेलीविज़न होगा तो सामने खड़े होकर कहेंगे। नाम भी लेंगे तुम फलाने–2 आपस में लून–पानी हो लड़ते हो। (मु०31.7.68 पृ०2 अंत)

• तुम तो विश्व के भी मालिक बनते हो तो ब्रह्माण्ड के भी मालिक बनते हो; इसलिए बाप तुमको नमस्ते करते हैं। (मु०5.9.70 के बाद रा.क्ला. पृ०1 अंत)

• यह डबली लोहे की। इनमें बैठते–2 आखरीन यह डबली भी सोने की हो जावेगी। हीरे जैसा बन जावेंगे। हीरे जैसा जन्म भी हीरा ही देंगे ना। (मु०2.6.69 पृ०3 मध्य)

• तुम पवित्र बनते हो तो तेरी कितनी महिमा होती है। तेरे द्वारा मनुष्यों का 21 जन्मों के लिए कल्याण हो जाता है। सर्व मनोकामनाएँ 21 जन्मों के लिए पूर्ण हो जाती हैं। (मु०17.2.73 पृ०1 मध्य)

• घबड़ाओ मत! बैकबोन बापदादा सामना करने के लिए किसी भी व्यक्त तन द्वारा समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं। (अ०वा०16.1.75 पृ०2 आदि)

• इस ड्रामा में तुम्हारा है हीरो–हीरोइन का पार्ट। तुम विश्व के मालिक बनते हो। यह नशा कब और कोई में हो न सके। (मु०2.5.68 पृ०2 अंत)

• साकार में सर्व आत्माओं की नज़र इस महान स्थान पर ही जा रही है और जाएगी। ... विश्व के इसी श्रेष्ठ कोने से ही सदाकाल का जीयदान मिलना है। ... ऐसे ही यह आध्यात्मिक ख़ज़ानों की प्राप्ति का स्थान जो अभी गुप्त है, इसको अनुभव के नेत्र द्वारा देख ऐसे ही समझेंगे जैसे गँवाया हुआ, खोया हुआ गुप्त ख़ज़ाने का स्थान फिर से मिल गया है। ... इसको तो खूब प्रसिद्ध करो तो विचित्र बाप, विचित्र लीला और विचित्र स्थान यही देख–2 हर्षित होंगे। (अ०वा०26.1.83 पृ०57 आदि, मध्य, अंत)

• यह नया ज्ञान है– यह प्रत्यक्ष नहीं हुआ है तो ज्ञान दाता कैसे प्रत्यक्ष हो? पहले ज्ञान आता है फिर दाता आता है। तो ज्ञान दाता ऊँचे ते ऊँचा है या एक ही वह ज्ञान दाता है, यह सिद्ध कैसे होगा? इस नए ज्ञान से ही सिद्ध होगा। आत्माएँ क्या कहतीं और परमात्मा क्या कहता है, यह अंतर जब तक मनुष्यों की बुद्धि में न आए तब तक जो भी तिनके के सहारे पकड़े हुए हैं वह कैसे छोड़ेंगे?...लेकिन जो फाउंडेशन है, नवीनता है, बीज है, वह है नया ज्ञान। ... सत्य ज्ञान की अथॉरिटी है, यह प्रत्यक्षता अभी रही हुई है। जो भी आते हैं वो समझें कि यह नया ज्ञान, नई बात है। (अ०वा०1.6.83 पृ०235 आदि)

• आकार रूप में भी मिलन मनाते फिर भी साकार रूप द्वारा मिलने की शुभ आशा सदा ही रहती है। ... हमें तो बोल द्वारा मुलाकात नहीं कराई। बापदादा भी हरेक बच्चे से दिल भर–2 के मिलने चाहते हैं; लेकिन समय और माध्यम को देखना पड़ता है। ... साकार सृष्टि में साकार तन द्वारा मिलना होता है तो साकारी दुनिया और साकार शरीर के हिसाब को देखना पड़ता है। (अ०वा०24.2.83 पृ०83 आदि)

• फॉलो फादर करना तो आता है ना। ऐसे तो नहीं सोचते हम भी शरीर छोड़ अव्यक्त बन जावें। इसमें फॉलो नहीं करना। ब्रह्मा बाप फरिश्ता बना ही इसलिए कि अव्यक्त रूप का एग्जाम्पल देख फॉलो सहज कर सको। साकार रूप में न होते हुए भी फरिश्ते रूप से साकार रूप समान ही साक्षात्कार कराते हैं ना।... जैसे अव्यक्त ब्रह्मा बाप साकार रूप की पालना दे रहे हैं, साकार रूप की पालना का अनुभव करा रहे हैं, वैसे आप व्यक्त में रहते अव्यक्त फरिश्ते रूप का अनुभव करो। (अ०वा०13.3.81 पृ०43 आदि)

• तुमको तो सिर्फ एक ईश्वर से ही पढ़ना है। बाप जो पढ़ावे, सिखावे ओरली पढ़ना है। (मु०17.3.68 पृ०1 आदि)

• कोई भी पार्ट सदा एक जैसा नहीं चलता, बदलता है आगे बढ़ाने के लिए। तो अब बापदादा विशेष व्यक्त रूप से अव्यक्त मुलाकात करने का सहज वरदान दे रहे हैं। इस नए वर्ष के पहले मास को विशेष

वरदान है। ... अब व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन भी समाप्त होता जावेगा। फिर क्या करेंगे? मिलन नहीं मनावेंगे? अल्पकाल के मिलन के बजाय सदाकाल के मिलन के अनुभवी बन जाएँगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल समीप, सम्मुख मिलन मना रहे हैं। .... तो इस वर्ष को विशेष पुरुषार्थ में तीव्रता लाने का वर्ष समझ मनाना। (अ०वा०24.12.72 पृ०387 आदि)

- बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे। (अ०वा०15.9.74 पृ०131 मध्य)

- अभी यह है बहुत जन्मों के अंत का जन्म। हमने इसमें प्रवेश किया है, प्रवेश कर तुम बच्चों को समझाता हूँ जब तक इनका शरीर है तब तक तुमको ज्ञानामृत पीना है। (मु०9.11.72 पृ०2 मध्य)

- बापदादा साथ देने में नहीं छिपे; लेकिन साकार दुनिया से छिपकर अव्यक्त दुनिया में उदय हो गए। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, यह तो वायदा है ही। यह वायदा कभी छूट नहीं सकता। इसलिए तो ब्रह्मा बाप इंतजार कर रहे हैं, नहीं तो कर्मातीत बन गए तो जा सकते हैं। बंधन तो नहीं है ना; लेकिन स्नेह का बंधन है। (अ०वा०7.5.84 पृ० 298 अंत, 299 आदि)

- साकार सृष्टि पर इस साकारी नेत्रों द्वारा दोनों बाप को देखना, उनके साथ खाना–पीना, चलना, बोलना, सुनना, हर चरित्र का अनुभव करना, विचित्र को चित्र में देखना– यह श्रेष्ठ भाग्य ब्राह्मण जीवन का है। (अ०वा०3.5.84 पृ०287 अंत)

- आत्मा ने कहा गॉड फादर। तो ज़रूर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ कहे और कब मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता? सारी दुनिया की जो भी आत्माएँ हैं, सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो आश है वह पूर्ण करते हैं। (मु०28.6.84 पृ०1 मध्यांत)
- जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है। दुनिया वाले समझते हैं बाप चले गए और बाप बच्चों से विचित्र रूप में जब चाहें तब मिलन मना सकते हैं। दुनिया वालों की आँखों के आगे पर्दा आ गया। वैसे भी स्नेही मिलन पर्दे के अंदर अच्छा होता है। (अ०वा०18.1.79 पृ०231 आदि)

- चारों ओर नाम निकले। इस रेस के कारण एक/दो से आगे बढ़ रहे हैं। विदेश से नाम निकलना है– यह तो ठीक है; लेकिन किस कोने से निकलता, कौन–सा स्थान निमित्त बनता, किस स्थान का व्यक्ति निमित्त बनता है? इसलिए हरेक अपनी धुन में लगे हुए हैं। (अ०वा०27.5.77 पृ०176 मध्य)

- आज ख़ास विदेशियों के लिए बापदादा को भी विदेशी बनना पड़ा है। बापदादा विदेशी न बनते तो मिल भी न सकते। विदेशी विशेष आत्माएँ, जो कि विशेष कार्य के निमित्त बनी हुई हैं, ऐसे होवनहार ग्रुप को देखने के लिए व साकार रूप में मिलने के लिए निराकार और आकार को भी साकार रूप का आधार लेना पड़ा। (अ०वा०2.8.75 पृ०73 अंत)

- सिवाए निराकार परमपिता परमात्मा के कोई भी ब्र०कु०कुमारी को पढ़ा नहीं सकते। ब्रह्मा को भी ज्ञान सागर नहीं कह सकेंगे, इसको प्रजापिता कहेंगे। ज्ञान सागर एक ही निराकार परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। वही पतितों को पावन बनाने वाला है; क्योंकि ज्ञान सागर से ही सद्‌गति होती है। यह है नई बात। (मु०24.8.73 पृ०1 आदि) [मु०25.8.78 पृ०1 मध्यादि]
- करनकरावनहार है– तो करनहार का भी पार्ट बजाया और अभी करावनहार का भी पार्ट बजा रहे हैं। बाप का तख़्त होने कारण तख़्तनशीन होने में बोझ अनुभव नहीं होता; क्योंकि बाप का तख़्त है ना। (अ०वा०14.2.78 पृ०2 आदि)

- ब्रह्मा बाप साकार रूप से भी अव्यक्त रूप में अभी दिन–रात सेवा में ज़्यादा सहयोगी बनने का पार्ट बजा रहे हैं। (अ०वा०7.10.75 पृ०159 आदि)

- साकार में तो फिर भी कई प्रकार के बन्धन थे, अभी तो निर्बन्धन हैं। अभी तो और ही तीव्रगति है– बाप को बुलाया और हाज़िरा हज़ूर। (अ०वा०5.12.78 पृ०104 आदि)

• इतनी(इतने) सिकीलधे श्रेष्ठ आत्माएँ हो जो स्वयं भगवान आपको पढ़ाने के लिए परमधाम से आते हैं। (अ०वा०12.1.79 पृ०203 आदि)

• साकार के 42–43 वर्ष और अव्यक्त के 10 वर्ष, तो 50 से ऊपर चले गए ना। (अ०वा०16.1.79 पृ०226 आदि)

• साकार स्नेह के रिटर्न में साकार रूप है। (अ०वा०18.1.79 पृ०229 अंत)

• जैसे सतयुगी शहज़ादियों की आत्माएँ जब आती थीं तो वह भविष्य के रूप प्रैक्टिकल में देखते हुए आश्चर्य खाती थीं ना कि इतने बड़े महाराजे और कार्य क्या कर रहे हैं, विश्व महाराजा और भोजन बना रहे हैं। (अ०वा०10.12.78 पृ०116 अंत)

• अमृतवेले रोज़ सफलता का तिलक...........का गायन है ना कि भक्तों को भगवान तिलक लगाने आया। तो इस वर्ष आज्ञाकारी बच्चों को स्वयं बाप आपके सेवा स्थान अर्थात् तीर्थ स्थान पर सफलता का तिलक देने आएँगे। (अ०वा०6.2.80 पृ०279 अंत)

• बाप और दादा भी दो हैं। दोनों के कर्तव्य से विश्व परिवर्तन होता है। (अ०वा०8.6.72 पृ०298 अंत)

• यह अव्यक्त रूप का मिलन व्यक्त द्वारा भी कब तक? (गुलज़ार दादी खुद ही अव्यक्त हो जाती अर्थात् व्यक्त रूप ज़रूर कोई दूसरा है।) (अ०वा०24.12.72 पृ०387 आदि)

• अब तो जब आप समय परिवर्तन की सूचना दे रहे हो तो बापदादा के मिलने का भी परिवर्तन होगा ना। (अ०वा०15.2.83 पृ०64 अंत)

• जैसे साकार में याद है ना, हर ग्रुप को विशेष स्नेह के स्वरूप से अपने हाथों से खिलाते थे और बहलाते थे। वही स्नेह का संस्कार अब भी प्रैक्टिकल में चल रहा है। (अ०वा०6.1.83 पृ०32 मध्य)

• कर्मबन्धन से मुक्त, सम्पन्न हुई आत्मा, इस कल्प के जन्म–मरण के चक्र को समाप्त करने वाली आत्मा, निराकार बाप की फर्स्ट नम्बर साथी आत्मा, विश्व के कल्याण प्रति निमित्त बनी हुई फर्स्ट आत्मा, स्वयं के प्रति और विश्व के प्रति सर्व–सिद्धि प्राप्त की हुई आत्मा जहाँ चाहे और जितना समय चाहे वह वहाँ स्वतन्त्र रूप में पार्ट बजा सकती है। जब अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करने वाली आत्माएँ अपनी सिद्धि के आधार पर अपने रूप परिवर्तन कर सकती हैं, तो सर्व सिद्धि प्राप्त हुई आत्मा अव्यक्त रूपधारी बनकर जितना समय चाहे क्या वह उतना समय ड्रामानुसार नहीं रह सकती? (अ०वा०30.6.74 पृ०83 अंत, 84 आदि)

• कोई–2 बच्चों का संकल्प पहुँचता है कि मियाँ–बीबी तो ठीक; लेकिन मियाँ निराकार और बीबी साकार तो मेल कम होता है।.........इसलिए काज़ी करना पड़ता है; लेकिन मियाँ ऐसे मिला है जो बहुरूपी है। जो रूप आप चाहो तो एक सेकेण्ड में जी हजूर कह हाज़िर हो सकते हैं। (अ०वा०28.11.79 पृ०58 मध्य)

• बाप कहते हैं सदा मेरे से जिस भी रूप में चाहो उस रूप में खेल सकते हो। सखा बनकर खेल सकते हो, बन्धु बन खेल सकते हो, बच्चा बनकर भी खेल सकते हो, बच्चा बनाकर भी खेल सकते हो। ऐसा अविनाशी खिलौना तो कभी नहीं मिलेगा, जो न टूटेगा, न फूटेगा और खर्चा भी नहीं करना पड़ेगा। (अ०वा०7.1.80 पृ०182 अंत)

• 'कोई है' यह तो सब समझते हैं; लेकिन यही है और यह एक ही है, यह हलचल का हल नहीं चला है। (अ०वा०5.12.84 पृ०50 अंत)

• ईश्वर से वर्सा लेते हैं। वर्सा लेते–2 कोई चले जाते हैं तो ज़रूर कहाँ उनका भी कोई पार्ट होगा और कुछ काम करने का। ....इससे भी जास्ती कोई कार्य करना है। (मु०25.6.65 पृ०2 आदि) [मु०30.8.03 पृ०1अंत]

• बाप भी शांति का सागर है ना, जिसका पार्ट ही पिछाड़ी में होगा। (मु०ता० 2.5.68 पृ०2 अंत)

• ऐसी कोई बात नहीं जो तुमसे लागू नहीं होती है। तुम सर्जन भी हो, सर्राफ भी हो, धोबी भी हो। सब खासियतें (विशेषताएँ) तुम्हारे में आ जाती हैं। (मु०ता०14.4.68, 5.5.69 पृ०3 अंत)

• बाप जिस भाषा में समझाते हैं, उसमें कल्प–2 समझावेंगे। जो इनकी भाषा होगी उसमें ही समझावेंगे ना। आजकल हिंदी बहुत चलती है। (मु०ता० 28.9.68 पृ०2 आदि)

• बाप भी विनाश के लिए आए हैं तो आधे पर थोड़े ही जावेंगे। आग लगकर जब पूरी होगी तो चले जावेंगे। ... सबको साथ ले जावेंगे। होना ज़रूर है। (मु०ता० 20.9.77 पृ०3 आदि)

• बाप की बायोग्राफी बाप से ही जानी जाती है। अब निराकार शिवबाबा की बायोग्राफी कैसे हो सकती? ज़रूर जब साकार में आए तब बायोग्राफी हो। ....सिर्फ आत्मा की बायोग्राफी नहीं हो सकती। जीवात्मा बने तब पुनर्जन्म में आए और बायोग्राफी भी हो। (मु०ता० 20.2.72 पृ०2 मध्यांत) [मु०ता० 22.2.92 पृ०2 मध्यादि]

• सबसे जास्ती भक्ति किसने की है, ज्ञान में भी वही तीखे जावेंगे, पद भी ऊँच पावेंगे। (मु०ता० 22.7.68 पृ०3 मध्यादि) [मु०ता० 3.7.04 पृ०3 अंत]

• आप ऐसे नहीं कहेंगे कि ब्रह्मा बाप चले गए। जो वायदा किया है– साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, अगर आदि आत्मा भी वायदा नहीं निभाए तो कौन वायदा निभाएगा! सिर्फ रूप और सेवा की विधि परिवर्तन हुई है।...... सर्व बच्चों की पालना अब भी ब्रह्मा द्वारा ही हो रही है। (अ०वा०ता० 18.1.91 पृ०1 अंत)

• बाप तो तुम बच्चों से ही बात करते हैं (यह ब्रह्मा से भी नहीं)। आगे तो सबसे मिलते थे, सबसे बात करते थे। अब कमती करते–2 आखरीन तो कोई से बात नहीं करेंगे। सन शोज़ फादर है ना। (मु०ता० 17.12.67 पृ०3 मध्य) [मु०ता० 15.12.85 पृ०3 मध्य]

• अकालमूर्त का बोलता–चलता तख़्त है। (मु०ता० 21.7.69 पृ०1 मध्य)

• ऐसे नहीं है बाप चला गया, फिर आवेगा नहीं। ... करनकरावनहार है ना। करता भी है, कराता भी है। (मु०ता० 8.3.69 पृ०3 अंत)

• बाप बैठ समझाते हैं, हूबहू जैसे बच्चों को पढ़ाते हैं।(मु०17.9.68 पृ०3मध्य)

• तुम बच्चे ही जानते हो कि बाप फिर से इस तन में आया हुआ है। (मु०20.8.68 पृ०1 आदि)

• बाबा कहते मैं साकार बिगर कैसे समझाऊँगा! इसमें प्रेरणा की तो बात ही नहीं। (मु०ता० 25.9.72 पृ०2 अंत)

• यह बाप तो है ही एवरप्योर और है भी गुप्त। डबल है ना। ताकत सारी उनकी है, इनकी (ब्रह्मा की) नहीं। शुरुआत में तुमको उन्होंने कशिश की; क्योंकि वह एवरप्योर है। तुम कोई इनके पिछाड़ी नहीं भागे। (मु०ता० 17.2.68 पृ०2 मध्य) [मु०ता० 14.2.99 पृ०2 अंत, 3 आदि]

• दिल्ली को वरदान है, और उसमें भी आदि रत्न जगदीश को वरदान है स्थापना के कार्य में। (अ०वा०23.2.97 पृ०33 अंत, 34 आदि)

{देखिए प्रकरण ' संगम की आयु ' में ऊपर से प्वा० नं० 1}

फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट

• फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फास्ट, यह भी समझाना पड़ता है ना। (मु०15.12.68 पृ०3 मध्यांत) [मु०15.12.70 पृ०3 मध्यांत]

• वंडरफुल खेल है न। जो पहले–2 आते हैं वह ही अंत तक रहेंगे। (मु०6.3.74 पृ०2 आदि)

• बहुत अच्छी–2 बच्चियाँ जो मम्मा–बाबा के लिए भी डायरैक्शन ले आती थीं, ड्रिल कराती थीं। उनके डायरैक्शन पर हम चलते थे। सभी से जास्ती दुर्गति में वह चले गए। यह बच्चियाँ भी जानती हैं। (मु०28.5.69 पृ०2 अंत)

- मम्मा–बाबा को ड्रिल सिखलाते थे, डायरैक्शन देते थे– ऐसे करो, नीचे हो बैठे। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेंगे। वे भी गुम हो गए। तो यह सब समझाना पड़े ना। हिस्ट्रियाँ तो बहुत बड़ी है। (मु०25.5.68 पृ०2 अंत)
- अच्छे–2 फर्स्टक्लास ध्यान में जाने वाले, जिनके डायरैक्शन पर माँ–बाप भी पार्ट बजाते थे। आज वे हैं नहीं। क्या हुआ? कोई बात में संशय आ गया। (मु०8.7.73 पृ०1 अंत)
- अच्छे–2 बच्चे 5/10 वर्ष रह अच्छे–2 पार्ट बजाते, फिर हार खा लेते हैं। यह है युद्ध स्थल। बाप की याद तो कभी भी छोड़नी नहीं चाहिए। (मु०8.7.73 पृ०1 अंत)
- अच्छी–2 महारथी थीं। मम्मा–बाबा के लिए भी ऊपर से प्रोग्राम ले आती थीं। उनको बैठ ड्रिल कराते थे। आज वह हैं नहीं। माया खा गई, अजगर ने सारा खाकर हप कर लिया। (मु०2.6.70 पृ०3 मध्य)
- 10 वर्ष से (साथ में) रहने वाला और ध्यान में जाती थी। मम्मा–बाबा को भी ड्रिल कराती थी। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे। कितना मर्तबा था! आज वह भी हैं नहीं। उस समय यह इतना ज्ञान नहीं था। (मु०23.7.69 पृ०2 अंत)
- ऐसे तो नहीं समझते हो कि यह गायन व पूजन तो पुरानों व अनन्य वत्सों का है। नए–2 तीव्र पुरुषार्थ से चलने वाले बाप–दादा के नयनों में विशेष समाए हुए हैं। जैसे बच्चों के नयनों में सदा बाप समाया हुआ है, सदा साथ का और समीप का अनुभव करते हैं, ऐसे देरी से आते हुए भी दूर नहीं, समीप हैं; इसलिए लास्ट में आने वाले बच्चों को ड्रामानुसार हाई जम्प द्वारा फास्ट अर्थात् फर्स्ट जाने का गोल्डन चांस विशेष मिला हुआ है।(अ०वा०22.1.76 पृ०7 अंत, 8 आदि)
- ऐसे नहीं पहले आने वाले ही आगे जावेंगे। बाप कहते हैं पिछाड़ी में आने वालों को तख्त मिलता है तो तीखे हो जाते हैं। पुराने पीछे रह जाते हैं।...... देरी से आने वालों को तीखा दौड़ने का शौक रहता है। पुराने जैसे कि पुरुषार्थ करते–2 थक जाते हैं। (मु०8.3.76 पृ०3 अंत)
- जहाँ भी जिस कोने में बिछुड़े हुए बच्चे हैं वहाँ वह आत्माएँ समीप आनी ही हैं। इसलिए सेवा में भी वृद्धि होती रहती है। कितना भी चाहो शांत करके बैठ जाएँ, बैठ नहीं सकते। सेवा बैठने नहीं देगी, आगे बढ़ाएगी; क्योंकि जो आत्माएँ बाप की थीं वह बाप की फिर से बननी ही हैं। (अ०वा०6.1.88 पृ०204 मध्य)
- पिछाड़ी में साक्षात्कार की धुन होगी, जैसे पहले होती थी। महाराजा–महारानी बन पार्ट बजाते थे, आज वह हैं नहीं। एक–2 की दुर्गति की हिस्ट्री सुनो तो तुम वंडर खाओ। (मु०21.9.68 पृ०4 अंत)
- ऐसे भी नहीं कि पुराने जो हैं वही होशियार होंगे। कई नए पुराने से भी तीखे जाते हैं। (मु०13.4.77 पृ०3 आदि)
- पुराने–2 बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया। ...समझ सकते हैं उनमें से फिर आएँगे। ज़रूर स्मृति आएगी कि हम बाप से पढ़ते थे। ... बाबा आने देंगे, फिर भी भल आकर पुरुषार्थ करें। कुछ न कुछ अच्छा पद मिल जाएगा। (मु०9.10.70 पृ०2मध्य)
- जो नं० वन पावन था वही फिर नं० लास्ट पतित बना है। उनको ही अपना रथ बनाता हूँ। फर्स्ट सो लास्ट में आया है, फिर फर्स्ट में जाना है। (मु०ता० 21.5.68 पृ०2,3)
- तुम ही पहले–2 आए थे। अभी लास्ट में भी तुम हो। फिर पहले–2 तुम्हीं मनुष्य से देवता बनने वाले हो। (मु०ता० 16.7.73 पृ०2 मध्यांत)
- अच्छे–2 बच्चे थे, आज हैं नहीं। वंडर है ना। माया ऐसी दुस्तर है जो बड़े–2 महारथी जिनको हनुमान कहते, वह आज हैं नहीं, अजगर के पेट में चले गए। (मु०ता० 30.9.77 पृ०2 मध्य)
- 25 वर्ष वाले अभी इतना भी नहीं सीखे हैं कि वह बेहद का बाप है, जिससे वर्सा पाते हैं। ...7 रोज़ वाला भी 25 वर्ष वाले से तीखा चला जाता है। (मु०ता० 22.8.73 पृ०2 मध्य)

• तुम बच्चे भी यह समझ रहे हो आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुम्हीं जो पहले अलग हुए हो फिर तुम्हीं आकर मिले हो। (मु०ता० 7.7.71 पृ०3 आदि)

• ब्राह्मण धर्म में तुम कितने जन्म लेते हो? (एक जन्म) कोई दो/तीन जन्म भी लेते हैं ना। (मु०ता० 12.3.69 पृ०3 मध्यांत)

{देखिए प्रकरण ' बाप की लौकिक आयु ' में प्वा० नं० 1}

राम बाप को कहा जाता है

• शिवबाबा आया हुआ है। रामनवमी मनाते हैं। ज़रूर आया था, राज्य करके गया था, तो उनका दिवस मनाते हैं। पहले तो रचयिता शिवबाबा आया होगा तब ही स्वर्ग की रचना रची होगी। उनके बाद फिर राम का राज्य चला। (मु०6.4.73 पृ०1 मध्य)

• रावण कोई बलवान नहीं है। राम बलवान है तो रावण भी बलवान है; क्योंकि दोनों ही आधा–2 कल्प राज्य करते हैं। (कौन? शिव!) (मु०4.4.72 पृ०1 आदि)

• राम अर्थात् ईश्वर और रावण, दोनों का चित्र इकट्ठा करना चाहिए। फिर दिखाओ कि यह राम है, यह रावण है। यह स्वर्ग बनाते हैं, यह फिर नर्क बना देते हैं। (मु०2.9.69 पृ०2 आदि)

• जैसे वंडरफुल रावण है, उससे भी फिर वंडरफुल राम शिव है। वो रावण है गुप्त दुश्मन और यह है प्रत्यक्ष दोस्त। (मु०9.10.73 पृ०4 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता है उनको ग्रेट–2 ग्रैंड फादर कहा जाता है। मनुष्य सृष्टि में प्रजापिता हुआ। (मु०5.2.71 पृ०1 मध्यांत)

• राम गयो, रावण गयो, जिनके बहु परिवार... रावण का परिवार कितना बड़ा है! तुम तो मुठभर हो। यह सारी रावण सम्प्रदाय है। तुम्हारा राम सम्प्रदाय कितने थोड़े हैं, 9 लाख। (मु०17.2.68 पृ०3 आदि)

• राम–राज्य राम द्वारा ही मिलता है। सतयुग से राम–राज्य शुरू होता है। (मु०17.7.72 पृ०1 अंत)

• मनुष्यों को क्या पता राम आया हुआ है। आवेंगे भी गुप्त वेश में। बाप कहते हैं जिन्होंने कल्प पहले भी न पहचाना है वह कभी नहीं पहचानेंगे। (मु०1.2.71 पृ०4 मध्य)

• वास्तव में राम भी परमपिता परमात्मा को कहते हैं। (मु०26.7.73 पृ०2 आदि)

• बाप ....जिनको भारतवासी राम भी कहते हैं; परंतु यथार्थ रीति न जानने कारण राम त्रेता वाला समझ लेते हैं। वास्तव में उनकी तो बात ही नहीं (संगम की बात है) (मु०4.2.67 पृ०1 आदि)

• यहाँ राम का मंदिर है ना। राम को काला बना दिया है। राम शायद अकेला है......, शादी न की हुई होगी। सीता साथ में होगी तो शादी किया हुआ कहेंगे। यह सब बातें तुम समझते हो। (मु०7.9.76 पृ०3 अंत)

• सभी हैं सीताएँ, राम है एक। सीता का पति राम और मुझे भी राम कहने कारण मिला दिया है। मेरा नाम वास्तव में राम है नहीं। पूजा कोई राम समझ नहीं करते हैं। शिव वा रुद्र कह पूजा करते हैं। सारा शुट(सूत) ही मुँझा दिया है। बुद्धि का शुट(सूत) मूँझा हुआ है। (मु०19.11.71 पृ०2 अंत) [मु०16.11.76 पृ०2 अंत]

• राम अक्षर क्यों कहते हैं? क्योंकि रावण–राज्य है ना। तो इसकी भेंट में राम–राज्य कहा जाता है। राम है परमपिता परमात्मा जिसको ईश्वर भी कहते हैं, भगवान भी कहते हैं। असली नाम है उनका शिव।(मु०10. 2.67 पृ०1 मध्यादि)

• स्वर्ग का वर्सा बाप ही आकर देते हैं। पुकारते भी उनको हैं '' हे भगवान, हे राम!'' (मु०30.1.70 पृ०3 मध्यादि)

• सर्वशक्तिवान तो एक बाप ही है जिसको राम भी कहते हैं। (मु०26.2.68 पृ०3 आदि)

• राम शिव को कहा जाता है। राम–2 जब जपते हैं तो वह त्रेता वाले राम को नहीं याद करते। (संगमी) माला में ऊपर में (कमल) फूल भी दिखाते हैं। (मु०7.11.68 पृ०2 आदि)

• इस समय तुम आत्माएँ राम शिवबाबा श्री–श्री की मत पर चलती हो। (मु०2.3.73 पृ०2 मध्यादि)

• यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे। वह तो बच्चा है। (मु०19.1.75 पृ०2 मध्यांत)

• रावण द्वारा ही विकारी दुनिया होती है। राम बाप आकर सबको पावन बनाते हैं। (मु०ता० 27.2.69 पृ०1 मध्यांत)

• राम कहा जाता है बाप को। वह राम नहीं, जिसकी सीता चुराई गई। (मु०ता० 6.9.68 पृ०3 मध्य)

• राम कहते हैं तो भी वह एक ही निराकार ठहरा। (मु०26.8.73 पृ०3 आदि)

• बाप राम है राइटियस, रावण है अनराइटियस। (मु० 2.5.68 पृ०2 मध्यादि)

• राम शिवबाबा को कहा जाता है। (मु०ता० 7.9.68 पृ०3 आदि)

• बाबा ने समझाया है कि भक्ति को सीता कहा जाता है, भगवान को राम कहा जाता है। (मु०ता० 27.8.69 पृ०1 मध्यादि)

• लव–कुश के लिए भी कहानी है ना। लड़ाई के मैदान में राम के बच्चे बेहोश हो गए। राम के बच्चे कोई दो नहीं हैं, यहाँ तो ढेर बच्चे हैं। (मु०ता० 3.8.66 पृ०1 मध्य)

• राम परमात्मा को ही कहते हैं। राम–2 कह फिर पिछाड़ी में शिव को नमस्कार करते हैं। वही परमात्मा है। (मु०ता० 8.11.68 पृ०3 मध्यादि) [मु०ता० 14.10.99 पृ०3 मध्य]

• ....कृष्ण किसका बाप नहीं हो सकता। वह तो छोटा बच्चा है, सतयुग का प्रिन्स है। वह टीचर भी नहीं हो सकता। खुद ही बैठकर टीचर से पढ़ते हैं। (मु०ता० 21.10.75 पृ०1 आदि)

रामबाप ही पतित-पावन सद्गति दाता

• गाते भी हैं सर्व का सद्‌गति दाता राम; परंतु बंदर बुद्धि होने के कारण समझते नहीं हैं कि राम किसको कहा जाता है। ....कहेंगे जिधर देखो राम ही राम रमते हैं। (अभी संगम में) रमते तो मनुष्य हैं ना। (मु०7.3.67 पृ०1 अंत) [मु०11.3.75 पृ०1 अंत]

• पतित–पावन भी कहते हैं तो ज़रूर यहाँ आवेंगे ना। पतितों को पावन कोई प्रेरणा से थोड़े ही बनावेंगे। (मु०25.2.68 पृ०2 अंत)

• शिवबाबा पार्ट न बजावे तो फिर कोई काम का न रहा। वैल्यू ही न होती। उनकी वैल्यू ही तब है जबकि सारी दुनिया की सद्‌गति करते हैं। तब उनकी महिमा होती है। (मु०15.12.68 पृ०1 अंत) [मु०16.12.74 पृ०1 अंत]

• एक ही बाप बैठ सभी को पावन बनाते हैं। एक को पावन बनने से सभी पावन बन जाते हैं। एक पतित होते तो सभी पतित हो जाते हैं। (मु०13.4.69 पृ०3 आदि) [मु०21.3.74 पृ०3 मध्यादि]

• बाप पतित–पावन आते हैं तो सारी दुनिया के मनुष्यमात्र तो क्या, प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाते हैं। (मु०20.1.75 पृ०2 मध्य)

• पतित–पावन बाप के सिवाय न कोई पावन निराकारी दुनिया में जा सकते, न पावन साकारी दुनिया में आ सकते। (मु०16.4.73 पृ०2 मध्यादि)

• जबकि इनको सबकी सद्‌गति करने आना ही है तो ज़रूर किसी रूप में आवेंगे ना। घर बैठे इनको आना है। (मु०7.7.72 पृ०2 अंत)

• बाप कहते हैं मैं सभी धर्मों का सर्वेंट हूँ। आकर सभी को सद्‌गति करता हूँ। सद्‌गति कहा जाता है सतयुग को। (मु०22.3.68 पृ०2 आदि)

• बाप तो निराकार है, फिर वह पतित–पावन कैसे ठहरा? क्या जादू लगाते हैं? पतितों को पावन बनाने ज़रूर उनको यहाँ आना पड़े। (मु०7.5.72 पृ०1 मध्यादि)

• सबकी गति–सद्‌गति दाता एक राम है। गाते हैं पतित–पावन राम, फिर दूसरों को गुरू क्यों बनाते? बाप इनसे लिबरेट करते हैं, गुरुओं की ज़ंजीरों से निकालते हैं। (मु०4.9.73 पृ०3 अंत)

• परमपिता परमात्मा शिव तो घड़ी–2 शरीर नहीं बदलते हैं। वो तो एक ही बार आते हैं। उनको ही पतित–पावन कहा जाता है। कह देते हैं पतित–पावन सीता–राम। अब सीता–राम का भी अर्थ समझना है। सीता कहा जाता है भक्ति को। उनका साजन है भगवान जिसको राम कह देते हैं।
(मु०1.6.65 पृ०1 आदि) [मु०2.6.72 पृ०1 आदि]

• दुर्गति से निकाल सद्‌गति बाप ही देते हैं। वही क्रियेटर, डायरैक्टर, मुख्य एक्टर गाया जाता है। मुख्य एक्टर कैसे है? पतित–पावन बाप आकर पतित दुनिया में सभी को पावन बनाते हैं। तो मुख्य हुआ ना। (मु०17.6.72 पृ०2 अंत)

• पतित–पावन बाप आकर जब पावन बनावे तब हम जा सकते हैं। अब बाप तुम बच्चों को पावन होने की युक्ति बता रहे हैं। (मु०1.11.71 पृ०3 आदि)

• पुकारती हैं– हे पतित–पावन, आओ। तो ज़रूर उनको रथ चाहिए ना जिसमें आकर पावन बनावें। ज्ञान के बाण से तो पावन नहीं बनेंगे। (मु०30.5.70 पृ०2 आदि)

• सभी गाते रहते हैं– पतित–पावन सीता–राम। हम पतित हैं, पावन बनाने वाला बाप है। वह सभी हैं भक्तिमार्ग की सीताएँ, बाप है राम। (मु०31.1.71 पृ०3 मध्य)

• लिबरेटर ज्ञान का सागर शिवबाबा है, ब्रह्मा को नहीं कहेंगे। ब्रह्मा भी उनसे लिबरेट होता है। (मु०3.1.74 पृ०1 अंत) [मु०2.1.84 पृ०1 अंत 2 आदि]

• गाते भी हैं– पतित–पावन, सर्व का सद्‌गति दाता परमात्मा है। ...पावन दुनिया में एक भी पतित होता नहीं। यह तो है ही पतित दुनिया। पावन एक भी हो न सके। (मु०ता० 23.9.71 पृ०1 अंत) [मु०ता० 27.10.96 पृ०1 अंत]

• एक ही बाप सर्व का सद्‌गति दाता, पतित–पावन है। ...जगत का बाप, जगत का शिक्षक, जगत का गुरू तो एक ही है।(मु०ता० 23.8.67 पृ०1 आदि)

• इस समय सभी रावण के जेल में हैं। ...राम आते हैं रावण के जेल से छुड़ाने। (मु०ता० 12.6.69 पृ०2 आदि)

•पहले–2 मुख्य बात बाप समझाते हैं कि पतित–पावन, ज्ञान सागर श्रीकृष्ण नहीं है। (मु०ता० 16.4.71 पृ०1 आदि) [मु०ता० 27.4.01 पृ०1 मध्य]

• शिवबाबा बाबा भी है, साजन भी है। सभी सीताओं का राम है। वही पतित–पावन है। (मु०ता० 16.4.71 पृ०2 अंत)

• सर्व का सद्‌गति दाता राम गाया जाता है तो वह ज़रूर तब आवेंगे जब सभी दुर्गति में हैं।
(मु०ता० 12.6.72 पृ०1 अंत)

राम मत से राम राज्य

• अभी तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिल रही है जिसको राम मत कहा जाता है (कृष्ण मत नहीं)।
(मु०12.6.69 पृ०1 आदि)

• राम–राज्य स्थापन करने के लिए तो बेहद का बापूजी चाहिए, जो राम–राज्य की स्थापना और रावण–राज्य का विनाश करे। (मु०6.7.71 पृ०1 मध्यांत)

• अगर राम–राज्य में चलना है तो राम की मत पर चलो। (मु०12.5.77 पृ०3 मध्यादि)

• राम मत से तुमने राज्य लिया है, रावण मत से राज्य गँवाया है। अभी फिर ऊपर चढ़ने लिए तुमको राम मत मिलती है। (मु०7.6.68 पृ०3 मध्य)

• अभी राम शिवबाबा मत देते हैं। निश्चय में ही विजय है। (मु०10.12.68 पृ०2 मध्य)

राम फेल

• रामचंद्र ने जीत नहीं पाई इसलिए उनको क्षत्रिय की निशानी दे दी है। (मु०23.7.68 पृ०3 मध्य)

• तुम सभी क्षत्रिय हो ना, जो माया पर जीत पाते हो।......राम को बाण आदि दे दिए हैं। हिंसा तो त्रेता में होती नहीं। (तो कहाँ?) (मु०23.7.68पृ०3मध्य)

• रामचंद्र है, इनको भी सज़ाएँ खानी पड़ीं; क्योंकि नापास हुए। इसलिए इनको बाण दिखाते हैं। क्षत्रिय तो हम सब ही वॉरियर्स हैं ना। (मु०5.1.67 पृ०3 मध्यादि)

• बाप समझाते हैं– ऐसे नहीं कहेंगे रामचंद्र फेल हुआ। नहीं। (यज्ञ में) कोई बच्चे फेल हुए जो जाकर भविष्य में रामचंद्र बनते हैं। राम वा सीता त्रेता में थोड़े ही पढ़ते हैं जो कहें फेल हुए। यह भी समझ की बात है ना। कोई सुने रामचंद्र फेल हुए तो कहेंगे कहाँ पढ़ते थे? आगे जन्म में ऐसा पढ़कर यह पद पाया है। (मु०9.8.70 पृ०1 मध्यादि)

• राम–(सीता) को भी पहले ल०ना० का दास–दासी बनना पड़े; क्योंकि ल०ना० फुल पास हुए। वो फेल हुआ (यज्ञ में); इसलिए उनको क्षत्रिय कहते हैं। (मु०20.5.64 पृ०3 अंत)

• रामचन्द्र भी राजयोग सीखता था, सीखते–2 फेल हो गया; इसलिए क्षत्रिय नाम पड़ा। (मु०ता० 31.8.70 पृ०3 मध्यांत)

• राम फेल हुआ, 33 मार्क्स से तो चंद्रवंशी में चला गया। (मु०ता०14.10.72 पृ०2 अंत)

• चन्द्रवंशी राम को बाण आदि दिए हैं। वास्तव में ज्ञान बाण की बात है। वह नापास हुआ इसलिए निशानी दे दी है। (मु०ता०2.12.82 पृ०1 अंत)

प्रजापिता (साकार)

• ग्रेट–2 ग्रैंड फादर यह टाइटिल हो गया प्रजापिता ब्रह्मा का। ज़रूर ग्रैंड मदर, ग्रैंड चिल्ड्रेन भी होंगे। (मु०19.10.73 पृ०3 अंत)

• प्रजापिता को भी क्रियेटर कहते हैं। ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि पैदा होती है, इसलिए प्रजापिता अर्थात् मनुष्यों का पिता कहा जाता है। (मु०27.7.65 पृ०2 आदि)

• ब्राह्मण तब होंगे जब प्रजापिता सन्मुख होगा। अभी तुम सन्मुख हो। (मु०6.8.75 पृ०1 अंत)

• अभी तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बने हो। तुम जानते हो प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा स्वर्ग ले जाएँगे। (मु०18.4.73 पृ०4 मध्य)

• प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर चाहिए, यहाँ कल्प के संगम पर होना चाहिए तब तो ब्राह्मणों की नई सृष्टि रची जाए। (मु०16.3.73 पृ०3 मध्य) [मु०17.3.78 पृ०3 मध्य]

• व्यक्त प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। सूक्ष्मवतन में तो प्रजापिता नहीं होता है। प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ चाहिए। (मु०5.8.73 पृ०2 मध्यांत)

• ब्रह्माकुमारियों के आगे प्रजापिता अक्षर ज़रूर लिखना है। प्रजापिता कहने से बाप सिद्ध हो जाता है। हम प्रश्न ही पूछते हैं कि प्रजापिता से क्या सम्बंध है; क्योंकि ब्रह्मा नाम तो बहुतों के हैं। कोई फीमेल का

भी ब्रह्मा नाम है। प्रजापिता नाम तो किसका होता नहीं। इसलिए प्रजापिता अक्षर ज़रूरी है।
(मु०4.9.72 पृ०2 आदि)

• प्रजापिता ज़रूर यहाँ ही होगा। उनका अंतिम जन्म लेखराज है। वह तो प्रजापिता बन नहीं सकता। (मु०21.8.73 पृ०5 मध्यांत)

•यह तो जवाहरी था, यह कैसे प्रजापति हो सकता? (मु०28.7.72 पृ०4 अंत) [मु०29.7.77 पृ०3 अंत]

• प्रजापिता ब्रह्मा साधारण मनुष्य बहुत जन्मों के अंत में गरीब हुआ ना। इस समय है ही खादी के कपड़े। (मु०19.10.69 पृ०1 अंत)

• वरसा देने लिए ज़रूर ब्रह्मा तन में आवेंगे। यह प्रजापिता ब्रह्मा है। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ थोड़े ही प्रजा रचेंगे। हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ स्थूल में हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा भी स्थूल में है। यह राज़ बैठ समझो। (मु०4.11.72 पृ०2 आदि)

• पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इनमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अंत वाले साधारण मनुष्य में प्रवेश करता हूँ। पतित शरीर में आते हैं, सूक्ष्मवतनवासी पावन ब्रह्मा में नहीं आते हैं। (मु०4.11.65 पृ०1 आदि)

• ब्रह्मा को भी प्रजापिता कहते हैं। प्रजा माना ही मनुष्य सृष्टि। शिव है आत्माओं का बाप। दो बाप तो सभी को हैं; परंतु सर्व आत्माओं का बाप शिव है। (मु०11.11.71 पृ०1 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे हैं। कितना गृहस्थी है। यह है बेहद का गृहस्थ व्यवहार।
(मु०4.12.76 पृ०3 अंत)

• शिवबाबा भी है। इतने ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं तो ज़रूर अण्डरस्टुड प्रजापिता भी है। (मु०31.1.70 पृ०3 मध्य)

• ब्रह्मा नहीं शास्त्रों का सार सुनाता। वह कहाँ से सीखा? उनको भी बाप वा गुरू होगा ना। प्रजापिता तो ज़रूर मनुष्य होगा और यहाँ ही होगा। (मु०21.10.73 पृ०2 अंत)

• इतने ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं, ज़रूर प्रजापिता भी होगा। (मु०13.2.67 पृ०2 मध्य) [मु०31.3.75 पृ०3 अंत]

• ऐसे कहाँ भी लिखा हुआ नहीं है कि प्रजापिता ब्रह्मा सूक्ष्मवतनवासी है। सूक्ष्मवतन में थोड़े ही प्रजा होती है। प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ चाहिए ना। (मु०4.10.77 पृ०2 मध्यांत)

• बाप प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमार–कुमारियों को समझा रहे हैं, शूद्रकुमारियों को नहीं। (मु०14.6.72 पृ०1 मध्य)

• पहले–2 जिस द्वारा रचना रचते हैं उनको कहा जाता है प्रजापिता ब्रह्मा। वह है ग्रेट–2 ग्रैंड फादर। शिवबाबा को ग्रेट–2 ग्रैंड फादर नहीं कहेंगे। (मु०3.5.72 पृ०1 अंत, 2 आदि)

• प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं; परंतु यथार्थ रीति नहीं जानते। ब्रह्मा किसका बच्चा है? तुम कहेंगे परमपिता परमात्मा शिव ने उनको एडॉप्ट किया है। यह तो शरीरधारी है ना। ईश्वर के(की) औलाद सभी आत्माएँ हैं। फिर शरीर मिलता है तो प्रजापिता ब्रह्मा की एडॉप्शन कहते हैं। वह एडॉप्शन नहीं है। परमपिता परमात्मा ने एडॉप्ट नहीं किया। तुमको एडॉप्ट किया है। तुम हो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। शिवबाबा एडॉप्ट नहीं करते हैं। (मु०11.1.71 पृ०3 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे वह भी ज़रूर ब्रह्मा के साथ होंगे। ब्राह्मण कुल भी तो ज़रूर चाहिए। इसको कहा जाता है सर्वोत्तम ऊँच ते ऊँच ब्राह्मण कुल। (मु०4.6.66 पृ०2 मध्यांत)

• प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा आकर सर्व की सद्गति करते हैं। उनको ही सब पुकारते हैं। देखते हैं ना।
(मु०6.3.76 पृ०1 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ हैं। तुमको साक्षात्कार होता है व्यक्त ब्रह्मा पवित्र हो जाते हैं तो वहाँ फिर सम्पूर्ण अव्यक्त रूप दिखाई पड़ता है। (मु०2.4.77 पृ०2 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ हैं। तुमको साक्षात्कार होता है व्यक्त ब्रह्मा पवित्र हो जाते हैं तो वहाँ फिर सम्पूर्ण रूप दिखाई पड़ता है। (मु०31.3.72 पृ०2 अंत)

• यह प्रजापिता ब्रह्मा जो अब व्यक्त है, वह जब सम्पूर्ण बन जाते, पाप कट जाते, तब फरिश्ता बन जाता है। (मु०21.1.73 पृ०2 मध्यादि) डबल प्वाइंट है

• प्रजापिता ब्रह्मा जो होकर गए हैं वह इस समय प्रेजेंट हैं। (मु०11.3.73 पृ०1 आदि)

• शिव को वा कृष्ण को प्रजापिता नहीं कहते। यह तो कृष्ण पर झूठा कलंक लगाया है कि उनको 16,108 रानियाँ थीं। यह तो प्रजापिता ब्रह्मा इतने बच्चे और बच्चियाँ पैदा करते हैं।(मु०3.3.73 पृ०2मध्य) [मु०3.3.78 पृ०2 मध्यांत]

• अब प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य सृष्टि में है। (मु०ता० 7.12.73 पृ०2 अंत)

• यह भी नहीं समझते हैं कि ब्रह्मा ज़रूर साकार में होना चाहिए जिस द्वारा परमपिता परमात्मा सृष्टि रचते हैं। (मु०ता० 30.12.98 पृ०2 मध्य)

•प्रजापिता ब्रह्मा का निवास स्थान परमधाम को नहीं कहेंगे। वो तो यहाँ पर साकारी दुनिया में होगा ना। सूक्ष्मवतन में भी नहीं होता है। प्रजा तो है ही स्थूलवतन में। (मु०26.12.67 पृ०2आदि) [मु०ता० 9.12.00 पृ०2 अंत]

• आत्माएँ हैं शिवबाबा के बच्चे और फिर साकार में हम बहन–भाई सभी हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। यह है सभी का ग्रेट–2 ग्रैंड फादर। ...शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा– आत्माओं का बाप और सभी मनुष्य मात्र का बाप। (मु०ता० 13.1.70 पृ०1 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट–2 ग्रैंड फादर। मनुष्य सृष्टि का बड़ा तो ब्रह्मा हो गया ना। शिव को ऐसे नहीं कहेंगे, उनको सिर्फ फादर कहेंगे। ...ज़रूर ग्रैंड मदर, ग्रैंड चिल्ड्रेन भी होंगे। (मु०ता०19.10.73 पृ०3 अंत)

• यह भी समझते हैं प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर साकारी सृष्टि पर ही होगा। मूँझे हुए हैं। ... वह (साकार) है कर्मबंधन में, वह (अव्यक्त) है कर्मातीत। ... बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा जो मनुष्य था वही फिर फरिश्ता बनता है। (मु०ता० 30.1.68 पृ०1 मध्यांत, 2 आदि)

• प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ ही होगा ना। बहुत करके तो इस पर ही मूँझते हैं। (मु०ता० 15.10.69 पृ०1 मध्य)

• शिव है निराकारी बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप। अभी तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो। (मु०ता० 15.1.67 पृ०3 अंत)

• कई बच्चे बापदादा अर्थात् दोनों बाप के बजाए एक ही बाप द्वारा ख़ज़ाने के मालिक बनने के विधि को अपनाते हैं। इससे भी प्राप्ति से वंचित हो जाते हैं। हमारा निराकार से डायरैक्ट कनेक्शन है, ...साकार की क्या अवश्यकता है! लेकिन ऐसी चाबी खंडित चाबी बन जाती है। (अ०वा०14.10.81 पृ०58 आदि)

• त्रिमूर्ति अक्षर भी ज़रूर लिखना है। प्रजापिता अक्षर भी ज़रूरी है; क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों के हैं। प्रजापिता अक्षर लिखेंगे तो समझेंगे कि साकार में प्रजापिता ठहरा। सिर्फ ब्रह्मा लिखने पर सूक्ष्मवतन वाला समझ लेते हैं। (मु०ता० 16.10.69 पृ०2 मध्यादि)

फर्रुखाबादी बेगर टू प्रिंस

{देखिए प्रकरण 'बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)' में शुरुआत के छह प्वाइंट}

ब्रह्मा बड़ी माँ है

- तुम्हारी बड़ी मम्मी ब्रह्मा है; परंतु कई बच्चों ने पूरा नहीं पहचाना है। अभी अजुन पहचानते रहते हैं। (मु०1.5.73 पृ०2 आदि)
- भल सरस्वती है; परंतु वास्तव में सच्ची–2 मदर ब्रह्मपुत्रा है। ब्रह्मपुत्रा सबसे, सरस्वती से भी बड़ी है। तो ब्रह्मपुत्रा किसको रखेंगे। नाम रख दिया है ब्रह्मपुत्री। (मु०2.1.75 पृ०2 मध्यादि)
- बेहद के भी दो बाप हैं तो माँ भी ज़रूर दो होंगी। एक जगदम्बा माँ, दूसरी यह (ब्रह्मा) भी माता ठहरी। (मु०10.2.73 पृ०1 आदि)
- तुम मात–पिता ... तो माता यह सिद्ध हुई। वह बाप इसमें प्रवेश हो रचते हैं तो यह बूढ़ा प्रजापिता भी ठहरा, फिर माता भी बूढ़ी ठहरी। बूढ़े ही चाहिए ना। (मु०5.1.78 पृ०1 मध्यांत)
- तुम मात–पिता ... तो माता यह सिद्ध हुई। दो बाप इसमें प्रवेश हो रचते हैं तो यह बूढ़ा प्रजापिता भी ठहरा, फिर माता भी बूढ़ी ठहरी। बूढ़ी ही चाहिए ना। (मु०4.1.73 पृ०1 मध्यांत)
- यह सतगुरू सच बोलते हैं। वह झूठे गुरू तो आधे में ही छोड़ मर जाते हैं। वह थोड़े ही सद्गति देते हैं। मैं तो साथ ले जाऊँगा। कलियुगी गुरू ऐसे कह न सके। (मु०17.6.78 पृ०3 मध्यांत)
- सद्गति भी सभी की कर देते हैं प्रैक्टिकल में। ऐसे नहीं शिवबाबा चला जावेगा और हम यहाँ ही बैठे रहेंगे, फिर दूसरा गुरू करना पड़ेगा, नहीं। (मु०12.11.68 पृ०1 अंत)
- यह ब्रह्मा है एडॉप्टेड। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण। (मु०6.2.71 पृ०1 अंत)
- बहुत जन्मों के अंत में इनके शरीर को अपना रथ बनाया। एडॉप्ट करते हैं ना। स्त्री को भी एडॉप्ट करते हैं फिर पियर घर का नाम बदल कर ससुर के घर का नाम रख देते हैं। बाप ने भी इनमें प्रवेश किया तो इनका नाम बदल दिया। इनको एडॉप्ट करके जैसे कि घर वाली बना लिया। (मु०5.5.67 पृ०2 अंत) [मु०5.5.75 पृ०2 अंत]
- ब्रह्मा भी रचना है शिवबाबा की। (मु०26.6.70 पृ०1 आदि) [मु०26.6.75 पृ०1 आदि]
- पहले ब्राह्मण बनाते हैं। ब्रह्मा कहाँ से आया? ब्रह्मा को एडॉप्ट किया। जैसे स्त्री को एडॉप्ट किया जाता है, फिर बच्चे पैदा होते हैं। मैंने भी इनको एडॉप्ट किया। इनके मुखकमल से तुमको रचता हूँ। माता चाहिए ना। (मु०28.11.65 पृ०7 मध्यांत)
- यह ब्रह्मा माता हो गई ....परन्तु फिर माताओं को सम्भालने लिए माता चाहिए। इसलिए एडॉप्टेड गोद ली बच्ची ब्रह्माकुमारी सरस्वती। कितनी गुह्य बातें हैं! (मु०17.4.72 पृ०2 अंत)
- मुख से स्त्री को क्रियेट किया तो रचता हो गया। कहते हैं यह मेरी है। मैंने इनसे बच्चे पैदा किए हैं। (मु०1.10.75 पृ०1 अंत)
- ब्रह्मा कोई क्रियेटर नहीं है। (मु०5.3.73 पृ०1 मध्यादि)
- आप सोचते होंगे कि लोग पूछेंगे कि आपका ब्रह्मा बाबा सौ वर्ष से पहले ही चला गया? यह तो बहुत सहज प्रश्न है, कोई मुश्किल नहीं। सौ के नज़दीक ही तो आयु थी। यह जो सौ वर्ष कहे हुए हैं, यह गलत नहीं हैं। अगर कुछ रहा हुआ है तो आकार द्वारा पूरा करेंगे। सौ वर्ष ब्रह्मा की स्थापना का पार्ट है। वह तो सौ वर्ष पूरा होना ही है; लेकिन बीच में ब्रह्मा के बाद ब्राह्मणों का जो पार्ट है वह अब चलना है। (अ०वा०21.1.69 पृ०21 मध्य)
- फादर निराकार है, ज़रूर वर्सा देंगे तो यहाँ आना पड़े ना, जो अपना परिचय दे। तो ज़रूर इनको माता बनना पड़े। तो यह बड़ी माता हो गई। दादा है निराकार और दादी भी चाहिए तब मम्मा मिली। कितनी वण्डरफुल नॉलेज है। दादी तो कोई बन न सके। इनको ही कहा जावेगा; परन्तु दादी भी मेल हो गया; क्योंकि मुखवंशावली है ना। यह बड़ा वण्डरफुल है! (मु०12.8.73 पृ०3 मध्यांत)
- बाप तो खुद है फिर इन द्वारा एडॉप्ट करते हैं तो यह बड़ी माता हो गई। फिर पहले नम्बर में सरस्वती को एडॉप्ट किया है। बाप ने इनमें प्रवेश किया है। यह (मम्मा) तो एडॉप्ट है। ...तुम्हारे लिए तो

माता–पिता हैं। हमारे लिए तो पति भी हुआ तो पिता भी हुआ। प्रवेश कर अपनी बन्नी (स्त्री) भी मुझे बनाया है । (मु०20.10.73 पृ०2 मध्य)

• तुम मात–पिता... पीछे तुम कह सकते हो– बापदादा। यह तो मात–पिता में बाप आ जाता है; परंतु नहीं। ...रचना है तो माता ज़रूर चाहिए। अब माता पहले कौन है, यह है गुह्य ते गुह्य बात। ...प्रजापिता ब्रह्मा के साथ कोई प्रजा पत्नी भी चाहिए? नहीं। प्रजा पत्नी नहीं चाहिए; क्योंकि यह मुखवंशावली है। (मु०ता० 29.9.78 पृ०1 आदि)

• यह दादा मम्मी भी है। वह बाप तो अलग है। ...परंतु यह मेल होने कारण फिर माता मुकर्रर की जाती है। (मु०ता० 19.1.75 पृ०1 मध्यादि) [मु०ता० 17.1.00 पृ०1 अंत]

• प्रजापिता को भी पिता कहते हैं। तो माता कहाँ? ... यह प्रजापिता भी है तो माता भी है। ...तो यह (ब्रह्मा) माता बन जाती है। ...यह भी एडॉप्ट मदर है। वह है फादर। इसको फिर नंदीगण वा बैल भी दिखाते हैं। गाय को कब भी नहीं दिखाते हैं। (मु०ता० 5.12.71 पृ०1 मध्यांत)

• कहते हैं– तुम मात–पिता... तो यह (ब्रह्मा) माता हो गई। तो इन(के) साथ भी संबंध रखना पड़े। अगर इनसे प्यार गया तो खेल खलास। मात–पिता से गया तो वर्सा कैसे मिले? (मु०ता० 13.10.65 पृ०3 मध्य)

• अब प्रजापिता दोनों बाप ठहरा ना। ...बाप तो माता द्वारा एडॉप्ट करेंगे ना। ...वह है सरस्वती बेटी; परंतु बेटी द्वारा तो एडॉप्ट नहीं किया जाता है। ...उसने इसमें प्रवेश किया है, तब (ब्रह्मा को) खुद कहते हैं तुम हमारा बच्चा भी हो, बन्नी (पत्नी) भी हो। (मु०ता० 11.12.71 पृ०1 मध्यांत)

• बाप तो बाप है और यह (ब्रह्मा) तुम्हारी मम्मा है। कलश पहले इनको (ब्रह्मा को) मिलता है; परंतु सरस्वती की महिमा बढ़ाने के लिए उनको आगे रखा है। (मु०ता० 15.10.77 पृ०3 आदि)

{देखिए प्रकरण 'जगतपिता–जगदम्बा' में ऊपर से प्वा० नं० 18}

ब्रह्मा टेम्परारी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ

• बाबा सारा समय (संगम) इसमें नहीं रहते हैं। हाँ, यह उनका मुकर्रर रथ है। उनको हुसैन का रथ कहा जाता है। (मु०15.8.72 पृ०3 आदि)

• अकालमूर्त का रथ अथवा तख़्त खास मुकर्रर है। (मु०5.8.73 पृ०2 आदि) [मु०8.8.78 पृ०2 आदि]

• शिवबाबा का यह टेम्पररी रथ है। कहते हैं शिवबाबा को याद कर इनकी गोद में आओ, नहीं तो पाप लग जावेगा। (मु०25.6.66 पृ०3 मध्यांत)

• मैं भी टेम्पररी इस तन में आया हूँ। (मु०3.9.73 पृ०1 अंत)

• भल यह शरीर लिया हुआ है। वह भी टेम्पररी। 60 वर्ष तो नहीं लिया है ना। (मु०4.3.69 पृ०1 आदि)

• स्वयं भगवान के उस मुखकमल से सुनते हो। यह भगवान का लोन लिया हुआ मुख है ना, जिसको गऊ मुख भी कहते हैं। बड़ी माता है ना। (मु०28.5.70 पृ०1 मध्यांत)

•

• बाप कहते हैं मैं भी थोड़े समय के लिए लोन लेता हूँ। 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। (मु०26.10.68 पृ०2 मध्यादि)

•पुरुषों के लिए तो एक जूती गई तो दूसरी–तीसरी जूती ले लेंगे। शरीर को जूती कहा जाता है। शिवबाबा का भी यह लांग बूट है ना। (मु०21.6.74 पृ०3 मध्य) [मु०15.6.84 पृ०3 मध्य]

• यह जो ब्रह्मा है जिसमें बाप बैठ वर्सा दिलाते हैं, इनका भी शरीर छूट जावेगा। (मु०ता० 5.2.71 पृ०2 अंत, 3 आदि)

• मैं थोड़े समय के लिए इनमें प्रवेश करता हूँ। यह तो पुरानी जूती है। पुरुष की एक स्त्री मर जाती है तो कहते पुरानी जूती गई, अभी फिर नई लेते हैं। यह (ब्रह्मा) भी पुराना तन है ना। (मु०ता० 11.7.70 पृ०2 मध्यादि)

• यह तो शिवबाबा का रथ है ना। सारे वर्ल्ड को हैविन बनाने वाला है। (मु०ता० 11.1.75 पृ०3 मध्य)

• बाप सभी बातों का अनुभवी है। तब तो बाप ने भी उनको अपना रथ बनाया है। गरीबी का, साहूकारी का सभी में अनुभवी है। ड्रामा अनुसार यह एक ही रथ है। यह कब बदल नहीं सकता। (मु०ता० 29.7. 70 पृ०3 अंत.)

• शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा का रथ एक ही है तो ज़रूर शिवबाबा भी खेल तो सकते होंगे ना। (मु०ता० 13.10.68 पृ०3 आदि)

• शरीर छूटेगा तब जब बाप का रथ आकर लेंगे। (मु०रात्रि.क्ला.10.5.68 पृ०2 अंत)

• बंगाल, बिहार का ज़ोन तो श्रृंगार करना जानता है। ...साकार तन को ढूँढ़ा भी यहाँ से ही है। (अ०वा०1.2.79 पृ०258 अंत, 259 आदि)

• कहते हैं मैं इस रथ का लोन लेता हूँ। भागीरथ भी क्यों कहते हैं? क्योंकि बहुत भाग्यशाली रथ है। यही फिर विश्व का मालिक बनते हैं तो भागीरथ ठहरा ना। (मु०ता० 26.9.68 पृ०1 मध्य)

•यह रथ कायम ही रहता है। ... यह तो मुकर्रर है ड्रामा अनुसार। इनको कहा जाता है भाग्यशाली रथ। ... भाग्यशाली रथ एक कहा जाता है, जिसमें बाप आकर ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देते हैं, स्थापना का कार्य करते हैं। (मु०ता० 26.8.69 पृ०3 मध्य) [मु०ता० 11.9.85 पृ०3 मध्यादि]

गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं

• देखते हो बाबा ने जिसमें प्रवेश किया है उसमें भी ठाठ की कोई बात नहीं। कपड़े आदि सभी वही हैं। (मु०9.2.71 पृ०1 मध्यादि)

• बच्चे कहते हैं आज बाबा हमारे में आकर मुरली चला गया। क्या तुम्हारे शरीर पर कोई बोझ पड़ा? कुछ भी नहीं। कोई तकलीफ थोड़े ही होती है। (मु०7.5.73 पृ०1 मध्यांत)

• यह बाबा भी जानते हैं हमने यह अपना शरीर रूपी मकान किराया पर दिया है। ......ड्रामाप्लेननुसार उनको और कोई मकान लेना ही नहीं है। कल्प–2 यही मकान लेना पड़ता है। (मु०2.12.68 पृ०2 आदि)

• बाबा तो बड़ी सभाओं में नहीं बैठ समझावेंगे। (मु०4.9.73 पृ०2 मध्य)

• जैसे ब्राह्मणों को बुलाया जाता है, घोस्ट भी आकर प्रवेश करते हैं। तो दो आत्मा हुई ना! घोस्ट अपना कर्तव्य करते हैं तो उनका फिर पार्ट बंद हो जाता है। (मु०8.7.64 पृ०3 मध्य) [मु०12.7.73 पृ०3 मध्य]

• लाउडस्पीकर पर कब पढ़ाई होती है क्या? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे? लाउडस्पीकर पर रिस्पॉण्ड कैसे दे सकेंगे? इसलिए थोड़े–2 स्टूडेंट को पढ़ाते हैं। (मु०15.9.76 पृ०3 आदि)

• मैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा देवता में प्रवेश नहीं करता हूँ। मुझे तो यहाँ पतित को पावन बनाना है। मेरे द्वारा ही वो सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा पावन बना है। (मु०4.11.65 पृ०1 मध्यादि)

• ब्रह्मा नाम कब बदल नहीं सकता। ब्रह्मा द्वारा ही स्थापना करते हैं तो दूसरे के तन में थोड़े ही आवेंगे। अगर दूसरे में आवें तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। (मु०17.3.73 पृ०2 अंत)

• मेरे आने का पार्ट एक ही बार संगम पर है। ऐसे भी नहीं कि तुम्हारे बुलाने पर आता हूँ। जब मेरे आने का समय होता तो एक सेकेंड न ऊपर, न नीचे, एक्युरेट टाइम पर आता हूँ। मुझे ऑरगन्स ही कहाँ हैं जो तुम्हारी पुकार सुनूँगा। ... जब समय होता है तो आकर पतितों को पावन बनाता हूँ। ऐसे नहीं कि

तुम्हारी रड़ियाँ कोई भगवान सुनते हैं। (मु०5.12.71 पृ०3 मध्यादि) [मु०6.12.76 पृ०3 आदि]

- बाप आते भी रात्रि में हैं। कब आते हैं उसकी तिथि–तारीख कोई नहीं है। तिथि–तारीख उनकी होती है जो लौकिक जन्म लेते हैं। यह तो है पारलौकिक बाप। इनका लौकिक जन्म नहीं है। कृष्ण की तिथि–तारीख, समय आदि सभी देते हैं। इनको कहा जाता है दिव्य–जन्म। (मु०9.3.70 पृ०1 आदि)
- बाप कहते हैं ...ड्रामा प्लेन अनुसार जब आना होता है तो चेंज ज़रूर होती है। (मु०22.2.69 पृ०1 मध्यादि)
- ऐसे नहीं कि बाप–दादा का आवाहन कर रहे हैं। नहीं, बाबा का आवाहन तो कर ही नहीं सकते हैं। बाबा को तो आप ही आना है। (मु०12.4.71 पृ०1 आदि) [मु०12.4.76 पृ०1 आदि]
- ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और इसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ...... अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। (मु०17.3.73 पृ०2 अंत)
- मधुबन में बाप स्वयं दौड़ी पहन आता है। (बुलाने से नहीं) (अ०वा०5.9.77 पृ०3 मध्य)
- ब्रह्मा तो ठहरा उनका भाग्यशाली रथ। रथ द्वारा ही बाप वर्सा देते हैं। ब्रह्मा वर्सा देने वाला नहीं है, वह तो लेने वाला है। (मु०17.1.70 पृ०1 आदि)
- इनको भाग्यशाली रथ कहते हैं। जिसमें बाप बैठ तुम बच्चों को हीरे जैसा बनाते हैं। (मु०11.6.69 पृ०4 मध्यादि)
- नम्बरवन पूज्य यह है तो नम्बरवन पुजारी भी यह बना है। फिर उनका ही पार्ट है। यह मेरा मुकर्रर तन है। यह चेंज हो नहीं सकता। ऐसे नहीं अब दूसरे को चांस दियो। (मु०10.10.72 पृ०5 आदि)
- अब बाप है तब ही सारी सृष्टि का कल्याण होता है। यह है भाग्यशाली रथ। इनसे कितनी सर्विस होती है। (मु०16.2.67 पृ०3 अंत)
- बाबा का यह रथ है परमानेंट। ब्रह्मा चाहिए ना, जिससे ब्राह्मण रचा जाए। (मु०3.7.72 पृ०2 मध्यांत)
- भागीरथ भी मशहूर है। इन द्वारा बैठ ज्ञान सुनाते हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है। कल्प–2 इस भाग्यशाली रथ में आते हैं। यह भी तुम जानते हो। यह वही है जिनको श्यामसुंदर कहते हैं। श्रीकृष्ण सुन्दर से श्याम कैसे बनते हैं फिर श्याम के शरीर में कैसे बाप आकर प्रवेश करते हैं यह तुम समझते हो। (मु०25.5.70 पृ०3 मध्यांत)
- भागीरथ भी क्यों कहते हैं? क्योंकि बहुत भाग्यशाली रथ है। यही फिर विश्व का मालिक बनते हैं। तो भागीरथ ठहरा ना। सभी बात का अर्थ समझना चाहिए। (मु०26.9.68 पृ०1 मध्य)
- ब्रह्मा बोले ब्राह्मणों की वृद्धि तो यज्ञ समाप्ति तक होनी है; लेकिन साकारी सृष्टि में, साकारी रूप से मिलन मेला मनाने की विधि, वृद्धि के साथ–2 परिवर्तन तो होगी ना! लोन ली हुई वस्तु और अपनी वस्तु में अंतर तो होता ही है।......अपनी वस्तु को जैसे चाहे वैसे कार्य में लगाया जाता है। (अ०वा०5.4.83 पृ०118 मध्य)
- मुझे ही पतितों को पावन बनाने यहाँ आना पड़ता है। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा देता हूँ। इनका ही नाम है भागीरथ। तो ज़रूर इनमें प्रवेश करेंगे। (मु०17.10.69 पृ०2 मध्यांत)
- बाबा ही पतित–पावन है; परंतु निराकार है। तो ज़रूर साकार में आकर ही बच्चों को श्रीमत देंगे। बाप कहते हैं यह मेरा शरीर भी ड्रामा में मुकर्रर है। यह बदली हो नहीं सकता। (मु०5.12.71 पृ०3 आदि) [मु०6.12.76 पृ०2 अंत]
- मुझे ब्राह्मण ज़रूर चाहिए तो प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए ना। उनमें आकर प्रवेश करता हूँ। नहीं तो कैसे आऊँगा? मेरा यह रथ रिजर्व है। (मु०13.11.72 पृ०3 मध्य)

• और कोई भी आत्मा मेरे समान शरीर में आ नहीं सकती है। भल धर्म स्थापक जो आते हैं उनकी आत्मा भी प्रवेश करती है; परन्तु वह तो बात ही अलग है। (मु०8.10.68 पृ०1 अंत) [मु०8.10.74 पृ०1 अंत]

• इतना ऊँच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र ऋषि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही हैं सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आवे; परन्तु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे? बाप बैठ समझाते हैं कि मैं किसमें आता हूँ। मैं तो आता ही उसमें हूँ जो कि पूरे 84 जन्म लेते हैं, एक दिन भी कम नहीं। (मु०15.10.69 पृ०2 मध्य)

• शिवबाबा कहते हैं हम तुम बच्चों को सुनाते थे तो यह भी सुनता था। (मु०ता० 17.11.76 पृ०2 मध्यांत)

• बाप कहते हैं मैं भी बिन्दी हूँ। तुमको पता भी पड़ता नहीं जो मैं इसमें आकर बैठा हूँ। (मु०15.7.66 पृ०3 मध्य)

• यह भी नहीं जानते कि बाबा ने कब प्रवेश किया। ... बहुत ध्यान में जाते थे। ....वो कोई तिथि–तारीख, वेला नहीं निकाल सकते। कृष्ण को भी पूजते हैं ना। इनका रात्रि को जन्म दिखाते हैं। किस समय, कितने मिनट आदि सारा हिसाब निकालते हैं। (मु०ता० 4.6.66 पृ०2,3)

• रूह–रूहान करने मीठे–2 बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है। (अ०वा०ता० 23.1.69 पृ०16 मध्य)

• बाप अनायास ही आ जाते हैं। ढिंढोरा थोड़े ही पिटवाते हैं कि मैं आ रहा हूँ। अनायास ही आ जाते हैं। (मु०ता० 31.8.68 पृ०1 मध्यांत) [मु०ता० 21.8.84 पृ०1 अंत]

• बड़े–2 सभाओं में बाबा नहीं जा सकते। वह बच्चों का काम है। बच्चों से सवाल–जवाब करेंगे। (मु०ता० 12.10.72 पृ०2 अंत)

• कोई–2 में भूत आ जाता है। चर्ये–खर्ये बालक में भी कहेंगे शिवबाबा आया है, वह मुरली चलाते हैं। (मु०ता० 13.11.72 पृ०2 मध्यांत) [मु०ता० 15.11.87 पृ०2 मध्य]

• मैं आऊँगा तो ज़रूर अपने ही समय पर। ....जब चाहूँ तब आऊँ, नहीं। (मु०ता० 20.2.68 पृ०3 आदि)

• मैं खुद डायरैक्ट आया हूँ। (मु०ता० 25.5.69 पृ०2 आदि)

गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप

• जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं, कुछ समझते हैं, वह छिपी नहीं रहती। (मु०9.2.68 पृ०3 मध्यांत) [मु०6.2.74 पृ०3 मध्यांत]

• वह तो अपने टाइम पर अपनी सर्विस पर आए खड़े हो जाते हैं। किसको भी पता नहीं पड़ता है। कल्प पहले भी तुम बच्चों को मालूम था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कौरवों को पता नहीं था। अभी भी ऐसे हैं। (मु०5.2.68 पृ०1 आदि)

• आजकल कई आत्माएँ समझती हैं कि कोई स्प्रिचुअल लाइट गुप्त रूप में अपना कार्य कर रही है; लेकिन ये लाइट कहाँ से ये कार्य कर रही है वो जान नहीं सकते। कोई है, यहाँ तक टचिंग होनी शुरू हो गई है। आखिर ढूँढ़ते–2 स्थान पर पहुँच ही जाएँगे। (अ०वा०10.11.87 पृ०124 अंत)

• गुप्त वेश में शांतिधाम–सुखधाम की स्थापना हो रही है। (मु०20.9.77 पृ०2 आदि)

• बाबा हमेशा कहते हैं स्टेशन पर कोई भी नहीं आवे, कोई हंगामा नहीं। बाप कहते हैं मुझे गुप्त ही रहने दो, इसमें बड़ा मज़ा है। (मु०ता०25.9.72 पृ०1 आदि) [मु०ता०22.9.07 पृ०1 मध्य]

- ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में कार्य करा रहा है। अलग नहीं है, साथ ही है, सिर्फ गुप्त रूप में करा रहा है। (अ०वा०ता० 18.1.99 पृ०42 मध्य)
- अभी तुम ही जानते हो बाबा हमको फिर से पढ़ाते हैं और बाप गुप्त वेश में पराए देश में आए हैं। .... बाबा भी गुप्त है। (मु०ता० 3.4.69 पृ०1 अंत)
- बाप भी गुप्त है, दादा भी गुप्त है। ...बच्चे भी गुप्त हैं। (मु०12.6.72 पृ०1 आदि)

शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो

- इस सृष्टि में हट्टी (सदा) कायम कोई चीज़ है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। बाकी तो सबको नीचे आना ही है। (मु०2.1.75 पृ०3 अंत)
- रावण है दुश्मन (दुर्जन)। शिवबाबा है सज्जन। (मु०5.1.68 पृ०2 मध्यांत)
- शिवबाबा को ही रुद्र कहा जाता है। रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला निकली तो रुद्र भगवान हुआ। (मु०26.1.70 पृ०2 आदि)
- शिव पर भी झूठ कलंक लगाए हैं। धतूरा खाता था। कितनी ग्लानि करते हैं। ऐसे मूर्ख बुद्धि मनुष्यों का विनाश हो जावेगा और जो तुम सुज्जान बनते हो उनको बादशाही मिलेगी। (मु०4.11.78 पृ०3 मध्य)
- बरोबर भारत स्वर्ग था। अभी नर्क है। एक/दो को डसते रहते हैं। शास्त्रों में दिखाया है ना– बिच्छू–टिंडन पैदा हुए। अभी सभी हैं शिव के(की) औलाद; परंतु इस समय उन्हों के वीर्य से बिच्छू–टिंडन पैदा होते हैं। (मु०28.4.72 पृ०2 मध्य)
- मेरे नाम तो ढेर रख दिए हैं। कहते हैं हर–हर महादेव। सबके दुःख काटने वाला। वह भी मैं ही हूँ। शंकर नहीं है। (मु०4.11.78 पृ०2 मध्यादि)
- वास्तव में सबसे पुराना तो शिवबाबा है ना; परंतु किसको पता नहीं। महिमा सारी शिवबाबा की है। वो चीज़ तो मिल न सके। पुराने ते पुरानी चीज़ कौन–सी हुई? नम्बरवन शिवबाबा। (मु०26.5.65 पृ०3 मध्यांत)
- मैं तो तुमको स्वर्ग की बादशाही देता हूँ। वहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता। यहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता। गाते हैं ना बम–2 महादेव भर दे झोली; परंतु वह कब और कैसे झोली भरते हैं यह कोई नहीं जानते। झोली भरी थी ज़रूर। चैतन्य में थे। (मु०12.5.72 पृ०2 मध्यांत)
- तुमको दैवी फूल मिसल बनाकर पार ले जावेंगे, फिर स्वर्ग में तुम कब दुःख न देखेंगे। इसलिए उनको कहते ही हैं दुःख हर्ता–सुख कर्ता। हर–2 महादेव कहते हैं न। महादेव शिव को ही कहेंगे। वह है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी बाप। (मु०6.11.73 पृ०5 मध्य)
- सबसे जास्ती गाली खाने वाला है शिवबाबा नं० वन। सेकेंड नम्बर में गाली खाने वाला है ब्रह्मा। (मु०24.12.73 पृ०2 मध्यादि)
- वास्तव में मंदिर होना चाहिए एक शिवबाबा का। वही निमित्त बना हुआ है पतितों को पावन बनाने के लिए। (मु०1.8.73 पृ०1 अंत)
- मैं तुम बच्चों (के) पास कितना अच्छा मेहमान हूँ थोड़े दिन का। सुप्रीम बाप, परमपिता, सारे विश्व का मालिक तुम्हारे पास मेहमान है। (मु०6.11.68 पृ०3 अंत)
- यह ब्रह्मा भी पुरुषार्थी है। शिवबाबा है पुरुषार्थी। शिवबाबा पुरुषार्थ कराने वाला है। (मु०27.8.73 पृ०1 अंत)
- सभी जानते हैं परमात्मा की जीवन कहानी। सो भी एक जन्म की नहीं। शिवबाबा के कितने जन्मों की बायोग्राफी है तुमको मालूम है। (मु०11.6.72 पृ०1 मध्यादि)

• ऊँच ते ऊँच शिवबाबा और ब्रह्मा दोनों हाइएस्ट हैं। (मु०13.6.70 पृ०3 अंत)

• इस एक आत्मा का ही नाम शिव है। और सभी आत्माओं का अपना–2 शरीर है। शरीर का नाम पड़ता है। परमात्मा के शरीर का नाम नहीं है। ....उनकी (शिव) आत्मा का ही नाम शिव है। वह कब बदलता नहीं। शरीर बदलते हैं तो नाम भी बदल जाते हैं। (जैसे ब्रह्मा से शंकर, फिर विष्णु।) (मु०21.1.70 पृ०2 आदि, 24.1.75 पृ०2 आदि)

• बाप कहते हैं मैं खुद तुमको वापस ले जाने आया हूँ। मुझे काल–महाकाल कहते हैं। मौत सामने खड़ा है। इसलिए अब तुम मेरी मत पर चलो और पद भी ऊँच लो। जीवनमुक्ति में भी फिर पद है। मुक्ति में भी धर्म स्थापक आदि सभी बैठ जावेंगे। (मु०1.3.72 पृ०2 अंत)

• हीरे जैसा तो एक ही शिवबाबा है जिसकी जयंती मनाई जाती है। पूछना चाहिए शिवबाबा ने क्या किया? वह तो आकर पतितों को पावन बनाते हैं। (मु०24.3.69 पृ०3 अंत)

• तुम यहाँ पुराने घर में रहते हो, फिर स्वर्ग में जाकर अपने घर में रहेंगे। शिवबाबा कहते हैं मैं तो नहीं रहूँगा। (मु०ता० 24.5.64 पृ०1 मध्य)

जगतपिता-जगदम्बा

• पिता है तो ज़रूर माता भी (साकार में) होनी चाहिए, नहीं तो बाप क्रियेट कैसे करें? (मु०20.10.73 पृ०1 मध्य)

• बाप आकर ज्ञान अमृत का कलश इन माताओं को देते हैं कि मनुष्य को देवता बनावें। लक्ष्मी को नहीं दिया है। इस समय यह है जगतअम्बा। (मु०1.1.84 पृ०2 अंत)

• मन्मनाभव, मेरे बच्चे बनो। वह तो प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा ही कह सकते। (मु०20.3.73 पृ०2 मध्य)

• माताएँ तो बहुत हैं। एक का करके नाम बाला हो जाता है। तुम तो शक्ति सेना हो। शक्ति डिनायस्टी नहीं कहेंगे। शक्ति सेना की मुख्य हुई जगदम्बा। काली, सरस्वती, जगदम्बा एक के ही नाम हैं। बाकी चण्डिका आदि उल्टे–सुल्टे नाम भी बहुत रख दिए हैं। (मु०3.3.73 पृ०3 आदि)

•यहाँ तो तुम जानते हो कि यह जगदम्बा–जगतपिता जो स्थापना अर्थ निमित्त हैं, यही फिर पालनकर्ता विष्णुलोक में बनेंगे। (मु०7.3.73 पृ०2 आदि) [मु०8.3.78 पृ०1 अंत, 2 आदि]

•जगतअम्बा को देवता नहीं कहेंगे, जगतअम्बा जब सम्पूर्ण बन जाती है तो उसके बाद देवता बनती है। (मु०5.10.73 पृ०2 मध्य) [मु०6.10.78 पृ०1 अंत]

• सभी की माता है जगदम्बा; परंतु सारा जगत तो पहचान नहीं सकता है। यह भारत में ही महिमा है जगदम्बा की। (मु०6.8.73 पृ०1 आदि)

•जो होकर जाते हैं उनकी महिमा गाई जाती है।... जिसको जगतअम्बा कहते हैं वो अपने बच्चों के सम्मुख बैठी है। भक्तिमार्ग में तो ऐसे ही गाते रहते हैं। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला है अर्थात् जगतअम्बा का परिचय मिला है। जगतअम्बा के नाम से भी भिन्न–2 अनेक चित्र बनाए हैं। वास्तव में है तो एक ही जगतअम्बा। उनको ही काली कहो, सरस्वती कहो, दुर्गा कहो। ढेर नाम रखने से मनुष्य मूँझ गए हैं। तुम जानते हो अम्बा तो एक होनी चाहिए। उनका नाम–रूप भी एक ही होना चाहिए। (मु०15.10.73 पृ०1 आदि) [मु०15.10.78 पृ०1 आदि]

• बाप है तो माँ ज़रूर (साकार में) है। भारत में जगतअम्बा की जीवन कहानी को कोई जानते नहीं हैं। . ...जगतअम्बा के मंदिर भी हैं। यह थी जबकि नई दुनिया की रचना हुई होगी। (मु०5.10.73 पृ०1 आदि)

•माताएँ तो ढेर हैं; परंतु मुख्य है जगतअम्बा। उनको अब कोई भी नहीं जानते। सन्यासी लोग कभी भी जगतअम्बा के पास नहीं जाएँगे; क्योंकि वह तो माताओं के तिरस्कारी हैं ना। वास्तव में उन्हों का भी उद्धार

करने वाली जगतअम्बा और उनकी सेना है। कितना फर्क है! वह समझते स्त्री नर्क का द्वार है तो फिर जगदम्बा के पास भी नहीं जाएँगे। (मु०30.12.83 पृ०1 मध्यादि) [मु०20.12.88 पृ०1 मध्य]

• वास्तव में स्वर्ग का द्वार खोलती है यह जगतअम्बा, फिर पहले–2 वह खुद ही जगत की मालिक बनती है। तो ज़रूर माँ के साथ तुम बच्चे भी हो। उन (जगतपिता–जगदम्बा) का ही गायन है तुम मात–पिता...। (मु०30.12.83 पृ०1 मध्यादि)

•गीता को ही माई–बाप कहते हैं। बाकी सभी शास्त्र हैं रचना। और शास्त्रों, वेदों को माता नहीं कहेंगे। माता के साथ पिता भी है। पिता ने ही गाई हुई है। (मु०9.7.69 पृ०3 मध्य) [मु०21.7.90 पृ०3 मध्य]

• जगतअम्बा का ऐसा भयानक रूप नहीं होता, न ऐसी बलि लेती है। उनमें भी एक वैष्णों देवी, दूसरी होती है माँसाहारी। ...अब जो माँसाहारी है वह वैष्णों बनती है।... जगतअम्बा जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है वह सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली है। तो वही ....सच्ची–2 वैष्णों देवी है। हाँ, उसके पिछले जन्म (में) ज़रूर मूत पलीती माँसाहारी थी। ...... लक्ष्मी का मंदिर बड़ा या वैष्णों देवी का बड़ा? ...महिमा किसकी बड़ी? वह है ज्ञान–ज्ञानेश्वरी। लक्ष्मी को ज्ञान–ज्ञानेश्वरी नहीं कहेंगे। इसलिए महिमा जगतअम्बा की है। मेला भी जगतअम्बा का लगता है। लक्ष्मी को दीपमाला पर बुलाते हैं। <u>बाकी जगतअम्बा का मेला मशहूर है।</u> (मु०18.3.87 पृ०1 मध्य, 3 अंत)

• मुसलमान भी समझते हैं भगवान ने आदम–बीबी द्वारा रचना रची है। (मु०4.3.83 पृ०2 अंत)

• मुख्य ज़रूर हीरो–हीरोइन की जोड़ी होती है।...... मात–पिता जोड़ी है ना। यह है ही जोड़ी का खेल प्रवृत्तिमार्ग का; परंतु शिवबाबा की वंडरफुल जोड़ी है। ... ब्रह्मा–सरस्वती कह देते हैं; परंतु वह कोई जोड़ी है नहीं। वास्तव में शंकर–पार्वती की भी जोड़ी नहीं है। (मु०9.3.73 पृ०1 आदि)

• वह है सभी की मनोकामनाएँ पूरी करने वाली। (मु०23.2.73 पृ०2 आदि)

• पहले–2 तो मैं ब्रह्मा को रचता हूँ फिर जगदम्बा रची जाती है। (मु०23.2.73 पृ०2 आदि)

• इनके मुख से तुमको जन्म देता हूँ।......... जगदम्बा सरस्वती जिसको कहते हैं वह तो ब्रह्मा की बेटी मुखवंशावली गाई जाती है। अब माता उनको कहें वा उनको(इनको)? मूल(असुल) रीयलिटी में यह (साकार ब्रह्मा) माता है; परंतु तन पुरुष का है तो माताओं के चार्ज में उनको(इनको) कैसे रखा जाए? इसलिए फिर जगदम्बा निमित्त बनी हुई है। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर इसको(इनको) एडॉप्ट करता हूँ। (मु०19.5.73 पृ०2 मध्यांत)

• कहते हैं– तुम मात–पिता... बरोबर मात–पिता प्रैक्टिकल में अब हैं। (मु०ता० 23.10.72 पृ०3 मध्य)

• हम जगदम्बा के बच्चे हैं। जगदम्बा नर से नारायण बनाने का कर्तव्य करती है। (मु०ता०15.3.73 पृ०2 आदि)

• अब तुम उस मात–पिता के साथ कुटुंब में बैठे हो। श्रीकृष्ण को तो मात–पिता कह नहीं सकते। भल उनके साथ राधे हो तो भी उनको मात–पिता नहीं कहेंगे; क्योंकि वह तो प्रिन्स–प्रिन्सेज़ हैं। (मु०ता० 12.1.78 पृ०1 आदि)

• भारत में कुमारियों की बहुत मान्यता है। ...जगदम्बा भी कुमारी है ना। कुमारी को जगदम्बा कहना इसका भी अर्थ चाहिए ना। जगदम्बा है तो जगतपिता भी चाहिए। (मु०ता०17.8.73 पृ०1 अंत, 2 आदि)

• दिखाते हैं ज्ञान अमृत का कलश लक्ष्मी के सिर पर रखा है। वास्तव में कलश रखा है अम्बा पर, जो फिर लक्ष्मी बनती है। (मु०7.2.76 पृ०3 आदि)

• सबसे लकी सितारा जगत अंबा हैं। सम्भालने के लिए मुख्य हैं। इसलिए इन पर कलश रहता है और यह (ब्रह्मा) तो हो गया ब्रह्म पुत्रा मेल के रूप में। ...सरस्वती को ही जगत अंबा कहा जाए। इस मेल को तो जगत अंबा नहीं कहेंगे। (मु०ता० 29.9.78 पृ०1 मध्य)

• वही मात–पिता आकर सुख देते हैं। एडम और ईव तो मशहूर हैं। (मु०ता० 21.11.73 पृ०1 अंत)

• बच्चे समझ सकते हैं आदम–बीबी वास्तव में यह है। बीबी सो आदम है। (मु०ता० 29.9.78 पृ०2 मध्यादि)

• पुकारते भी हैं– तुम मात–पिता... परंतु उसका अर्थ तो कोई भी समझते नहीं हैं। निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं। (मु०ता० 26.2.67 पृ०1 आदि.)

• अभी तुम जानते हो जगदम्बा ही लक्ष्मी बनती है, फिर लक्ष्मी ही 84 जन्म ले जगदम्बा बनती है। यह कुल है ना। ब्रह्मा का कुल। (मु०ता० 3.2.77 पृ०3 आदि)

•ज्ञान सूर्य तो है बाप। फिर माता चाहिए ज्ञान चंद्रमा। तो जिस तन में प्रवेश करते हैं वह हो गई ज्ञान चंद्रमा माता। बाकी सभी हैं बच्चे, लकी सितारे। इस हिसाब से जगदंबा भी लकी स्टार हो गई; क्योंकि सभी बच्चे ठहरे ना। (मु०ता० 31.1.73 पृ०2 मध्यादि) [मु०ता० 7.1.03 पृ०2 अंत]

•जगत अंबा महावीरनी है ना। आदि देव की बेटी सरस्वती है। (मु०ता० 28.9.92 पृ०3 आदि) [मु०ता० 25.9.07 पृ०3 अंत]

• यहाँ तुम किसके सामने बैठे हो? डबल बाप और माँ। वहाँ तो ऐसे नहीं हैं। तुम जानते हो बेहद का बाप भी है। ... मम्मा भी रहती, बड़ी मम्मा कहो, छोटी मम्मा कहो। इतने सब संबंध हो जाते हैं। (मु०30.4.68 पृ०1 आदि)

•अब बाप माताओं द्वारा स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। हैं तो पुरुष भी। माता जन्म देती है तो उनको पुरुष से इज़ाफ़ा जास्ती मिलता है। (मु०ता० 10.2.69 पृ०3 मध्यादि) [मु०ता० 7.1.04 पृ०3 अंत]

• शिव भगवानुवाच– माताएँ स्वर्ग का द्वार खोलती हैं। ...इसलिए 'वंदे मातरम्' गाया जाता है। वंदे मातरम् तो अंडरस्टुड पिता भी है। बाप माताओं की महिमा को बढ़ाते हैं। पहले लक्ष्मी, पीछे नारायण। यहाँ फिर पहले मिस्टर, पीछे मिसेज़। (मु०ता० 10.6.69 पृ०2 अंत)

• जगदंबा....का ठाँव है यह स्थूल सृष्टि। यह भी सभी जानते हैं जगदंबा तो यहाँ की रहने वाली होगी। जगत माना मनुष्य सृष्टि। (मु०20.2.72पृ०1आदि)

•महालक्ष्मी की भी पूजा करते हैं। जगतअंबा से कब धन नहीं माँगते। ... यहाँ तो तुम जगदंबा से वर्सा ले रहे हो परमपिता परमात्मा शिव द्वारा। ... जगतअंबा का कितना मेला लगता है, ब्रह्मा का इतना नहीं। ...... देवताएँ के मंदिर बहुत हैं; क्योंकि इस समय तुम्हारी महिमा है। (मु०14.5.70 पृ०3 मध्यादि) [मु०4.5.00 पृ०3 मध्य]

• जगदंबा की महिमा है। एक तो नहीं है, तुम सभी ...ब्राह्मण कुल की पालना करती हो। ...चंडिका देवी का भी मेला लगता है।(मु० 22.8.73 पृ०1 मध्यादि)

• जगदंबा है तो बच्चे भी साथ होंगे। (मु०ता० 22.8.73 पृ०3 अंत)

• गीता है माँ–बाप। गीता से ही राजयोग का व स्वर्ग की राजाई का वर्सा मिलता है। (मु०ता० 22.6.73 पृ०2 अंत)

• शिव के साथ–2 गीता का भी जन्म होता है। (मु०ता० 23.7.71 पृ०3 आदि)

• शिवजयन्ती फिर गीता जयन्ती, फिर ना० जयन्ती।(मु०26.8.69 पृ०2 मध्य)

• मुख्य है गीता जिससे ब्राह्मण, सूर्यवंशी, चंद्रवंशी धर्म की स्थापना हुई।
(मु०ता० 28.9.92 पृ०1 अंत)

• देहली पर सबको चढ़ाई करनी है– देहली की धरणी को प्रणाम ज़रूर करना है। ...देहली के तरफ सभी की नज़र है। बाप की भी नज़र है, तो सर्व की भी नज़र है। (अ०वा० 26.12.78 पृ०155 आदि–अंत)

• बाप बैठ समझाते हैं दिल्ली में सभी धर्मों की कॉन्फ्रेंस होती है।(मु०1.1.72 पृ०2अंत)

• रावण–राज्य में भी दिल्ली कैपिटल है, राम–राज्य में भी दिल्ली कैपिटल रहती है। (मु०ता० 5.2.71 पृ०2 मध्यादि)

याद किसको करें, किसको नहीं

- बाप कहते हैं कि तुम इन (ब्रह्मा) के शरीर को भी याद न करो। शरीर को याद करने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकते। (मु०27.11.77 पृ०3 मध्यांत)
- इस मम्मा–बाबा को भी याद न करना है। इनको याद करना यह जमा न होगा। (मु०10.11.78 पृ०2 अंत)
- ब्रह्मा को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। कोई न कोई पाप हो जावेगा। इसलिए उनका फोटो भी न रखो। (मु०17.5.71 पृ०4 मध्य)
- अगर इस देहधारी को तुम याद करते हो वह तो कॉमन हो जाता है। बाप कहते हैं कब भी देहधारी में तुमको लटकना नहीं है। (मु०6.11.77 पृ०1 आदि)
- पांडवों ने बरोबर राज्य लिया; परंतु सुप्रीम पण्डे साथ योग लगाया तब विकर्म विनाश हुए और दूसरे जन्म में राजाई पद पाया। (मु०2.1.74 पृ०2 मध्य)
- एक शिवबाबा को याद करना है। वर्सा उनसे मिलना है। माता से वर्सा मिल न सके। माता से जन्म लेते हैं, याद पिता को करना है। इस ब्रह्मा माता को भी उनके पास जाना है। इनकी आत्मा भी तुम्हारे मिसल पुरुषार्थ करती है। (मु०9.1.73 पृ०3 अंत)
- कोई भी चित्रों का सुमिरण न करना है। यह शिव का भी जो चित्र है उनका भी ध्यान नहीं करना है; क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं। (मु०2.3.73 पृ०2 अंत)
- शिवबाबा ऐसे नहीं कहते कि ब्रह्मा को याद न करो। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा? बाप कहते हैं मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो। इसलिए तुम बाप और दादा दोनों को याद करते हो। (मु०23.12.68 पृ०3 मध्य)
- बिंदी याद न पड़ती है तो अच्छा घर तो याद पड़ता है ना। शांतिधाम और वह है सुखधाम। (मु०4.9.71 पृ०3 अंत)
- खत्म होने वाली चीज़ को याद नहीं किया जाता है। नया मकान बनता है तो पुराने (ब्रह्मा तन) से दिल हट जाती है। यह फिर है बेहद की बात। (मु०27.3.71 पृ०2 आदि)
- विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जाएँगे। अगर सिर्फ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आए। (अ०वा०18.1.70 पृ०166 आदि)
- ज्ञान तो पूरा है नहीं। ब्रह्मा को याद करने से कोई पाप तो कटते ही नहीं, फिर गृहस्थियों पास ही जाकर जन्म लेते हैं। गृहस्थी पास जन्म ज़रूर लेना ही पड़े। (मु०11.10.68 पृ०2 आदि) [मु०11.10.74 पृ०2 आदि]
- ज्ञान ब्रह्मपुत्रा वा सरस्वती को भी सुनाया ज्ञान सागर ने। बलिहारी उनकी है। याद उनको करना है। ऐसे नहीं मम्मा–बाबा में मोह रखना है। तुमको देही–अभिमानी बनना है। (मु०6.8.73 पृ०4 अंत)
- परमपिता परमात्मा हमको सम्मुख बैठ नॉलेज देते हैं। उस बाप की ही अव्यभिचारी याद रहनी है। और कोई के नाम–रूप की याद नहीं रहनी है। (मु०4.8.72 पृ०1 आदि)
- अगर ब्रह्मा देहधारी की पूजा करते हैं। वह भी रॉंग है। (मु०29.9.77 पृ०1 मध्य)
- इस दादा को भी याद करने से पेट नहीं भरेगा। पीठ से पेट लग जावेगा। (मु०2.10.75 पृ०2 मध्य)
- अच्छा, बाप याद नहीं पड़ता है, टीचर को याद करो। टीचर कब भूलेगा क्या? (मु०15.1.73 पृ०1 अंत)

• सवेरे उठकर यह सुमिरण करना चाहिए। साजन जो खारे से पार ले जाते हैं उनको याद करना है। (मु०6.11.73 पृ०5 मध्य)

• दादा को कब भी याद न करना है। इन दादा द्वारा बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। अगर इस दादा को याद करेंगे तो एक भी विकर्म विनाश नहीं होगा, और ही बनेंगे। 5 विकार तुम्हारे में होंगे तो विकारी बन जावेंगे। मम्मा को भी याद नहीं करना है। (मु०7.2.70 पृ०2 मध्यादि)

• इस शरीर में बैठ कहते हैं– मामेकम् याद करो। (मु०ता० 21.8.73 पृ०3 मध्यादि)

•तुम .... राम को याद करो तो माला में पिरोने लायक बनो। (मु०20.2.72 पृ०3 आदि)

• अब तो सिर्फ तुमको एक्युरेट बाबा को याद करना है।(मु०2.01.98पृ०3अंत)

• अब तुमको तो माला फेरनी नहीं है। सिर्फ बाप को याद करना है एक्युरेट। (मु०23.12.77 पृ०3 मध्यादि)

•यह बाबा उनको याद करेंगे तो कहेंगे– ओ बाबा! हैं दोनों बाबा। राइट अक्षर बाप ही है। वह भी फादर, वह भी फादर। (मु०ता० 15.9.76 पृ०1 आदि) [मु०ता० 2.10.01 पृ०1 मध्य]

• बाप समझाते हैं– बच्चे, एक ही अल्फ को याद करना है। अल्फ माना बाबा। (मु०ता० 22.7.68 पृ०1 मध्यांत)

• अब तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो। ... इसमें मुख से कुछ बोलना भी नहीं है। अंदर में सिर्फ याद रहे– बाबा आया हुआ है लेने लिए। (मु०ता० 18.11.70 पृ०1 आदि)

• उनको याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बीच में यह भी है। (मु०7.7.70 पृ०3 आदि)

•जबकि बाप को याद करते हो तो ब्रह्मा को भी याद करना पड़े। (मु०ता० 16.3.68 पृ०1 मध्यांत)[मु०ता० 18.3.99 पृ०1 अंत]

• माशूक परमात्मा...अब आए हैं। कहते हैं अगर तुम बच्चों को मेरे से मिलना है तो निरन्तर मुझ एक को याद करो। (मु०ता० 19.3.77 पृ०1 अंत)

• ब्रह्मा की आत्मा को कहते हैं मुझे याद करो। (मु०29.6.77 पृ०1 मध्य)

• आजकल तो भक्तिमार्ग बहुत है। आनंदमई माँ को भी माँ–2 करते, याद करते रहते हैं। अच्छा, बाप कहाँ है? माँ–बाप बिगर बच्चा कहाँ से आए? वर्सा माँ से मिलना है या बाप से? माँ को भी पैसा कहाँ से मिलेगा? सिर्फ माँ–2 कहने से ज़रा भी पाप नहीं कटेंगे। ...बाप थोड़े ही कहते हैं माँ को याद करो। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो। ...माँ तो फिर भी देहधारी हो जाती है। (मु०ता० 8.2.89 पृ०3 मध्य)

• बच्चे को बाप और वर्से को पूरा याद करना चाहिए।(मु०15.8.76 पृ०1 अंत)

• बाप ही बैठ समझाते हैं कि मुझ अपने बाप को याद करो। तुमको शर्म नहीं आती है? तुम मुझे बार–2 भूल जाते हो। ... बच्चे... लज्जा नहीं आती है? बाप को याद नहीं करते हो? बाप के साथ तुम्हारा प्यार नहीं है! कितना याद करते हो? बाबा, एक घण्टा। अरे, निरन्तर याद करोगे तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। जन्म–जन्मांतर के पापों का बोझा सिर पर है। (मु०22.8.68 पृ०1 अंत)

• निराकार को क्यों याद करते हैं? उससे क्या मिलेगा? क्या निराकारी दुनिया में जाएँगे? ...भल सब याद करते हैं; परंतु बिगर परिचय। इस प्रकार याद करने से तो कोई पावन नहीं बनेंगे। यहाँ तो निराकार खुद साकार में आते हैं। (मु०ता० 31.8.98 पृ०3 मध्य)

• सिर्फ घर को याद करेंगे तो ब्रह्म (के) साथ योग हो गया। उनमें विकर्म विनाश नहीं हो सकते। ... तो बाप कहते हैं उनका योग रॉंग है। (मु०17.3.73 पृ०2 मध्य)

•अगर इनको (ब्रह्मा को) याद करेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। ....भल समझते हो यह रथ है; परंतु शिवबाबा को छोड़ रथ को ही याद करते रहेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा, और ही पापात्मा बन पड़ेंगे। ...शिवबाबा को

छोड़ अगर फोटो को याद किया तो समझो और ही गिर पड़ेंगे। (मु०ता० 17.2.68 पृ०3 मध्य) [मु०ता० 8.2.89 पृ०3 आदि]

• बाबा समझाते हैं कब भी किसी देहधारी को याद न करना है। 5 तत्वों को भूत कहा जाता है। तो 5 तत्वों के शरीर को याद न करना है। (मु०ता० 13.11.72 पृ०1 आदि)

• इस मम्मा–बाबा को याद न करना है। इनको याद करने से जमा नहीं होगा। इनमें शिवबाबा आते हैं तो याद शिवबाबा को करना है। (मु०ता०29.10.88 पृ०2 अंत)

• इस मम्मा–बाबा को भी याद न करना है। इनको याद न करना यह जमा न होगा। इनमें शिवबाबा आते हैं तो शिवबाबा को याद करना है। (मु०12.11.73 पृ०2 अंत)

• ऐसे नहीं ब्रह्मा को याद करने से कोई वर्सा मिलेगा। धूल भी नहीं मिलेगा। याद करना है शिवबाबा को। (मु०ता० 11.4.73 पृ०2 आदि)

{देखिए प्रकरण ' याद की विधि ' में ऊपर से प्वा० नं० 26}

याद की विधि

•बच्चे कहते हैं– बाबा, योग में रह नहीं सकते। अरे, तुमको सम्मुख कहता हूँ मुझे याद करो, फिर योग अक्षर क्यों कहते हो? योग कहने से ही तुम भूलते हो। बाप को याद कौन न कर सकेंगे? लौकिक माँ–बाप को कैसे याद करते हो? यह भी माँ–बाप है। ....यह भी पढ़ते हैं। सरस्वती भी पढ़ती थी। पढ़ाने वाला एक ही बाप है। (मु०22.2.69 पृ०2 अंत) [मु०15.1.84 पृ०2 अंत]

•भक्तिमार्ग की बातें सब छोड़ दो। एकदम सब कुछ भूल जाएँ। सब छोड़ दें। काम में लगा देवें तब याद टूटे। इसमें बहुत मेहनत चाहिए यह ऊँच पद पाने लिए। शरीर भी याद न रहे। हम नंगे आए हैं, नंगे जाना है। यह बाप तो बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। (मु०18.3.74 पृ०1 अंत) [मु०13.3.84 पृ०1 अंत]

• अच्छा, परमात्मा जिसको तुम याद करते हो वह क्या चीज़ है? तुम कहते हो अखंड ज्योति स्वरूप है; परंतु ऐसे है नहीं। अखंड ज्योति को याद करना रॉंग हो जाता है। याद तो एक्युरेट चाहिए ना। सिर्फ गपोड़े से काम नहीं चलेगा, एक्युरेट जानना चाहिए। (मु०9.5.71 पृ०2 मध्य)

• बाबा इनके शरीर में बैठा है तो शरीर ज़रूर याद आवेगा ना। फलाने शरीर वाली आत्मा में यह गुण है। (मु०23.4.68 पृ०1 मध्य)

• कोई भी चीज़ जब साकार में देखी जाती है तो जल्दी ग्रहण कर सकते हैं। बुद्धि में सोचने की बात देरी से ग्रहण होती है। यहाँ भी साकार रूप में जिन्होंने साकार को देखा, उन्हों को याद करना सहज है। (अ०वा०1.2.71 पृ०25 मध्य)

• हर एक को डायरैक्ट बाप से वर्सा लेना है। जितना–2 व्यक्तिगत बाप को याद करेंगे उतना वर्सा मिलेगा। (मु०31.7.68 पृ०1 मध्यादि)

• बाप को ऐसे याद करो जैसे कन्या की सगाई होती है। याद बिल्कुल जैसे छप जाती है। बच्चा पैदा हुआ और याद छप जाती है। (मु०18.6.67 पृ०1 अंत)

• मुख से शिवबाबा कहना भी नहीं है। जैसे आशूक–माशूक याद करते हैं। एक बार देखा, बस। फिर बुद्धि में उनकी ही याद रहेगी। (मु०23.3.70 पृ०3 आदि)

• मेरे को निरंतर याद करो। सुमिरण नहीं करना है, याद करना है। याद में और सुमिरण करने में फर्क है। सुमिरण करने में हाथ वा मुख चलता है। (मु०11.2.73 पृ०1 अंत)

• तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में है तो ज़रूर यहाँ याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहाँ आया हुआ है पुरुषोत्तम संगमयुग पर। बाप कहते हैं तुमको इतना ऊँच बनाने मैं यहाँ आया हूँ। तुम बच्चे यहाँ याद करेंगे।...... बाप कहते हैं मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो। (मु०23.12.68 पृ०3 मध्यादि)

• भल बिंदी बुद्धि में याद ही नहीं आती। अच्छा, शिव को तो याद करो तो पाप कटे। बड़े रूप पर हिरे हुए हो, बड़ा ही सही। मतलब शिवबाबा को याद करो। भक्तिमार्ग में भी शिव को तो याद करते हो ना। बड़े को भी याद किया तो सभी पाप कट जावेंगे। (मु०17.1.69 पृ०1 मध्यांत रात्रि क्लास)

• पूछते हैं हम कैसे याद करें? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में याद करें? बहुतों को यह प्रश्न उठता है। बाबा कहते हैं याद तो आत्मा को करना है; परन्तु शरीर भी ज़रूर याद पड़ता है। पहले शरीर फिर आत्मा। बाबा इनके शरीर में बैठा है तो शरीर ज़रूर याद आवेगा ना। (मु०23.4.68 पृ०1 मध्य)

• जो ऊपर में बाप को याद करते होंगे वह है भक्तिमार्ग; क्योंकि उन्हों को ऑक्युपेशन का पता ही नहीं है। न उनके नाम, रूप, देश, काल का ही पता है। (मु०14.12.68 पृ०1 मध्यादि)

• मैं यहाँ इस शरीर में आकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ करना है जहाँ अभी आना है। ऐसे नहीं यहाँ याद करना है। (मु०16.4.73 पृ०1 आदि)

• भट्ठी बनेगी तो तीन दिन अच्छे बीतेंगे। इसमें तो संगठन का सहयोग मिलता है; लेकिन यह आधार भी नहीं। कभी सहयोग मिल सकता है और कभी नहीं भी मिल सकता है। अभ्यास निराधार का होना चाहिए। ...... प्रोग्राम के आधार पर अपनी उन्नति का आधार बनाना यह भी कमज़ोरी है। (अ०वा०23.1.74 पृ०7 मध्य)

• शरीर को याद कर फिर आत्मा को याद करना पड़ता है। ... दूसरे को करेंट देनी हैं तो फिर रात को सवेरे को याद में रहना होता है। .... आत्मा को देखना माना सर्चलाइट देना। ... जो याद करते हैं तो उनको याद पहुँचती है। (मु०18.3.74 पृ०2 अंत, 3 आदि)

• पूरा ज्ञान बुद्धि में बैठा नहीं तो योग भी नहीं लगता। (मु०26.7.71 पृ०3 मध्यांत)

• बीच–2 में एक/दो मिनट भी निकालकर इस बिंदी रूप की प्रैक्टिस करनी चाहिए। जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो सारे चलते–फिरते हुए ट्रैफिक को भी रोककर तीन मिनट साइलेंस की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं। आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच–2 में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच–2 में रोककर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। (अ०वा०24.7.70 पृ०1 अंत, 2 आदि)

• हठयोगी निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासी कब प्रवृत्ति मार्ग वालों को राजयोग सिखा नहीं सकते। (मु०20.1.74 पृ०4 मध्यादि)

• जितना जो स्वयं सरल होंगे उतना याद भी सरल रहती है। अपने में सरलता की कमी के कारण याद भी सरल नहीं रहती है। सरलचित्त कौन रह सकेगा? जितना हर बात में जो स्पष्ट होगा अर्थात् साफ होगा उतना सरल होगा। जितना सरल होगा उतना सरल याद भी होगी।(अ०वा०21.5.70पृ०253अंत)

• याद में रहते हो यह कोई बड़ी बात नहीं; लेकिन याद के साथ–2 सहजयोगी, निरंतर योगी हो। अगर यह नहीं तो याद भी अधूरी रहेगी। (अ०वा०26.12.79 पृ०155 अंत)

• आशूक–माशूक का भी एक/दो के शरीर से प्यार होता है। आशूक–माशूक दोनों ही देहधारी होते हैं। आशूक के सामने जैसे कि माशूक खड़ा है। माशूक को फिर आशूक दिखाई पड़ेगा। अभी तुम आशूक हो परमपिता परमात्मा के। एक है माशूक, बाकी सभी आत्माएँ हैं आशूक। अभी वह निराकार बाप तुमको इस साकार द्वारा बैठ मत देते हैं। (मु०5.8.73 पृ०3 मध्यादि)

• बाबा टाइम भी देते हैं। अच्छा, रात को 9 बजे सो जाओ फिर 2 बजे, 3 बजे उठकर याद करो। (मु०2.5.70 पृ०1 अंत)

• तुमको तो आँख भी बंद नहीं करनी चाहिए। याद में बैठना है ना। आँखें खोलने से डरना नहीं है। आँखें खुली हुई हों और बुद्धि में माशूक ही याद हो। आँखें बंद की तो गोया अंधा हो गया। यह कायदा

नहीं है। बाप कहते हैं याद में बैठो। ऐसे थोड़े ही कहते हैं कि आँखें बंद करो। आँख बंद करेंगे वा कांध नीचा कर बैठेंगे तो बाबा कैसे देखेंगे?......आँखें बंद हो जाती हैं, कुछ दाल में काला होगा, और कोई को याद करते होंगे। (मु०20.3.67 पृ०3 मध्यांत) [मु०28.3.75 पृ०3 मध्य]

• लैट्रिन में भी याद कर सकते हो। (मु०22.4.72 पृ०3 अंत)

•इसी ब्रह्मा के तन में आए तब तो ब्रह्मा मुख से ब्राह्मण पैदा हों। उन ब्राह्मणों को राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र को नहीं याद करना है। तुमको तो लक्ष्य दिया जाता है। मनुष्य तो चित्र देख याद करते हैं। बाबा कहते हैं चित्रों को देखना बंद करो। यह है भक्तिमार्ग। (मु०2.3.73 पृ०2 मध्य) [मु०25.6.92 पृ०2 मध्य]

• अभी बाप यथार्थ बात आकर समझाते हैं कि मुझे याद करो। यह है अव्यभिचारी याद। सो भी अर्थ सहित। दुनिया में तो किसको पता नहीं है। तुम जानते हो शिवबाबा बिंदी है। ... अच्छा, बिंदी छोटी लगती है, घर तो बड़ा है ना। तो घर को याद करो। बाबा भी वहाँ रहते हैं। (मु०4.9.76 पृ०3 मध्य)

• इसको याद की यात्रा कहा जाता। योग कहने से यात्रा सिद्ध नहीं होती है। (मु०ता० 14.7.68 पृ०2 मध्यांत)

•बाप को याद न करने में मूँझते, घुटका खाते रहते हैं। तुम इतना समय याद नहीं कर सकते हो? बाबा ने आशिक–माशूक का मिसाल बताया है। वो भल धंधा करते रहते, चर्खा चलाते रहते तो कोई भी समय माशूक सामने खड़ा हो जाता। ......आशिक माशूक को याद करते हैं, वो फिर उनको याद करते हैं। ....यहाँ तुमको सिर्फ एक बाप माशूक को याद करना है। बाप को तो तुम्हें याद नहीं करना है। बाप सबका माशूक है।(मु०2.3.71 पृ०1,2)[मु०28.3.01 पृ०2मध्य]

• तुम बाप को भी भृकुटी के बीच में ही देखेंगे। बाबा भी यहाँ है, तो भाई (साकार की आत्मा) भी यहाँ है। (मु०ता० 14.4.68 पृ०2 अंत)

•धन्धे आदि से भी कुछ समय निकाल याद कर सकते हो। यह भी अपने लिए धन्धा है ना। कोई बहाना भी करते हैं हमको माथा में बहुत दर्द पड़ गया है। हम छुट्टी लेकर जाते हैं। जाकर बाबा को याद करो। यह कोई झूठ नहीं हैं। सारा दिन ऐसे ही थोड़े ही गँवाना है। (मु०ता०30.8.69 पृ०2 अंत) [मु०ता०15.9.00 पृ०3 मध्य]

•याद करने लिए कोई बैठना नहीं है। (मु०12.2.73 पृ०2 मध्य) [मु०22.12.00 पृ०2 अंत]

•एक बार जो चीज़ देखी जाती है तो वह याद रहती है। तो तुम घर बैठे शिवबाबा को याद नहीं कर सकते हो? (मु०12.2.73 पृ०2 मध्य) [मु०22.12.00 पृ०2 अंत]

•बच्चे कहते हैं– बेहद के बाप को याद कैसे करें? अरे, अपन को आत्मा तो समझते हो ना। आत्मा कितनी छोटी बिंदी है तो उनका बाप भी इतना छोटा होगा ना। वह पुनर्जन्म में नहीं आता है, यह बुद्धि में ज्ञान है। बाप याद क्यों नहीं आवेगा? (मु०ता० 13.9.68 पृ०3 अंत) [मु०ता० 3.9.04 पृ०4 मध्य]

•उठते, बैठते, चलते बाप को याद करो। क्या स्नान करते, टट्टी करते बाप को याद नहीं कर सकते हो? (मु०ता० 7.4.69 पृ०2 अंत) [मु०ता० 14.2.04 पृ०3 आदि]

• ऐसे भी नहीं सुबह को यहाँ आकर बैठने से बैटरी चार्ज हो सकेगी। नहीं, बैटरी चार्ज तो उठते–बैठते, चलते–फिरते हो सकती है, याद में रहने से। (मु०ता० 12.4.68 पृ०1 मध्यांत)

• प्रश्न उठता ही नहीं– कहाँ याद करूँ, कैसे करूँ? बुद्धि में बाप को याद करना है। बाप कहाँ भी जाए, तुम तो बच्चे ही उनके हो ना। बेहद के बाप को याद करना है। (मु०ता० 20.7.68 पृ०2 मध्यांत रात्रि क्लास)

•सबसे मुख्य बात है बाप को याद करना बहुत प्यार से। जैसे बच्चे माँ–बाप को एकदम लिपट जाते हैं वैसे ही आत्मा को बुद्धि के योग से एकदम बाप के साथ लिपट जाना चाहिए बहुत प्यार से। (मु०ता० 19.2.68 पृ०3 आदि) [मु०ता० 22.2.99 पृ०3 मध्य]

• आँखें खुली होते तुम याद कर सकते हो। ध्यान को कोई योग नहीं कहा जाता। ... बाप के कायदे अनुसार याद चाहिए। (मु०2.1.69 पृ०1 मध्य)

• कपड़ा सिलाई करते हैं बुद्धियोग बाप की याद में रहे। (मु०25.5.68 पृ०4 अंत)

• आत्मा सीता है और वह राम है। तो इस पार्ट में भी बहुत मज़ा है। ... आत्मा में दोनों ही संस्कार हैं– कभी मेल का, कभी फीमेल का पार्ट तो बजाया है ना। संगम पर मज़ा है आशिक बन माशूक को याद करना। शक्ति बनकर सर्वशक्तिवान को याद करना। सीता बनकर राम को याद करना। (अ०वा०ता० 8.10. 81 पृ०30 मध्य)

• बाबा कहते हैं कोशिश कर तुम निरंतर याद में रहो। ऐसे नहीं कि सेंटर में जाए एक जगह बैठना है। नहीं, चलते–फिरते जो भी समय मिले बाप को याद करते रहना है। (मु०ता० 7.6.76 पृ०2 अंत)

•तुम कर्मयोगी भी हो। यह बाप ने समझाया है 8 घंटा इस याद में अंत में रह सकेंगे, अभी नहीं। अभी एक घड़ी, आध घड़ी से लेकर चलाते रहो। बाप की याद ऐसी पक्की हो जाए जो कब भूले नहीं। फिर तुम आपे ही उड़ने लग पड़ेंगे। ... साथ–2 थोड़ा चार्ट को बढ़ाते जाओ। प्रैक्टिस करो तो टेव पड़ जावेगी। (मु०ता० 23.9.71 पृ०3 मध्य) [मु०ता० 27.10.96 पृ०3 अंत]

लक्ष्मी-नारायण

• तुम जब(सब) बता देंगे इन ल०ना० का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ। फिर कल 9 वर्ष कम 5000 वर्ष (सन् 66 की वाणी है)। (मु०4.3.70 पृ०3 मध्य)

• पहले–2 आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले ल०ना० आवेंगे अपनी प्रजा सहित। और कोई प्रजा सहित नहीं आते। वो एक आवेगा फिर दूसरा–तीसरा आवेगा। यहाँ तुम सब तैयार हो रहे हो। (मु०17.5.65 पृ०1 अंत)

• इन ल०ना० का राज्य कब था? न कलियुग में, न सतयुग में। स्वर्ग की स्थापना ही संगम पर होती है। इतनी कोई औरों की बुद्धि जाती नहीं है। मनुष्य इतने विस्तार में नहीं जाते हैं। (मु०16.11.71 पृ०1 आदि)

• तुम जानते हो कि अभी हम ईश्वरीय सन्तान हैं, फिर हम दैवी सन्तान बनेंगे तो डिग्री कम हो जावेगी। यह (ल०ना०) भी डिग्री कम है; क्योंकि इनमें ज्ञान नहीं है। ज्ञान ब्राह्मणों में है। ज्ञान बिगर मनुष्य को क्या कहेंगे? अज्ञानी। इन (ल०ना०) को अज्ञानी नहीं कहेंगे। इन्होंने ज्ञान ही से यह पद पाया है। (मु०4.6.67 पृ०3 अंत)

• कोई मूर्ख थोड़े ही विश्व का मालिक बन सकते हैं। यह ल०ना० मालिक थे ना। इतने समझदार थे तब तो भक्तिमार्ग में भी पूजे जाते हैं। (मु०27.5.68 पृ०1 आदि)

• सतयुग में तो बुद्धू होंगे। इन ल०ना० को कुछ भी नॉलेज नहीं है। (मु०17.4.71 पृ०3 अंत)

• अब हीरे जैसा जन्म तो सब कहेंगे इन ल०ना० का ही है। (मु०5.2.67 पृ०1 आदि)

• पुरुषोत्तम संगमयुग पर हीरे जैसा जीवन बनता है। इन (ल०ना०) को हीरे जैसा नहीं कहेंगे। तुम्हारा हीरे जैसा जन्म है। तुम हो ईश्वरीय सन्तान। ....यह दैवी सन्तान। (मु०28.4.68 पृ०2 मध्यादि)

• बरोबर इन ल०ना० का राज्य था सतयुग आदि में। इन ल०ना० को भगवान–भगवती कहा जाता है। (मु०1.11.76 पृ०1 मध्यांत)

• ऊँच ते ऊँच बाप से ऊँच ते ऊँच वर्सा मिलता है। वो है ही भगवान। फिर सेकिंड में हैं ल०ना० विश्व के मालिक। (मु०8.1.67 पृ०2 मध्यांत) [मु०8.1.75 पृ०2 मध्यांत]

- अभी तुम आत्माएँ इस शरीर द्वारा विश्व के मालिक बनते हो अर्थात् गॉड–गॉडेज़ बनते हो। बाप तो है गॉड फादर; परंतु भारत में इन ल०ना० को गॉड–गॉडेज़ कहते हैं; क्योंकि इन्हों को इतना ऊँच बाप बनाते हैं। (मु०14.12.71 पृ०1 मध्य)
- यह ल०ना० चैतन्य में थे तो सुख ही सुख था। सब धर्मों वाले इनको पूजते, गार्डन ऑफ अल्लाह कहते हैं। (मु०2.10.70 पृ०3 मध्य) [मु०30.9.74 पृ०3 मध्य]
- सारी ड्रामा में पार्ट ही ल०ना० का है। (मु०14.5.73 पृ०3 अंत)
- मंदिरों में भी राइट चित्र हैं ल०ना०, राम–सीता के, बस। यह है ऊँच ते ऊँच जो प्रारब्ध भोगते हैं। (मु०31.7.73 पृ०2 अंत)
- पहले नं० में ल०ना० जो हैं विश्व के मालिक, उन्हों को भी 84 जन्म लेने पड़ते हैं। मनुष्य सृष्टि में जो हाइएस्ट न्यू मेन है। न्यू मेन के साथ न्यू वूमेन भी चाहिए। (मु०21.12.73 पृ०3 मध्यादि)
- नारायण से पहले तो श्रीकृष्ण है, फिर तुम ऐसे क्यों कहते हो नर से नारायण बने? क्यों नहीं कहते हो नर से कृष्ण बने? पहले–2 नारायण थोड़े ही बनेंगे। पहले तो श्रीकृष्ण प्रिन्स ही बनेंगे ना। .... बाप कहते हैं अभी तुम (हम बच्चे) नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने वाले हो। गाया भी जाता है बेगर टू प्रिंस। (मु०16.7.68 पृ०3 मध्य) [मु०17.7.74 पृ०3 मध्य]
- यह अभी जानते हैं हम सो ल०ना० बनते हैं, हम सो राम–सीता बनेंगे। (मु०25.5.72 पृ०3 मध्यांत)
- तुम्हारी बुद्धि में सतयुग में ल०ना० का राज्य है, फिर वही त्रेता में भी राज्य करते हैं। (मु०9.11.72 पृ०3 मध्यादि)
- वह तो दान–पुण्य करने से, राजा पास जन्म लेने से प्रिंस बनते हैं, फिर राजा बनते हैं; परंतु तुम इस पढ़ाई से राजा बनते हो। (मु०8.7.68 पृ०2 अंत, 3 आदि)
- तुम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण यहाँ (संगमयुग पर) बनना है। (मु०23.3.68 पृ०1 अंत)
- इस सहज राजयोग द्वारा इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही यह बनते हैं। (मु०5.12.68 पृ०1 मध्यांत)
- जब जन्मसिद्ध अधिकार है तो जन्म लेने से ही प्राप्त है– तब अधिकारी तो बन ही गए ना। (अ०वा०29.1.75 पृ०30 अंत)
- तुम्हारे पास एम–ऑब्जेक्ट भी है। तुम यह पढ़ाई पढ़कर जाय गद्दी बसाएँगे। बाकी सबको मुक्तिधाम ले जावेंगे। (मु०23.2.75 पृ०1 अंत)
- जानते हो बाबा ऐसा (ल०ना०) बना करके चले जावेंगे। फिर तुम राज्य करेंगे। बाकी मनुष्य शांतिधाम चले जावेंगे। (मु०25.6.69 पृ०3 अंत)
- ल०ना० के चित्र साथ फिर राधे–कृष्ण भी हों तो समझाने में सहज होगा। यह है करेक्ट चित्र। (मु०ता० 3.1.78 पृ०3 मध्य)
- बाबा ने कहा था कि जब प्रभातफेरी निकालते हो तो साथ में ल०ना० का चित्र ज़रूर उठाओ। (मु०ता०24.12.67 पृ०1 मध्यांत)
- यह भी बताया है इन ल०ना० में यह ज्ञान नहीं है। वहाँ तो आस्तिक–नास्तिक का पता ही नहीं रहता। (मु०ता० 22.7.68 पृ०2,3)
- बाप समझाते हैं तुम कितने बेसमझ बन गए हो। अब समझदार बनाते हैं। यह (ल०ना०) समझदार हैं, तब तो विश्व के मालिक हैं। बेसमझ तो विश्व के मालिक हो न सकें। (मु०29.7.70 पृ०3 मध्यादि) [मु०20.7.04 पृ०3 अंत]

• यह ल०ना० कितने समझदार थे, राज्य करते थे। बाप कहते हैं ततत्वम्, तुम भी अपने लिए ऐसे समझो। (मु०ता० 27.9.75 पृ०1 मध्य)

• विश्व राजन बनना व सतयुगी राजन बनना, इसमें भी अंतर है। (अ०वा०ता० 28.1.85 पृ०146 मध्य)

•इन ल०ना० का राज्य था ना। वह बने कैसे, कब बनाया, कब कथा सुनाई, कब राजयोग सिखाया– यह तुम अभी समझते हो। (मु०30.1.68 पृ०1 मध्यादि) [मु०23.1.84 पृ०1 मध्य]

• इस ड्रामा में तुम्हारा है हीरो–हीरोइन का पार्ट। तुम विश्व के मालिक बनते हो। (मु०ता० 2.5.68 पृ०2 अंत)

• विष्णु के दो रूप यह ल०ना० हैं। छोटेपन में राधे–कृष्ण हैं। यह कोई भाई–बहन नहीं हैं, अलग राजाओं के बच्चे थे। वह महाराजकुमारी, वह महाराजकुमार थे, जिनको फिर स्वयंवर के बाद ल०ना० कहा जाता है। (मु०ता० 3.9.70 पृ०1,2)

• इन ल०ना०, राधे–कृष्ण आदि सभी के मंदिर हैं। ....विष्णु का भी मंदिर है, जिसको नर–नारायण का मंदिर कहते हैं, और फिर ल०ना० का अलग–2 मंदिर भी है। (मु०ता० 3.9.70 पृ०2 आदि)

• राधे–कृष्ण साथ फिर ल०ना० का क्या संबंध है, यह बाप ही आकर समझाते हैं। (मु०ता० 29.4.71 पृ०1 मध्य)

• ल०ना० को गॉड–गॉडेज़ कहते हैं अर्थात् गॉड द्वारा यह वर्सा पाया है। (मु०ता० 7.2.76 पृ०1 मध्यांत)

• ल०ना० का इस समय कोई एक्युरेट चित्र तो नहीं है। फिर प्रैक्टिकल में आवेंगे। (मु०ता० 6.4.73 पृ०2 आदि)

• भगवान पढ़ाते हैं तो ज़रूर भगवान ही बनना है; परंतु इन (सतयुगी) ल०ना० को भगवान–भगवती समझना रॉंग है। (मु०26.8.68 पृ०2 आदि)

• तुमको मालूम है टिड्डियों का झुंड कितना बड़ा होता है। सबकी यूनिटी होती है। पहले आगे वाला बैठा तो सब बैठ जाएँगे। मधुमक्खियाँ भी ऐसी होती हैं। रानी ने घर छोड़ा तो सब भागेंगी उनके पिछाड़ी। वह जैसे उन्हों का साजन हुआ। उनमें फिर सजनी ही राज्य करती है हमजिन्स पर।
(मु०ता० 17.11.91 पृ०2 आदि.)

• यह भी तो तुम्हारा अविनाशी ज्ञान सर्जन है। (मु०ता० 10.6.87 पृ०2 मध्य)

• जैसे बैरिस्टर कहेंगे हम बैरिस्टर बनाएँगे। ... श्री ल०ना० अथवा उसके डिनायस्टी का वर्सा देने आया हूँ। (मु०ता० 10.3.72 पृ०1 आदि)

• राधा कुमारी है, कृष्ण कुमार। तो कृष्ण (को) स्वामी कैसे कहेंगे? जब स्वयंवर बाद ल०ना० बनें तब स्वामी कहा जाए। (मु०ता० 29.9.77 पृ०2 मध्य)

• यह ल०ना० हैं जिनको ही इकट्ठा विष्णु का रूप दिखाया है। ल०ना० तो दोनों ही अलग–2 हैं। (मु०ता० 21.4.68 पृ०1 आदि)

• जिस शरीर में आकर बैठते हैं वही फिर जाकर नारायण बनते हैं। विष्णु कोई और नहीं, ल०ना० अथवा राधे–कृष्ण की जोड़ी कहो। (मु०21.5.68 पृ०3 आदि)

• शिवजयंती माना ही स्वर्ग की जयंती, ल०ना० की जयंती। (मु०1.8.68 पृ०3 मध्यांत)

• ल०ना० कहने से तुम चले जाते हो सतयुग में। यह है भी नर से नारायण बनने की कथा। कृष्ण बनने की कथा नहीं कहते। इसको सत्यनारायण की कथा कहेंगे, सत्य कृष्ण की कथा नहीं कहा जाता। (मु०ता० 21.8.73 पृ०2 अंत)

• कॉन्ट्रास्ट करना है– यह ल०ना० भगवान–भगवती हैं ना। उनकी भी वंशावली हुई ना। तो ज़रूर सब गॉड–गॉडेज़ होने चाहिए ना। (मु०ता० 19.12.70 पृ०1 अंत)

•तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय संतान। सतयुग में ईश्वरीय संतान नहीं कहलाएँगे। (मु०ता० 24.5.64 पृ०2 अंत) [मु०ता० 13.6.01 पृ०3 मध्यादि]

• अब समझते हैं कि यह ल०ना० विश्व के मालिक थे, कितने साहूकार थे। आधा कल्प विश्व के मालिक थे। (मु०ता० 5.12.71 पृ०1 अंत)

• तुम जानते हो ल०ना० की आत्माएँ भी इस समय हाज़िर–नाज़िर हैं। ...... कृष्ण भी यहाँ ही है। (मु०ता० 26.2.73 पृ०1 अंत)

• बाप आ करके हमको विश्व का मालिक बनावेंगे। ... इस जन्म की बात है ना। (मु०ता०रात्रि क्ला.30.4.68 पृ०1 आदि)

सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है

• मर्यादा पुरुषोत्तम यह महिमा बच्चे की नहीं होती। महिमा हमेशा राजा–रानी (की) की जाती है। (मु०21.8.73 पृ०2 अंत)

• गायन पहले नम्बर का ही होता है। ... कृष्ण को इतना ऊँच पद कोई ने तो दिया होगा न। (रात्रि मु०31.7.64 पृ०3 मध्य)

• महिमा भी वह होनी चाहिए जो आपके सम्पूर्ण स्वरूप की है। (अ०वा०20.1.74 पृ०2 आदि)

• पहले नम्बर वाले की ही पूजा होती है। (मु०22.9.73 पृ०1 अंत, 2 आदि)

•यह ल०ना० पास्ट हो गए हैं, इसलिए उनकी महिमा गाते हैं। (मु०ता० 28.2.68 पृ०2 अंत) [मु०ता० 5.2.99 पृ०2 अंत]

• देखो इन ल०ना० को। ... इन्हों की महिमा भारतवासी जानते हैं। यह स्वर्ग नई दुनिया, नए विश्व के मालिक हैं। (मु०ता० 11.3.73 पृ०1 मध्यादि)

• वैल्यू तो उनकी है जो हीरो–हीरोइन का पार्ट बजाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे बाबा ही हीरो–हीरोइन का पार्ट बजाते हैं। (मु०ता० 28.8.71 पृ०2 अंत)

कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी

• तुम पदमापदम भाग्यशाली इन देवताओं को कहेंगे। यह कितने भाग्यशाली हैं। यह किसको भी पता नहीं है कि यह स्वर्ग के मालिक कैसे बने। अभी तुमको बाप सुना रहे हैं इस सहज राजयोग द्वारा इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही यह बनते हैं। .... योगबल से तुम कितने कंचन बनते हो। आत्मा और काया दोनों कंचन बनती है। (मु०5.12.68 पृ०1मध्यांत, अंत)

• देह सहित जो कुछ है वह सब मेरे को दो। मैं तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों को प्योर बना दूँगा और फिर राजाई भी दूँगा। (मु०26.4.71 पृ०3 अंत) [मु०25.4.73 पृ०3 अंत]

• जैसे सर्प का मिसाल– एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं। उसको कोई मरना नहीं कहा जाता। ... एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। यह अभ्यास यहीं डालना है। (मु०10.2.67 पृ०2 अंत)

• ऊपर जाना माना ही मरना, शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहेगा? यहाँ तो बाप ने कहा है कि तुम तो इस शरीर को भी भूल जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखाते हैं जो और कोई सीखा नहीं सकता है। (मु०25.8.68 पृ०2 आदि) [मु०25.8.74 पृ०2 आदि]

• बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। जैसे सर्प पुरानी खल आपे ही छोड़ देते हैं और नई खल आ जाती है। उनके लिए ऐसे नहीं कहेंगे एक शरीर छोड़ दूसरे में प्रवेश करती है। नहीं। खल बदलने का एक ही सर्प का मिसाल है। वह खल उसको देखने में आते हैं। जैसे कपड़ा उतारा जाता है वैसे सर्प भी खल छोड़ देता। दूसरी मिल जाती है। सर्प तो जीता ही रहता है। ऐसे भी नहीं सदैव अमर रहता है। दो/तीन खल बदली कर फिर मर जावेंगे। (मु०18.7.70 पृ०2 अंत)

• यहाँ तो भले पदमपति हो, तो भी दुःखी होंगे। काया कल्पतरु तो होती नहीं। तेरी काया कल्पतरु होती है। (मु०28.1.73 पृ०2 अंत)

• नानक ने भी कहा न– मूत पलीती कपड़ धोय। लक्ष्य सोप है न! बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र (आत्मा और शरीर) कितना शुद्ध बनाता हूँ। ऐसा धोबी कब देखा? (मु०21.5.64 पृ०3 अंत)

• बाप कहते हैं मैं यहाँ ही आकर सृष्टि को, 5 तत्वों सहित सभी को पवित्र बनाता हूँ। (रात्रि मु०18.1.69 पृ०3 अंत)

• यह सब कपड़े धोए जाएँगे। यह बेहद की बड़ी मशीनरी है। गाया भी जाता है मूत पलीती कपड़ धोय। इन कपड़े(कपड़ों) की बात नहीं, यह है शरीर की बात। आत्माओं को योगबल से धोना है। इस समय 5 तत्व तमोप्रधान हैं, तो शरीर भी ऐसे ही बनते हैं। पतित–पावन बाप आकर पावन बनाते हैं और पतित खलास हो जाते हैं। (मु०6.8.76 पृ०1 मध्यांत)

•यहाँ आकर सृष्टि को पलटाकर काया कल्पवृक्ष समान बनानी है। तेरी काया बिल्कुल पुरानी हो गई है। इनको फिर ऐसा बनाते हैं जो तुम आधा कल्प मरते ही नहीं हो। भल शरीर बदलते हो; परंतु खुशी से। जैसे पुराना चोला छोड़ नया ले लेते हो। ऐसे नहीं कहेंगे कि फलाना मर गया। नहीं, इसको मरना नहीं कहा जाता। जैसे तेरा यह जीते जी मरना है। तुम मरे थोड़े ही हो। तुम तो शिवबाबा के बने हो। (मु०28.1.73 पृ०1 अंत) [मु०27.1.78 पृ०1 अंत]

• यह तो बहुत ही बड़ा वैल्युएबल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप से लॉटरी मिलती है। (मु०8.10.68 पृ०1 मध्यांत)

• वह बाप भी है, नैया को पार लगाने वाला खिवैया भी है। ... क्या शरीर को ले जावेंगे? अभी तुम बच्चे समझते हो बरोबर हमारी आत्मा को पार ले जाते हैं। ... इनको वस्त्र भी कहते हैं, नैया भी कहते हैं। (मु०3.11.68 पृ०1 मध्यादि, 2 मध्यांत) [मु०3.11.74 पृ०1 मध्य, 2 अंत]

• जैसे सर्प पुरानी खल छोड़ नई ले लेते हैं। तुम भी जानते हो यह पुराना सड़ा हुआ शरीर है। इनको छोड़ना है। (मु०25.6.70 पृ०3 अंत)

• नाम ही है गोल्डन एज। कंचन दुनिया। आत्मा और काया दोनों कंचन बन जाती है। (मु०ता०1.10.68 पृ०3 अंत)

• आत्मा भी और काया भी कंचन बने इसलिए सवेरे ड्रिल होती है। (मु०ता०रात्रि क्ला.30.4.68 पृ०2 आदि)

• आत्मा सुधरती–2 पावन हो जावेगी तो फिर यह खल उतार देंगे। .. कंचन काया मिलेगी। सो तब जब आत्मा भी कंचन हो। सोना कंचन हो तो जेवर भी कंचन बनेंगे। (मु०ता० 3.5.68 पृ०3 अंत)

•आत्मा समझती है कि जितना याद करते रहेंगे उतना ही शरीर से निकलते जावेंगे। जैसे सर्प का मिसाल देते हैं। मिसाल जो देते हैं उसमें ज़रूर कुछ रहस्य होते हैं। (मु०ता० 11.4.68 पृ०1 आदि) [मु०ता० 6.3.04 पृ०1 मध्य]

• यहाँ बैठे हो, यह तो याद होगा ना– हम आए हैं रिज्युबिनेट होने अर्थात् यह शरीर बदल देवता शरीर लेने। (मु०ता० 12.1.69 पृ०1 मध्यादि)

• बाप ही बागवान है, उनको खिवैया भी कहते हैं। ... हरेक की नइया पार कैसे हो, सो तुमको बैठ समझाते हैं। ... नइया आत्मा और शरीर दोनों चीज़ की बनी हुई है। (मु०ता० 15.9.71 पृ०2 मध्यादि)

•सड़े हुए कपड़ों को सटका लगाने से चीर–2 हो जाते हैं। यहाँ भी ज्ञान की सोंटी लगाओ तो पुर्जा–2 हो जाते हैं। कोई कपड़ा ऐसा मैला है, साफ करने में बहुत टाइम लगता है। फिर वहाँ भी हल्का पद मिल जाता है। बाबा धोबी है। (मु०ता० 15.3.71 पृ०2 मध्यांत) [मु०ता० 13.4.86 पृ०2 मध्यांत]

राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी

• बेहद का बाप बेहद के बच्चों का सर्वेंट है। लौकिक बाप भी सर्वेंट होता है ना। (मु०5.2.68 पृ०1 मध्य)

• जब सूर्यवंशियों का राज्य चलता है तो राम–सीता को दास–दासी होकर रहना पड़ता है। फिर जब चंद्रवंशियों का राज्य होता है तो वह अपना राज्य ले लेते हैं। (मु०29.7.73 पृ०3 आदि)

• फादर हमेशा ओबिडियेंट होता है। सेवा बहुत करते हैं। खर्चा कर, पढ़ाकर, फिर सभी धन–दौलत बच्चों को देकर खुद जाए साधुओं का संग करते हैं। (मु०27.6.70 पृ०3 मध्य)

• वहाँ ...बाप पैर धोकर बच्चों को तख़्त पर बिठाते हैं। (मु०18.8.73 पृ०2 अंत)

• पिछाड़ी में तुमको सब साक्षात्कार होंगे। फर्स्ट क्लास दास–दासियाँ भी बनेंगी। फर्स्ट दासी कृष्ण का पालन करेगी। (मु०2.3.68 पृ०3 अंत) [मु०9.3.74 पृ०3 मध्यांत]

• बाप हमेशा बच्चों को रचकर और उन्हों की फिर सेवा कर लायक बनाते हैं। बच्चों की कितनी मेहनत से पालना करते हैं। रात–दिन यह चिंतन रहता है कि बच्चों की सेवा कर बच्चों को लायक बनावें। जैसे कि बच्चों के गुलाम बन जाते हैं। तो वह हैं हद की अपनी रचना के गुलाम, यह फिर है बेहद का बाप। (मु०4.6.64 पृ०1 आदि)

• बाप तुमको पढ़ाते हैं। ओबिडियेंट सर्वेंट बना है। बाप बच्चों का ओबिडियेंट सर्वेंट होता है ना। बच्चे को पैदा कर, उनकी सम्भाल, पढ़ाये, बड़ा बनाकर फिर बूढ़ा होता है। तो सारी मिल्कियत बच्चों को देकर खुद गुरू के किनारे जाकर बैठते हैं। वानप्रस्थी बन जाते हैं। ... तो माँ–बाप दोनों ही बच्चों की सम्भाल करते हैं। समझो माँ बीमार है, बच्चे टट्टी कर देते हैं तो बाप को उठाना पड़े ना। तो बाप–माँ बच्चों के सर्वेंट ठहरे ना। (मु०ता० 16.10.68 पृ०1 अंत) [मु०ता० 15.9.04 पृ०2 मध्य]

• प्रश्न उठता है राम–सीता सतयुग में आते हैं? हाँ, आते हैं; परंतु नापास होते हैं; इसलिए जो पास हुए ल०ना० हैं उनके आगे भरी ढोते हैं। (मु०7.6.73 पृ०2 अंत) [मु०29.5.83 पृ०2 अंत]

{दिखिए प्रकरण ' राम फेल ' में ऊपर से प्वा० नं० 5}

जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण

• वहाँ विधवा आदि बनते ही नहीं। अकाले मृत्यु होती नहीं। जब आयु पूरी होती है तो साक्षात्कार होता है। ....समय पूरा होने से शरीर छूटना है। (मु०28.3.69 पृ०4 मध्यांत)

• सतयुग में तुम ही आपस में भाई–बहन थे। ... दूसरा कोई सम्बंध नहीं। (मु०4.5.74 पृ०3 अंत)

• वहाँ जास्ती सम्बंध आदि नहीं होते। सम्बंध बहुत ही हल्का होता है। (मु०12. 10.68 पृ०3 मध्यांत)

• बहुतों का ऐसे हार्टफेल होता है जो पिछाड़ी में कोई की याद नहीं रहती। फिर भी बुद्धि में सम्बंध तो रहता है, जब तक दूसरा शरीर लेवें। (मु०4.3.69 पृ०4 मध्यादि)

• अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो। बेहद का बाप है और तुम सब बहन–भाई हो। बस, और कोई संबंध नहीं है। मुक्तिधाम में है ही बाप और तुम सब आत्माएँ भाई–2। फिर तुम सतयुग में जाते हो तो वहाँ एक बच्चा और एक बच्ची। बस। यहाँ तो बहुत संबंध होते हैं– चाचा, काका आदि–2। (मु०29.12.67 पृ०2,3)

•वहाँ एक–2 को एक बच्चा, एक बच्ची ...हो तो फिर त्रेता में इतने हो जावेंगे। ... ऐसे नहीं कि उसी समय कोई 5–6 बच्चे पैदा करते हैं। ......सतयुग में इतने बच्चे होते ही नहीं। ....पीछे आहिस्ते–2 जास्ती बच्चे होते हैं। (मु०23.9.71 पृ०2 आदि) [मु०27.10.96 पृ०2 आदि]

•वहाँ राम को 4 भाई तो होते नहीं। वहाँ तो बच्चा भी एक होता है। 4 बच्चे तो होते नहीं। (मु०ता० 29.9.77 पृ०1 मध्यांत) [मु०ता० 27.9.07 पृ०1 अंत]

भारत कौन?

- भारत ही सभी की दुर्गति के निमित्त बना है, फिर सद्गति के लिए भी निमित्त बनता है। (मु०2.1.69 पृ०3 अंत)
- भारत इस सारे विश्व का मालिक था...और कोई राजा नहीं था। (मु०8.9.65 पृ०2 मध्य)
- भारत प्रिंस था, अभी बेगर है, फिर प्रिंस बनते हैं। बनाने वाला है बाप। (मु०8.2.71 पृ०3 आदि)
- भारत बिल्कुल ही पतित हो गया है। भोगी हो गया है। योगी नहीं कहेंगे। (मु०25.8.73 पृ०6 आदि)
- जब–2 भारत पापात्मा, दुःखी बन जाता है, धर्म ग्लानि हो पड़ती है तो मैं आता हूँ। रूप बदलना पड़ता है। ज़रूर मनुष्य तन में ही आवेंगे। (मु०16.12.73 पृ०1 आदि)
- इस समय सब जीवन बंध में हैं। खास भारत। भारत ही एक सेकेंड में जीवनमुक्ति लेते हैं। (मु०18.7.65, 13.7.72 पृ०1 मध्यांत)
- भारत ही फिर पुरुषोत्तम बनने का है। (मु०23.3.70 पृ०1 मध्यादि)
- बाप ब्रह्मा तन का ही आधार लेते हैं। उनको आना ही भारत में है। बाप का जन्म भी भारत में ही है। ब्रह्मा का भी भारत में है। (मु०29.7.64 पृ०3 अंत) [मु०27.7.73 पृ०3आदि]
- भारत सतोप्रधान था फिर 84 जन्म लेने पड़े। <u>सीढ़ी उतर नर्कवासी बने। ...फिर अब तुमको चढ़ना है</u> मुक्तिधाम अपने घर। (मु०19.2.71 पृ०3 मध्यांत)
- सभी से नम्बरवन भारत पावन था। अभी भारत सभी से पतित है। तो उन्हों को मेहनत भी जास्ती करनी पड़ती है। (मु०17.6.72 पृ०2 मध्यांत)
- भारत 100 प्रतिशत श्रेष्ठाचारी था। अभी वही भारत जड़जड़ीभूत तमोप्रधान होने के कारण 100 प्रतिशत भ्रष्टाचारी है। (मु०7.8.73 पृ०3 आदि)
- भारत तो है मोस्ट बेगर। भारत अब काँटों का जंगल है। काँटों की शैया पर दिखाते हैं, भीख माँग रहे हैं। तो यह भी सबसे भीख माँगते रहते हैं। भारत की दुर्दशा है। भारत बिल्कुल सॉलवेंट था, अभी तो कंगाल है। (मु०3.11.78 पृ०3 अंत)
- भारत खास और दुनिया आम को यह संदेश देना है।(मु०14.2.67पृ०1आदि)
- पूज्य–पुजारी, पावन–पतित भारत ही बनता है। बाकी तो हैं बीच में। ... गाते हैं पतित–पावन, तो ज़रूर पतित हैं ना। भारत पावन था, अब पतित है। (मु०7.9.73 पृ०3 मध्यादि)
- 84 का चक्र भी भारत के लिए है। (मु०28.7.73 पृ०1 अंत)
- परमधाम से बाबा भारत में ही आते हैं। बस, भारत कौन सडावे(कहलावे)? ... भारत बहुत साहुकार था। अब तो कंगाल हो गया है। इसलिए भारत को पैसे देते हैं। गरीब को दान दिया जाता है। ... बाप कहते हैं मेरा पार्ट है गरीब भारत को हीरे जैसा बनाना। (मु०2.9.73 पृ०1 अंत)
- तुम कह सकते हो रामायण की सारी कथा भारत पर ही है। सिर्फ समझाने का खिर चाहिए। (मु०12.1.75 पृ०3 अंत)
- भारत को पूरा कलंकित कर दिया है। ...... इतनी रानियाँ थीं, उनको भगाया, मक्खन चुराया, इतने बच्चे थे। वास्तव में यह सभी है प्रजापिता ब्रह्मा की कहानी। उसके बदली कृष्ण को रख दिया है। (मु०5.5.73 पृ०1 आदि–अंत)
- मैं ही ख़ास भारत और आम जो भी हैं सबकी सद्गति करता हूँ। (मु०18.7.65, 13.7.72 पृ०1 अंत)

• यह भारत भगवान की जन्मभूमि है। जैसे इब्राहीम, बौद्ध(बुद्ध) आदि की अपनी–2 जन्मभूमि है। (मु०16.9.73 पृ०3 अंत)

•भारत गिरा है तो सभी गिरे हैं। भारत ही रिस्पॉन्सिबल है अपन को गिराने और दूसरों को गिराने।(मु०18.7.69 पृ०1 मध्यादि) [मु०ता० 24.8.00 पृ०1 मध्य]

• भारत में शिवजयंती, शिवरात्रि भी मनाते हैं। बाप आते भी हैं भारत खंड में। भारत ही अविनाशी खंड है। इनकी महिमा बहुत भारी है। जैसे बाप की महिमा अपरमअपार है, वैसे भारत की महिमा भी अपरमअपार है। भारत में ही परमपिता परमात्मा आकर सभी मनुष्य मात्र की सद्गति करते हैं, सभी को सुख देते हैं। उनका बर्थ प्लेस भारत है। ....भारत ही प्राचीन देश है। भगवान राजयोग सिखलाने भारत में ही आया था। (मु०ता० 28.8.71 पृ०2 अंत)

•यह खेल भारत पर ही बना हुआ है। ....वर्ण भी हैं। नहीं तो 84 जन्मों का हिसाब–किताब कहाँ? (मु०ता० 20.3.72 पृ०2 मध्य) [मु०ता० 21.3.97 पृ०2 अंत]

•भारत हीरे जैसा था, अभी कौड़ी मिसल है। बेगर भारत को फिर सिरताज कौन बनावेंगे? (मु०ता० 28.2.68 पृ०3 आदि) [मु०ता० 5.2.99 पृ०3 आदि]

• पहले–2 एक भारत ही सारे विश्व का मालिक था। ... ऐसा विश्व का मालिक ज़रूर विश्व का रचयिता ही बनावेगा। (मु०ता०21.3.72 पृ०1 मध्यादि)

•भारत के लिए कहा जाता है भारत सोने की चिड़िया थी। ... यह सब जानते हैं प्राचीन भारत बहुत साहूकार था। अब कितना गरीब बन गया है। (मु०ता० 17.11.76 पृ०3 आदि) [मु०ता० 20.11.96 पृ०3 मध्य]

सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल

• इस संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग व सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो? क्योंकि आत्मा के हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बंधों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्वश्रेष्ठता अभी रिकॉर्ड के समान भरता जाता है। 84 जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला उन दोनों के संस्कार इस समय आत्मा में भरते हो। रिकॉर्ड भरने का समय अभी चल रहा है। ... आप बेहद का रिकॉर्ड भरने वाले, सारे कल्प का रिकॉर्ड भरने वाले, क्या हर समय इन सभी बातों के ऊपर अटेंशन देते हो? (अ०वा०30.5.73 पृ०77 अंत, 78 आदि–अंत)

• मुख्य संस्कार भरने का समय अभी है। आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकॉर्ड इस समय भर रहे हो। (अ०वा०9.5.77 पृ०1 मध्यादि)

• यह रिहर्सल होती रहेगी। जब तक राजधानी स्थापन न हुई है तब तक लड़ाई नहीं लग सकती। (मु०4.2.71 पृ०3 मध्यादि)

• हर एक मनुष्य मात्र को, हर चीज़ को सतो, रजो, तमो में आना होता है। नई से पुरानी ज़रूर होती है। कपड़ा भी नया पहनते हैं फिर पुराना होता है तो कहेंगे न– पहले सतोप्रधान, फिर ज़रूर सतो, रजो, तमो तुमको ज्ञान मिला है। (मु०13.6.76 पृ०2 अंत)

• तुम बच्चों को वहाँ कितनी कशिश हुई? कैसे सब भागे? ... जो भी सारी दुनिया की आत्माएँ हैं उनको पार्ट बजाना है। जैसे नए सिरे शूटिंग होती जाती है; परंतु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है। (मु०9.9.74 पृ०2 मध्यांत, 3 आदि)

• वैसे ये आत्मा भी शरीर के अंदर रिकॉर्ड है, जिसमें सारा पार्ट 84 जन्मों का भरा हुआ है। (मु०8.2.71 पृ०1 मध्यादि)

• नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब लड़ाई शुरू होगी। तब तक रिहर्सल होती रहेगी। (मु०22.6.70 पृ०3 अंत)

• तुम हो अभी पुरुषोत्तम संगमयुगी। पुरुषोत्तम संगमयुग ज़रूर लिखना चाहिए। बच्चों को ज्ञान के प्वाइंट याद न होने के कारण फिर ऐसे–2 अक्षर लिखना भूल जाते हो। (मु०ता० 24.9.69 पृ०1 आदि)

• रूह–रूहान सिर्फ इस समय होती है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आकर रूहों से बात करते हैं। (मु०ता० 1.5.68 रा.क्लास पृ०2 आदि)

• मनुष्य से देवता किया तो यह हुआ पुरुषोत्तम संगमयुग। (मु०ता० 25.5.69 पृ०1 आदि)

• कृष्ण को द्वापर में ठोंक दिया है। यह भी अभी तुम जानते हो। (मु०ता० 7.7.66 पृ०1 अंत)

• शिवबाबा भी प्रभात के समय आते हैं ना। आधी रात नहीं कहेंगे। (मु०ता० 20.3.69 पृ०2 मध्यांत)

•आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल ...। ... तुम पूरे 5000 वर्ष अलग रहते हो। (मु०ता० 22.7.68 पृ०3 आदि) [मु०ता० 3.7.04 पृ०3 मध्यांत]

• सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न यहाँ बनना है। रिहर्सल यहाँ होगी फिर वहाँ प्रैक्टिकल पार्ट बजाना है। (मु०ता० 23.12.58 रा.क्लास पृ०3 अंत)

• हर चीज़ पहले सतोप्रधान, फिर सतो, रजो, तमो होती है। (मु०ता० 19.8.67 पृ०2 मध्य)

• तब तक यह रिहर्सल होती रहेगी जब तक सारी सेना कर्मातीत अवस्था को आ जाए। (मु०ता० 23.7.71 पृ०1 मध्यादि)

संगम की आयु

• बाप कहते हैं जब तक मैं हूँ पुरुषार्थ करते रहो। बाप कितना वर्ष रहेंगे? ...40 वर्ष बैठ समझाते हैं। (मु०17.9.68 पृ०1 अंत)

• तुम बच्चे जानते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग 50 वर्ष का छोटा है। (मु०1.3.68 पृ०2 अंत)

• थोड़ा समय 50/60 वर्ष लगते हैं पूरी राजधानी स्थापना में। (मु०26.7.65 पृ०2 आदि, 24.7.72 पृ०2 मध्यादि)

• कलियुग विनाश, सतयुग स्थापन होने में बीच में करीब 50 वर्ष का टाइम लगता है। इसमें थोड़े जो रह जाते हैं, वह फिर अपनी राजधानी बनाते हैं नए सिरे। (मु०11.2.73 पृ०2 मध्यादि)

• इस संगमयुग में बाप आकर 50/60 वर्ष इनमें रहकर इनको बदली करते हैं। (मु०26.11.72 पृ०3 आदि)

• बाबा को जान जाए तो श्रेष्ठाचार का वर्सा मिल जाए। श्रेष्ठाचारी बनने में 40/50 वर्ष लगते हैं। (मु०11.9.73 पृ०4 अंत)

• जो 2500 वर्ष में पाप हुए हैं वह 50 वर्ष में तुम भस्म कर सतोप्रधान बन सकते हो। (मु०12.3.68 पृ०2 मध्यांत)

• 50/60 वर्ष तो पढ़ाई है। अभी आधा से भी कम पढ़ाई हुई है। (मु०1.8.73 पृ०2 अंत)

• बाप आकर 50 वर्ष में पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनाते हैं। (मु०3.6.68 पृ०2 मध्य)

• 50 वर्ष नहीं तो करके 100 वर्ष लगते हैं। उत्थल–पाथल पूरी हो फिर राज्य शुरू हो जाते हैं। (मु०25.9.71 पृ०1 मध्य)

• अभी है संगमयुग। इसको 100 वर्ष देना चाहिए। (मु०5.11.71 पृ०3 मध्य)

• इतना 50 वर्ष कोई भी यज्ञ नहीं चलता। ...... तुम्हारा यह यज्ञ 50 वर्ष चलता है। (मु०11.5.73 पृ०2 मध्य)

- बाप कहते हैं मैं आता हूँ 40/50 वर्ष। (मु०9.4.73 पृ०3 अंत)
- संगमयुग कोई बड़ा नहीं है, 50 वर्ष का है। (मु०20.2.73 पृ०2 आदि)
- शिवबाबा तो संगमयुग पर ही 50/60 वर्ष पढ़ाते हैं। (मु०2.3.68 पृ०3 आदि)
- तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40/50 वर्ष लगते हैं। (मु०6.10.74 पृ०2 अंत)
- एक ही कोर्स बहुत बड़ा है, 40–50 वर्ष चलता है। (मु०11.8.83 पृ०2 मध्यांत)
- 50/60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। (मु०ता०8.9.68 पृ०3 मध्यादि)
- 50 वर्ष में तुम चढ़ती कला में आ जाते हो। (मु०16.9.71 पृ०1 मध्य)
- कल्प के संगमयुग पर ही कुम्भ का मेला लगता है। वह कुम्भ का मेला 12 वर्ष बाद लगता है। यह बड़ा कुम्भ का मेला है, 5000 वर्ष बाद लगता है। जो 50 वर्ष बाद चलता है और चलता ही रहेगा। (मु०ता० 1.10.71 पृ०2 मध्य)
- अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग। बहुत छोटा है। 50–60 वर्ष में बिल्कुल अच्छी प्लैनिंग कर देते हैं। (मु०ता० 21.4.69 पृ०2 अंत)
- अभी है संगमयुग। इसको 100 वर्ष देने चाहिए।(मु० 5.11.71 पृ०3 मध्य)

सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक

- सतयुग अंत में वृद्धि होकर 9 लाख से 2 करोड़ हो गए होंगे। (मु०22.3.71 पृ०1 अंत) [मु०22.3.76 पृ०1 अंत]
- मुरली छपती है। आगे चल कर लाखों–करोड़ों के अंदाज में छपने लग पड़ेंगी। (मु०22.6.68 पृ०4 अंत)
- मेरे मुख से दो अक्षर भी सुना तो वह भी स्वर्ग में ज़रूर आवेंगे। आगे चल कर ढेर सुनेंगे। (मु०2. 3.68 पृ०3 आदि)
- तुम्हारे सेंटर्स लाखों की तादाद में हो जाएँगे। (मु०28.2.71 पृ०3 मध्यादि)
- जितने (10 करोड़) देवी–देवताएँ सतयुग–त्रेता के हैं, वह सब गुप्त यहाँ बनने हैं। (मु०11.2.68 पृ०1 अंत)
- भारत में 33 करोड़ देवताओं की लिमिट है। (मु०23.3.73 पृ०2 आदि)
- यह भी समझाया है 9 लाख होते हैं, फिर मल्टीप्लीकेशन होकर एक/दो करोड़ हो जावेंगे। (मु०23.9. 71 पृ०2 अंत)
- वहाँ सारी धरती पर ही शुरू में होते हैं 9/10 लाख। (मु०11.3.67 पृ०3 आदि)
- जैसे वह इम्तिहान 12 मास का होता है ना, यह भी ऐसे है, 9 मास हम पढ़े हैं। बाकी 3 मास स्थापना में है। (मु०12.3.69 पृ०1 अंत)
- बच्चे जानते हैं पुरुषोत्तम संगमयुग की आयु बहुत थोड़ी है। 40 वर्ष से अभी बाकी 8 वर्ष रही है। ... तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। 32 वर्ष तो चला गया। यह पुरुषोत्तम संगमयुग सबसे हीरे जैसा है। मोस्ट वैल्युएबल है। (मु०ता० 18.9.68 पृ०1 आदि)

सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश

- अभी हम थोड़े ही समय में, 8 वर्ष में, सिर्फ हम ही थोड़े बाकी रहेंगे। और इतने सभी धर्मखण्ड आदि नहीं रहेंगे। हम ही विश्व के मालिक होंगे। (मु०9.7.68 पृ०1 अंत)

• एक दिन ऐसा भी आवेगा, जो दुनिया बहुत खाली हो जावेगी। ...... 2/4 वर्ष में सिर्फ भारत ही रहेगा। (मु०14.8.74 पृ०3 अंत)

• 10 वर्ष से 9 वर्ष, 9 वर्ष से 8 वर्ष बाकी रही हैं। ...... अभी कलियुग का अंत आए हुआ है। .... ड्रामा फिरता गया है तो फिर ज़रूर रिपीट करेंगे ना। (मु०5.2.68 पृ०2 मध्य)

• 5 वर्ष के अंदर ड्रामाप्लेन अनुसार सारा कार्य होना है। (मु०3.2.71 पृ०1 आदि)

• 8 वर्ष हैं बाकी। 5 भी हो सकते हैं। 8 से जास्ती होने का तो बिल्कुल दम ही नहीं दिखाई पड़ता है। (मु०12.8.68 पृ०1 अंत) [मु०13.8.74 पृ०1 अंत]

• बाकी 2 वर्ष हैं। ऐसे मत समझना 3 वर्ष हो जावेंगे। एक वर्ष होगा; परंतु 3 नहीं होंगे। (मु०9.11.74 पृ०3 मध्य)

• बाकी 8 वर्ष हैं। ऐसे मत समझना 8 वर्ष से 9 वर्ष हो जावेगा। नहीं–2, और ही ... हो जावेगा; परंतु 9 नहीं होंगे। (मु०7.11.68 पृ०3 मध्यांत)

• कोई–2 को स्कॉलरशिप भी मिलती है ना 2/3 वर्ष लिए। जो अच्छी मेहनत करेंगे वह ज़रूर स्कॉलरशिप लेंगे। (मु०17.1.70 पृ०2 मध्यांत)

• दिन–प्रतिदिन जो देरी से शरीर छोड़ते हैं उनको टाइम तो थोड़ा ही मिलता है; क्योंकि टाइम है बाकी एक वर्ष। उसमें जन्म ले क्या कर सकेंगे? (मु०28.2.75 पृ०2 मध्य)

• तुम कहते हो 9 वर्ष बाद विनाश होगा। (मु०ता० 24.11.67 पृ०4 आदि)

• 8 वर्ष कोई बड़ी बात थोड़े ही है। सारी दुनिया ख़त्म हो जानी है। (मु०ता० 13.9.68 रा.क्लास पृ०1 मध्यादि)

ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है

• ब्रह्मा की रात सो सरस्वती की भी रात, ब्रह्मावंशियों की भी रात। दिन में फिर सब ब्राह्मण सो फिर देवता बनते हैं। (मु०29.7.64 पृ०3 अंत)

• बरोबर परमपिता परमात्मा ब्रह्मा की रात को ब्रह्मा का दिन बनाने आता है। (मु०20. 10.73 पृ०1 मध्यांत)

• प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली घोर अंधेरे में थे, तो ज़रूर ब्रह्मा भी घोर अंधेरे में होगा। ब्रह्मा मुखवंशावली सोझरे में है तो ब्रह्मा भी सोझरे में होंगे। गाते तो बहुत हैं। बहुत भटकते हैं दूर–2 पहाड़ों पर, टिकानों, मंदिरों में, मस्जिदों में। (मु०10.10.73 पृ०1 आदि)

• समझाने के लिए हमको कहना पड़ता है। बाकी इसमें घृणा की कोई बात ही नहीं। शास्त्रों में भी है ब्रह्मा की रात अर्थात् घोर अंधेरा। (मु०11.1.66 पृ०1 अंत)

• सद्गुरू और गुरू में रात–दिन का फर्क है। वह ब्रह्मा का दिन कर देते, वह रात कर देते। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। तो ज़रूर कहेंगे ब्रह्मा पुनर्जन्म लेते हैं। (मु०28.2.68 पृ०1 मध्यादि)

• जब रात शुरू होती है तो पहले–2 मंदिर बनते हैं। (मु०10.5.73 पृ०3 आदि)

• ब्रह्मा की रात होनी ही है। तुम ब्राह्मणों की अब रात है। बाबा आया हुआ है घोर अंधियारी रात में। यह बातें तुम ही जानते हो। (मु०22.8.73 पृ०3 आदि)

•शिवबाबा आते ही तब हैं जबकि ब्रह्मा की रात्रि होती है। रात के बाद फिर दिन अर्थात् कलियुग का अंत होता है तब सतयुग की आदि होती है। (मु०4.10.73 पृ०1 मध्य) [मु०5.10.78 पृ०1 मध्य]

• ब्रह्मा का अथवा तुम ब्राह्मणों का ही दिन और रात गाया जाता है। दिन और रात का ज्ञान भी तुम बच्चों को है। ल०ना० को यह ज्ञान नहीं है। ...कलियुग में वा सतयुग में यह ज्ञान किसको होता नहीं। इसलिए गाया जाता है ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। (मु०10.5.71 पृ०1 मध्यादि)

• अब ब्रह्मा की रात है तो ब्रह्मा भी रात में होगा ना। फिर विष्णु बनेगा तो दिन हो जावेगा। (मु०14.10.72 पृ०3 अंत)

• विष्णु को, शंकर को पतित नहीं कहेंगे। ब्रह्मा है पतित। ब्रह्मा की रात है ना। बाप भी रात को ही आते हैं। शिवरात्रि सो ब्रह्मा की रात्रि हो गई। (मु०7.5.72 पृ०2 आदि)

•यह है ब्रह्मा की रात जिसमें भक्ति के धक्के खाते हैं। चारों तरफ फेरे लगाए; परंतु हरदम दूर रहे। स्वर्ग का मालिक बनाने वाला बाप न मिला। (मु०1.9.65 पृ०3 आदि) [मु०3.9.77 पृ०3 आदि]

• ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात। दोनों इक्वल होता है ना। फिर सतयुग दिन के(की) इतनी बड़ी आयु और रात को छोटा क्यों कर दिया है? ब्रह्मा का दिन और रात दोनों बराबर होनी चाहिए ना।(मु०17.9.72 पृ०3 मध्य)

• कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा का दिन फिर रात, तो प्रजा और ब्रह्मा ज़रूर दोनों ही इकट्ठे होंगे ना। तुम समझते हो हम ब्राह्मण ही आधाकल्प सुख भोगते हैं फिर आधाकल्प दुःख। यह बुद्धि से समझने की बात है। (मु०21.11.74 पृ०2 अंत, 3 आदि)

• बाप ने समझाया है आधा कल्प है दिन, आधा कल्प है रात। यह भी ब्राह्मणों की बात है। (मु०2.12.71 पृ०3 मध्य)

• ब्रह्मा का दिन है, दिन में धक्का नहीं खाया जाता। रात अंधेरी में धक्के खाए जाते हैं। ... अब विष्णु की रात अथवा दिन क्यों नहीं कहते? ... ब्रह्मा और ब्रह्माकुमार–कुमारियों के लिए यह बेहद के दिन और रात हैं। शिवबाबा का दिन और रात नहीं कहेंगे। (मु०ता० 29.6.77 पृ०2 आदि)

• ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात, ब्रह्मा का दिन माना ही ब्राह्मणों का दिन। ... यह है बेहद की रात, बेहद का दिन। (मु०ता० 25.8.68 पृ०1 अंत) [मु०ता० 17.8.99 पृ०2 आदि]

• ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात गाई हुई है। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा का थोड़े ही दिन और रात बतावेंगे। ... दिन और रात का प्रश्न यहाँ का है। ब्रह्मा की रात माना पतित, फिर वही पावन बनते हैं तो दिन होता है। (मु०25.9.73 पृ०2 अंत) [मु०14.9.88 पृ०2 अंत]

चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार

• शास्त्रों में फिर युगे–2 कह दिया है, एक–2 युग के बाद अवतार लेते हैं। बाप समझाते हैं मैं युगे–2 नहीं आता हूँ; परन्तु पुरुषोत्तम संगम युगे आता हूँ। (मु०7.9.68 पृ०1 मध्यांत) [मु०14.9.74 पृ०1 मध्यांत]

• यह भी नहीं समझते युगे–2 बाप आकर कैसे राजयोग सिखावेगा। (मु०27.5.68 पृ०1 मध्यांत)

• ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक कल्प–3 के संगम पर बाप आकर हमको सिखाते हैं। (मु०7.1.67 पृ०1 मध्य)

• ऐसे थोड़े ही घड़ी–2 अवतार लेकर पढ़ाऊँगा। मैं तो एक ही बार आता हूँ, आकर बड़े ऑलमाइटी अथॉरिटी का मालिक बनाता हूँ। परमधाम से कल्प के संगम युगे–2 आता हूँ। (मु०18.5.73 पृ०2 अंत)

• यह भी समझाया है सतयुग के बाद त्रेता का संगम होता है; परंतु वह युग फिरता है और अभी तो यह कल्प फिरता है। बाप कोई युगे–2 नहीं आते हैं जैसे मनुष्य समझते हैं। बाप कहते हैं जब सभी तमोप्रधान बन जाते हैं, कलियुग का अंत होता है उस कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। (मु०12.5.73 पृ०1 मध्य)

•बाप कहते हैं मैं कल्प–कल्प–कल्प के संगमयुगे फिर से आता हूँ, आता ही रहूँगा। फिर से तुम बच्चों को राजभाग सिखाऊँगा। (मु०17.2.72 पृ०2 मध्यांत) [मु०18.2.92 पृ०2 मध्यांत]

• ऐसा बाबा कल्प–2 कल्प के संगमयुगे, एक ही बार आते हैं। (मु०ता० 24.5.64 पृ०3 मध्य)

(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति

- जैसे शुरू में एलान निकला कि सभी को इस घड़ी मैदान में आना है, वैसे अब भी रिपीट ज़रूर होना है; लेकिन भिन्न–2 रूप में। (अ०वा०20.12.69 पृ०156 मध्य)
- तुम ही पहले–2 आए थे। अभी लास्ट में भी तुम हो, फिर पहले–2 तुम्हीं मनुष्य से देवता बनने वाले हो। देवी–देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हैं। (मु०16.7.73 पृ०2 मध्यांत)
- आगे चल तुमको सभी पता पड़ जावेगा, कौन–2 विजयमाला का दाना बनते हैं। पिछाड़ी में बच्चों को बहुत साक्षात्कार होंगे। शुरू में तो थोड़े हुए हैं। (मु०3.8.73 पृ०4 अंत)
- जो आश्चर्यवत् भागन्ति हो जावेंगे वह यह सब नहीं देख सकेंगे। पास्ट भी तुमने देखा और जो नया होगा वह भी तुम देखेंगे। (मु०17.9.73 पृ०3 अंत)
- हंगामा जब होगा तो साकार शरीर द्वारा कुछ कर न सकेंगे और प्रभाव भी इस सर्विस से (मनसा सेवा से) पड़ेगा। जैसे शुरू में भी साक्षात्कार से ही प्रभाव हुआ ना। परोक्ष–अपरोक्ष अनुभव ने प्रभाव डाला। वैसे अंत में भी यही सर्विस होनी है। (अ०वा०24.1.72 पृ०1 अंत)
- जैसे शुरुआत में मिसाल हुआ। सभी की बुद्धि में टचिंग होती थी– कुछ प्राप्ति होनी है। यहाँ जावें, देखें और कहाँ–2 से भागते हुए उस आकर्षण मूर्त के सम्मुख पहुँच गए। यह छोटा–सा मिसाल हुआ ना आदि में; लेकिन अंत में विशाल रूप में यह रूहानी सेवा होनी है। जो रूहानी सूक्ष्म मशीनरी की सेवा अभी अव्यक्त रूप में बापदादा कर रहे हैं। (अ०वा०4.8.72 पृ०3 मध्य)
- ब्रह्मा के रूप में जो आदि से अंत तक हर कर्म में, हर चरित्र में, हर सेवा के समय में साथी रहे हैं वह भविष्य में भी साथी रहेंगे। (अ०वा०27.10.81 पृ०2 अंत)
- आर्यसमाजियों ने एक भाकी का चित्र हाथ कर कितना हंगामा मचाया है। यह भी नूँध है। फिर भी ऐसे होगा। (मु०25.6.66, 25.6.71 पृ०3 अंत)
- हमने कोई को भगाया क्या? किसको भी कहा नहीं कि तुम भाग कर आओ। हम तो वहाँ थे। यह आपे ही भाग आईं। .... कोई मनुष्य यह सब कुछ थोड़े ही कर सकता है। सो भी ब्रिटिश गवर्मेंट के राज्य में कोई के पास इतने बैठ जाएँ। कोई कुछ कर न सके। कोई आते थे तो एकदम भगा देते थे। बाबा तो कहते थे भल इनको समझाओ, ले जाओ। मैं कोई मना थोड़े ही करता हूँ; परंतु किसकी हिम्मत नहीं होती थी। बाप की ताकत थी ना। नथिंग न्यू। यह फिर भी सभी होगा। (मु०22.4.70 पृ०2 अंत) [मु०22.4.75 पृ०2 अंत]
- जैसे शुरू में चलते–फिरते देखते रहते थे। यह ध्यान में जाकर देखने की बात नहीं। जैसे एक साकार बाप का आदि में अनुभव किया वैसे अंत में अभी सबका साक्षात्कार होगा। यह साधारण रूप गायब हो जावेगा। ...... जैसे शुरू में आकारी ब्रह्मा और श्रीकृष्ण का साथ–2 साक्षात्कार होता था, वैसे अभी भी यह साधारण रूप देखते हुए भी दिखाई न दे। (अ०वा०10.12.78 पृ०117 आदि)
- जैसे स्थापना के आदि में स्वप्न और साक्षात्कार की लीला विशेष रही, ऐसे अंत में भी यही विचित्र लीला प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनेगी। चारों ओर से ''यही है, यही है'', यह आवाज़ गूँजेगी और यह आवाज़ अनेकों के भाग्य की श्रेष्ठता के निमित्त होगा। (अ०वा० 31.12.82 पृ०22 मध्य)
- शुरू–2 में अख़बार में निकाला गया था कि ओममंडली इज़ दी रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। तो यही बात फिर अंत में सबके मुख से निकलेगी। (अ०वा०13.9.74 पृ०125 मध्य)
- अभी ऐसा कोई वातावरण बनाओ जो वातावरण चुम्बक जैसा कार्य करे। चारों ओर फैल जाए कि अगर शांति, सुख या प्रेम चाहिए तो यहाँ से मिल सकता है। .... जैसे स्थापना के शुरू में एक दिन भी कोई

सतसंग में आ जाते थे तो पहले दिन ही कुछ न कुछ अनुभव करके जाते थे। जो आदि में वह अंत में विस्तार के रूप में होना है। ऐसा कुछ वातावरण बनाओ। (अ०वा०19.11.79 पृ०32 अंत, 33 आदि)

• हम श्रीकृष्ण की आत्मा को मँगा भी सकते हैं। आकर खेलपाल करेंगे, बच्चा गोद माँगेंगे, राय(रास) करेंगे और क्या करेंगे! गोप–गोपियाँ तो यहाँ ही होते हैं। वहाँ तो प्रिंस–प्रिंसेज़ आपस में मिलते हैं तो रास करते हैं। सोने की मुरली बजाते हैं। यह सभी तुम खेलपाल देखेंगे। ....पिछाड़ी में फिर यह सभी पार्ट चलेगा। (मु०7.9.71 पृ०3 अंत)

• जैसे आदि में साकार की लीला देखी ऐसे ही अंत में भी होगी। सिर्फ अभी एडीशन शिवशक्ति स्वरूप का भी साक्षात्कार होगा। फिर भी साकार पिता तो ब्रह्मा है ना। तो साकार रूप में आए हुए बच्चे बाप को देखेंगे और अनुभव ज़रूर करेंगे। (अ०वा०18.1.82 पृ० 256 आदि)

• जो आदि में सैम्पल था वह अन्त में प्रैक्टिकल स्वरूप होगा। संकल्प की सिद्धि का साक्षात्कार होगा। (अ०वा० 22.11.72 पृ० 376 मध्य)

• शुरू से लेकर इस समय तक जो नाटक शूट हुआ है उनको फिर रिपीट करना है। (मु०ता० 3.1.74 पृ०1 मध्यादि)

• एक बार जो शूटिंग हुई वही फिर देखेंगे। (मु०ता० 28.2.68 पृ०3 मध्यांत)

सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स

• सभी आते रहते हैं। बीच में जाना तो एक को भी नहीं है। जाना सभी को इकट्ठा ही है, भल सृष्टि खाली तो नहीं रहती है। ... रावण सम्प्रदाय जाते हैं तो फिर लौट नहीं आते हैं। बाकी यह बच जाते हैं। (मु०16.4.68 पृ०2 अंत)

• नाटक के पिछाड़ी में वंडरफुल पार्ट होते हैं ना। .... जिनमें ज्ञान नहीं है वह तो वहाँ ही बेहोश हो जावेंगे। (मु०30.5.72 पृ०3 अंत)

• बाबा तो मुख्य बड़े–2 के नाम लेंगे ना। ल०ना०, राम–सीता, इस्लामी, बौद्धी सभी वर्थ नॉट ए पैनी हैं। (मु०18.2.73 पृ०3 आदि)

• तुम बच्चे अब बाप द्वारा सभी जान गए हो। बाकी जो भी मनुष्य हैं उनको यह पता नहीं कि सृष्टि–चक्र कैसे फिरता है, कब आरम्भ होता है, कब अंत होती है। इसको तुम बच्चे ही जानते हो नम्बरवार। (मु०18.2.73 पृ०1 आदि)

• जब पूरा दुर्गति को पाने का पूरा ग्रहण लगे तब बाप फिर 16 कला सम्पूर्ण बनाने आते हैं। ग्रहण को स्वदर्शन चक्र से निकाला जाता है। (मु०25.11.72 पृ०2 अंत)

• भल करके यह जन्म अच्छा है। आगे का जन्म तो अजामिल जैसा होना चाहिए। बाप कहते हैं मैं पतित दुनिया, पतित शरीर में प्रवेश करता हूँ, जो पूरे 84 जन्म भोग तमोप्रधान बने हैं। भल इस समय अच्छे घर में जन्म है; क्योंकि फिर भी बाबा का रथ बनना है। (मु०5.4.72 पृ०2 आदि)

• चक्रधारी नहीं तो छत्रधारी भी नहीं। .... चक्रधारी सदैव माया के अनेक प्रकार के चक्रों से मुक्त होगा। (अ०वा०18.9.75 पृ०1 आदि)

• जो संगमयुग में नहीं वो दिन–प्रतिदिन तमोप्रधान बनते ही जाते हैं। उस तरफ तो तमोप्रधानता बढ़ती जाती है, उस तरफ तुम्हारा संगमयुग पूरा होता जाता है। यह समझने की बातें हैं ना। (मु०14.4.67 पृ०1 मध्यांत) [मु०15.4.75 पृ०1 मध्यांत]

•अभी तो मृत्युलोक है। यह मृत्युलोक खत्म हो जावेगा, फिर सतयुग ज़रूर आवेगा। यह चक्र फिरता ही आवेगा। (मु०12.8.73 पृ०4 मध्यादि) [मु०5.5.78 पृ०3 अंत]

• पार्टधारी एक्टर्स होते हुए भी ड्रामा के क्रियेटर, डायरैक्टर, आदि–मध्य–अंत को नहीं जानते तो वह फर्स्ट क्लास ह्युमन ईडियट है। लिखने में कोई हर्जा नहीं है। (मु०3.2.71 पृ०3 अंत) [मु०14.8.76 पृ०3 मध्य]

•पुरुषोत्तम वर्ष, पुरुषोत्तम मास, पुरुषोत्तम दिन भी इसी पुरुषोत्तम संगम पर ही होता है। पुरुषोत्तम बनने की पुरुषोत्तम घड़ी भी इस पुरुषोत्तम संगमयुग में है। यह बहुत छोटा लीप युग है। (मु०ता० 4.5.74 पृ०2 मध्य) [मु०ता० 8.4.89 पृ०2 आदि]

• इस एक्स्ट्रा समय का भी रहस्य है। पीछे आने वाले उलाहना न दें कि हमें बहुत थोड़ा समय मिला। जैसे सौदे के पीछे एक्स्ट्रा रूंग(घात) दी जाती है– वैसे ड्रामा अनुसार यह समय भी सेवा के प्रति अमानत रूप में मिला हुआ है। (अ०वा०16.1.79 पृ०221 आदि)

•तुम्हारा यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह युग बहुत छोटा होता है। इनमें ही बाप आते हैं पढ़ाने के लिए। आने से ही पढ़ाई शुरू हो जाती है। (मु०ता० 8.3.69 पृ०1 आदि) [मु०ता० 8.1.04 पृ०2 मध्य]

कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)

• क्राइस्ट तो बड़ा था। उसमें प्रवेश कर क्रिश्चियन धर्म स्थापन किया। छोटेपन में तो शरीर दूसरे का था। ....नानक में भी बाद में सोल ने प्रवेश कर सिक्ख धर्म स्थापन किया। (मु०15.8.72 पृ०3 आदि)

• जो–2 धर्मस्थापक होते हैं वो पहले–2 पवित्र होते हैं, फिर अपवित्र शरीर में प्रवेश कर धर्म स्थापन करते हैं। जैसे गुरू नानक को तो बच्चे आदि थे, फिर उनसे प्योर आत्मा ने प्रवेश कर सिक्ख धर्म स्थापन किया। (मु०16.6.64 पृ०1 अंत) [मु०17.6.73 पृ०1 अंत]

• पहले–2 है डीटी डिनायस्टी। फिर इस्लामी, बौद्धी आते हैं अपना–2 धर्म स्थापन करने। .... बुद्ध धर्म तो पहले होता ही नहीं। ज़रूर यहाँ के कोई में प्रवेश करेंगे। (मु०23.3.68 पृ०2 मध्यादि)

• नई सोल प्रवेश कर मठ–पंथ स्थापन करती है तो उनका मान हो जाता है। (मु०29.7.73 रात्रिक्लास पृ०1 मध्यादि)

• सतोप्रधान आत्मा को सज़ा अथवा दुःख कैसे मिल सकता है? (मु०22.8.69 पृ०1 अंत)

• घोस्ट भी आकर प्रवेश करते हैं, तो वह आत्मा हुई न। घोस्ट अपना कर्तव्य करते हैं तो उनका फिर पार्ट बंद हो जाता। (मु०12.7.73 पृ०3 मध्य)

• तुम जानते हो क्राइस्ट कोई गॉड का बच्चा नहीं था, क्राइस्ट की आत्मा गॉड का बच्चा थी। (मु०ता० 22.10.77 पृ०3 आदि)

•हाँ धर्म स्थापक दूसरे के शरीर में आ सकते हैं। फिर उनका नाम होता है। पवित्र आत्मा आकर प्रवेश करेगी। जो है वह धर्म स्थापन नहीं करेगी। जो आत्मा प्रवेश करेगी वह स्थापना करेगी। सितम आदि पहली–2 आत्मा सहन करती है। (मु०ता० 11.12.77 पृ०2 आदि) [मु०ता० 9.12.87 पृ०2 आदि]

कन्वर्टेड हिंदू कौन?

• देवताएँ हिंदू बन गए हैं। हिंदू से फिर और–2 धर्म में कनवर्ट हो गए हैं। वो भी बहुत ही निकलेंगे। जो अपने श्रेष्ठ धर्म, श्रेष्ठ कर्म को छोड़कर थर्ड क्लास में जाकर प्रवेश हुए हैं वो भी निकल पड़ेंगे। पीछे थोड़ा समझेंगे, प्रजा में आ जावेंगे। देवी–देवता धर्म में सब थोड़े ही आवेंगे। सब अपने–2 सेक्शन में चले जावेंगे। (मु०12.1.67 पृ०2 अंत) [मु०13.1.75 पृ०2 अंत]

• भारतवासी ही लायक बनते हैं, और कोई नहीं। हाँ, जो और धर्मों में कनवर्ट हो गए हैं वो आ सकते हैं, फिर इसमें कनवर्ट हो जावेंगे, जैसे उसमें हुए थे। (मु०15.1.67 पृ०1 अंत)

• जो कनवर्ट हुए होंगे वह तो निकल आवेंगे। उनकी क्या फिकरात करनी है? आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाला, बहुत भक्ति करने वाला और धर्म में कनवर्ट हो जाए न सके। वह तो अपने धर्म में ही पक्के रहते हैं। कनवर्ट होते हैं कच्चे पिछाड़ी वाले। (मु०23.2.69 पृ०2 आदि)

• तो क्या यह गुरू लोग तुमको पारसबुद्धि बनावेंगे? वह तो प्रवृत्तिमार्ग को मानते ही नहीं। इनका धर्म ही अलग है। अपना आदि सनातन देवी–देवता धर्म भूल और–2 धर्मों में फँस पड़े हैं। (मु०28.4.68 पृ०2 अंत)

• सभी धर्म वालों से देवता धर्म वालों की आदमशुमारी जास्ती होगी; परंतु वह कन्वर्ट हो गए हैं। ...... इसलिए थोड़ी संख्या हो जाती है। यह भी ड्रामा। इसमें समझने की बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। (मु०25.9.73 पृ०2 मध्य)

• हिंदुओं को मुसलमान लोग काफर कहते हैं; क्योंकि वो अपने धर्म को जानते ही नहीं हैं। कब किसी को मानेंगे, कब किसी को मानेंगे। बहुतों के पास जाते रहेंगे। क्रिश्चियन लोग कब किसी के पास जावेंगे नहीं। (मु०1.3.67 पृ०2 मध्यादि)

• मुख्य है ही 4 धर्म– डीटीज़्म, इस्लामिज़्म, बौद्धिज़्म, क्रिश्चियनिज़्म, बाकी फिर इनसे वृद्धि होती गई है। इन भारतवासियों को पता ही नहीं पड़ता हम किस धर्म के हैं। धर्म का मालूम नहीं है तो धर्म ही छोड़ देते। (मु०21.9.68 पृ०3 अंत)

• ढेर आत्माएँ हैं। एक–2 का थोड़े ही बैठ बतावेंगे। नटशैल में बताते हैं। कितनी डार–टारियाँ निकलते–2 झाड़ वृद्धि को पा लेता है। बहुत हैं जिनको अपने धर्म का पता ही नहीं है। (मु०26.9.68 पृ०3 मध्यांत)

• देखो कितने क्रिश्चियन, बौद्धी, मुसलमान बन गए हैं। उन्हों को ग्लानि की बातें सुनाय–2 अपने धर्म में खैंच लेते हैं। (मु०3.3.76 पृ०3 आदि)

• जो इस कुल का बनने वाला होगा वह तुम्हारी बातें सुनकर सोच में पड़ जावेगा। कहेंगे आपकी बात तो ठीक है। (मु०10.3.69 पृ०2 अंत)

• बहुत बच्चे हैं जो और–2 धर्मों में कनवर्ट हो गए हैं। वह फिर निकलकर अपने असल धर्म में आ जावेंगे। ... जो हिंदू से मुसलमान बनते हैं उनको शेख कहते हैं। शेख मुहम्मद। (मु०ता० 12.1.69 पृ०3 मध्य)

• भारत का आदि सनातन धर्म है नहीं। हिन्दू भी बहुत कम हैं, और–2 धर्मों में मिक्स हो गए हैं। नहीं तो सभी से जास्ती आदि सनातन देवी–देवता धर्म के होने चाहिए। (मु०ता० 23.9.71 पृ०2 मध्यादि)

विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने

• आगे चल मालूम पड़ता जावेगा कौन–2 इस कुल के हैं। जो और धर्मों में कन्वर्ट हो गए हुए हैं वह भी निकलते आवेंगे। (मु०26.3.70 पृ०3 मध्य)

• यह नॉलेज है ही भारतवासियों के लिए। भारतवासी ही पहले नम्बर में स्वर्ग के फूल थे। क्रिश्चियन वा मुसलमान आदि को फूल नहीं कहा जाता। (काँटें हैं क्या?) वह उस गार्डन के फूल नहीं हैं। वह तो आते ही हैं बाद में। (मु०13.4.69 पृ०1 अंत)

• यह वर्णन भी संगमयुग पर ही कर सकते हैं कि यह दैवी फूल है या आसुरी फूल है। फूल तो भिन्न–2 हैं; परंतु उनमें वैराइटी बहुत हैं। (मु०23.4.68 पृ०2 आदि)

•बाप कहते हैं समझदार देखना हो तो यहाँ देखो...। ... महा मूर्ख देखना हो या महा सुजान देखना हो तो यहाँ देखो। स्वर्ग में भी वह जावेंगे; परंतु प्रजा में जावेंगे। (मु०ता० 28.10.72 पृ०3 अंत) [मु०ता० 12.10.02 पृ०4 आदि]

• यह (विनाश) ज्वाला इस ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। लड़ाई शुरू यहाँ से ही हुई है। (मु०ता० 30.9.77 पृ०1 मध्य)

• बाप ...तो भारतवासियों अथवा बच्चों को ही कहते हैं। बच्चे ही तो ग्लानि करते थे। (मु०ता० 5.2.72 पृ०1 मध्यांत)

• दुश्मन भी तुम्हारे बहुत बनते हैं; क्योंकि तुम खुद कहते हो इस विनाश ज्वाला से यह सभी अनेक धर्म भस्मीभूत होने हैं। (मु०ता० 8.7.73 पृ०3 मध्य)

धर्मी कौन, विधर्मी कौन?

• तुम हो आदि सनातन देवी–देवता धर्म के पक्के। तुम्हारी बुद्धि में ऊँच ते ऊँच भगवान है। (मु०26. 2.68 पृ०1 मध्यादि)

• अपने घराणे का और प्रजा का अच्छी रीति मालूम पड़ जाता है। साहूकार प्रजा कौन बनेंगे, नम्बरवन देवताएँ कौन बनेंगे, समझ तो सकते हैं ना। तुमको सभी एक्युरेट साक्षात्कार होंगे– यह दास–दासियाँ प्रजा साहूकार होंगे। (मु०21.9.68 पृ०4 अंत)

• 84 जन्म नहीं लिए होंगे तो माया हरा देगी। .... आगे चल तुम बहुत देखेंगे। (मु०26.12.68 पृ०1 अंत)

• सन्यासी तो आते ही बाद में हैं। इस्लामी, बौद्धी के भी बाद में आते हैं। क्रिश्चियन से कुछ पहले आते हैं। (मु०17.11.74 पृ०2 मध्यादि)

• जो जिनकी पूजा करते हैं उस धर्म के वह हैं न। (मु०4.5.74 पृ०3 आदि)

• अभी बाहर से सभी को धक्का मिलता रहता है। कोई भी बात सुनते नहीं। जहाँ–2 बाहर वाले हैं सभी को भगाते रहते हैं। समझते हैं यह बहुत धनवान हो गए हैं। यहाँ वाले गरीब हो गए हैं। (मु०18.3.68 पृ०2 अंत)

• भारत में कोई भी आवेगा तो भारतवासी उनको पनाह देंगे। (मु०22.6.65 पृ०3 मध्यांत)

• दूसरे धर्म वाले आए, तो देखो बाप के सामने ही पार्टीशन हुआ ना। (मु०30.9.71 पृ०1 अंत)

• पहले–2 आदि सनातन देवी–देवता धर्म की आत्माएँ आती हैं थोड़ी, फिर पिछाड़ी में लायक बनते हैं पहले आने लिए। (मु०6.11.68 पृ०3 मध्यांत)

• दूसरे कोई धर्म वाले इतने उठावेंगे नहीं। उनकी बुद्धि और तरफ चली जावेगी। इतना कशिश ही नहीं होगी। (मु०17.10.72 पृ०2 मध्य)

• अधर्मी जो होते हैं वो अनराइटियस काम ही करते हैं। (मु०16.7.65 पृ०3 अंत)

• जो 84 जन्म लेने वाले न होंगे वह समझेंगे नहीं। (मु०13.7.71 पृ०2 मध्य)

• समझने वाले ही समझेंगे। न समझने वाले के लिए कहेंगे यह हमारे कुल का नहीं है। बिचारा भल वहाँ आवेगा; परंतु प्रजा में।(मु०21.10.75 पृ०3 आदि)

• पहले–2 जो भारत का देवी–देवता धर्म है, यह किसने स्थापन किया? ... मुख्य तो वह चाहिए। ... हेड को बुलाना पड़े। फिर उसके बाद इस्लामियों, बौद्धियों के मुख्य चाहिए। (मु०ता० 1.1.72 पृ०3 अंत, 4 आदि)

• पक्के हिंदू होंगे तो अपने आदि सनातन देवी–देवता धर्म को मानेंगे। (मु०19.8.67 पृ०3 मध्य)

[देखिए प्रकरण 'विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने' ऊपर से प्वा० नं० 2]

रावण कौन?

- सच खण्ड तो बाप ही स्थापन करेंगे। झूठ खण्ड रावण स्थापन करते हैं। रावण का रूप बनाते हैं, अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। किसको भी पता नहीं है कि आखरीन भी रावण है कौन? (मु०8.2.71 पृ०3 मध्य)

- अभी राम सम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय दोनों ही हैं। संगमुयग पर ही यह सभी होते हैं। (मु०16.4.68 पृ०2 अंत)

- रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले–2 घर में ही लड़ाई शुरू होती है। जुदा–2 हो जाते हैं। आपस में ही लड़ मरते हैं। अपना–2 प्राविंस (ज़ोन) अलग कर देते हैं। (मु०8.8.68 पृ०3 मध्यांत)

- कोई भी विद्वान, शंकराचार्य आदि से पूछो रावण कौन है? कह देंगे यह तो (विकारों की) कल्पना है। जानते ही नहीं तो और क्या रिस्पॉण्ड देंगे! (मु०20.2.70 पृ०2 आदि)

- मनुष्यों के योग सिखलाने से तो स्वर्ग से नर्क बन गया। (मु०22.4.72 पृ०3 अंत)

- रावण आदि यह सभी नाम तो हैं ना। रावण बनाते हैं तो कितने मनुष्यों को बाहर से मँगाते हैं; परंतु अर्थ कुछ नहीं समझते। (मु०23.12.68 पृ०2 अंत)

- फिर दुर्गति कौन करता है? ज़रूर यह गुरू लोग ही करेंगे। (मु०24.8.70 पृ०1 अंत) [मु०24.8.74पृ०1अंत]

- ज़रा भी लड़ते–झगड़ते हैं तो नास्तिक समझो। बाप को जानते ही नहीं। वह जैसे क्रोध के रम्बे बन जाते हैं, वह आस्तिक नहीं ठहरा। भल कितना भी कहे हमारा बाप में प्यार है; परंतु ईश्वरीय कायदे के बरखिलाफ बात की तो रावण सम्प्रदाय का ही समझो। (मु०24.2.69 पृ०1 अंत)

- रावण के 10 सिर वाली आत्माएँ हर छोटी–सी परिस्थिति में भी कभी सहयोगी नहीं बनेंगी। क्यों, क्या, कैसे के सिर द्वारा अपना उल्टा अभिमान प्रत्यक्ष करती रहेंगी। ... बार–2 कहेंगे यह बात तो ठीक है; लेकिन यह क्यों, वह क्यों? इसको कहा जाता है कि एक बात के 10 शीश लगाने वाली शक्ति। सहयोगी कभी नहीं बनेंगे, सदा हर बात में ऑपोज़िशन करेंगे। तो ऑपोज़िशन करने वाले रावण सम्प्रदाय हो गए ना। (अ०वा० 3.4.82 पृ०339 मध्य)

- मनुष्यों से पूछो– आखिर रावण है कौन? कब से इनका जन्म हुआ? कब से जलाते हो? कहेंगे अनादि है। (मु०ता० 13.4.84 पृ०2 अंत)

- रावण जबसे आता है तो भक्ति भी उनके साथ है और जब बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान है। (मु०ता० 23.12.68 पृ०2 आदि)

- यह बेहद की बात है। रावण का राज्य सारी बेहद की दुनिया पर है। हद की लंका आदि की बात ही नहीं। (मु०ता० 18.7.69 पृ०1 मध्यांत)

- रावणराज्य है ना। न राम और राम की बायोग्राफी को जानते हैं। दिन–प्रतिदिन रावण की पाग बढ़ाते ही जाते हैं। (मु०ता० 20.2.72 पृ०2 अंत)

- पार करने वाला एक ही बाप है। तो ज़रूर कोई डुबोने वाले भी होंगे। वह गुरू नहीं हैं जो परमपिता परमात्मा से बेमुख करते रहते हैं। (मु०ता० 22.1.72 पृ०3 अंत)

- इसमें दुख देने वाला कौन है? ...बाप कहते हैं इन गुरुओं को तो पहले छोड़ो। ...बड़े–2 गुरु लोग सभी से बड़े काँटे हैं। परमात्मा को सर्वव्यापी कहना उनसे बड़ा काँटा कोई नहीं। बाप की सारी महिमा ही गुम हो जाती। (मु०ता० 27.1.73 पृ०1 मध्य)

- झूठ खंड स्थापन करने वाला है रावण। ... भक्ति सिखलाने वाले हैं अनेक गुरू लोग। ... सन्यासी उदासी बहुत प्रकार के गुरू लोग होते हैं। (मु०ता० 6.8.75 पृ०2 मध्यांत)

- रावण को जलाने का तो भारत में ही रिवाज़ है। और कोई जगह नहीं जलाते होंगे। ...सबसे जास्ती उत्सव मैसूर का महाराजा मनाते हैं। (मु०24.9.73 पृ०1 मध्यादि)

• बाप माना वर्सा। बेहद का वर्सा मिलता है। अभी वह रावण ने छीना हुआ है। (मु०ता० 16.9.73 पृ०3 आदि)

• बाप का भी जन्म है तो रावण का भी जन्म होता है। यह किसको भी पता नहीं है। (मु०ता० 8.4.71 पृ०2,3)

कामी इस्लामी

• रावण–राज्य तो ज़रूर खलास होना चाहिए ना। यज्ञ में भी प्योर ब्राह्मण चाहिए ना। (मु०11.1.66 पृ०4 मध्यादि)

• विकारी चढ़ न सके। छिपकर आए बैठते थे। कहते हैं वह पत्थर जाकर बना। अब ऐसे नहीं कि मनुष्य पत्थर वा झाड़ जाकर बनते हैं। पत्थरबुद्धि बन गया। (मु०7.9.68 पृ०1 अंत)

• कोई वैश्या है, भल जन्म अच्छे घर में ले फिर भी संस्कार अनुसार वह वैश्या(वैश्याओं) तरफ ही चली जावेगी। .... बड़े–2 आदमियों की गुप्त रहती है। ज्ञान में आने से भी तो संस्कार बदलते नहीं तो समझते हैं कि यह शायद वैश्या होगी। (मु०14.5.73 पृ०3 मध्य)

• बाहर से भल कितना भी लव करते हैं, अन्दर बिल्कुल डर्टी हैं। (मु०2.5.73 पृ०1 अंत)

• बाप कहते हैं जिनका बहुत मान है वह बड़े ते बड़ा भ्रष्टाचारी समझो। (मु०8.4.72 पृ०2 मध्यादि)

• इन सभी सितारों में जास्ती खातिरी होती है कुमारका की। (मु०रात्रि क्लास.25.9.64, 19.8.73 पृ०4 आदि)

• उस समय इस्लामी आए हैं तो उन बाहर वालों ने आकर हिन्दुस्तान नाम रखा है। (मु०22.2.74 पृ०1 आदि)

• शास्त्रों (में) फिर लिख दिया है श्राप दिया तो पत्थर बन गया। (मु०21.3.68 पृ०4 आदि) [मु०22.3.74 पृ०4 आदि]

• दिन–रात–दिन गुह्य से गुह्य सुनाते रहते हैं। नया कोई यह समझ न सके। भल 25 वर्ष से रहते हैं; परन्तु बहुत हैं इन गम्भीर बातों को समझते नहीं हैं। (मु०24.5.64 पृ०1 मध्यांत)

• बड़ा पद जो मिला है तो उसमें ही रहते हैं। (मु०25.1.68 पृ०2 अंत)

•इस्लामी देखो कितने काले हैं। इनकी भी फिर बहुत ब्रान्चेज निकलती रहती हैं। मुहम्मद तो बाद में आता है। पहले हैं इस्लामी। (मु०ता० 27.8.69 पृ०1 अंत) [मु०ता० 10.9.85 पृ०1 अंत]

• आगे मनुष्यों की बलि चढ़ती थी। वह भी गवर्मेंट ने बंद किया है। मनुष्यों के माँस को महाप्रसाद समझ बाँटते थे, वह फिर खाते भी थे। अभी बकरे का महाप्रसाद समझते हैं। (मु०ता० 8.11.68 पृ०3 अंत)

• माया बड़ी प्रबल है। ... कर्मेन्द्रियाँ धोखा बहुत देती है। ... आँख कर्म इन्द्रियाँ ही सभी से जास्ती धोखा देती हैं। (मु०ता० 10.7.69 पृ०1 आदि)

• बाप कहते हैं मैं एक–2 आत्मा को सकाश देता हूँ, सामने बैठ लाइट देता हूँ। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे। (मु०ता०12.4.68, 3.5.69 पृ०4 अंत)

•माया ऐसी है जो एकदम माथा ही खराब कर देती, हार्टफेल कर देती है। (मु०ता० 13.11.72 पृ०2 अंत) [मु०ता० 15.11.87 पृ०2 अंत]

• कोई सितारा बहुत तीखा होता है, कोई हल्का। कोई चंद्रमा के नज़दीक होते हैं। ...उन सितारों को देवता नहीं कह सकते। (मु०ता०26.9.68 पृ०2 अंत)

• मैं स्वर्ग स्थापन कर रहा हूँ तो माया भी अपना स्वर्ग दिखलाती है। टैम्पटेशन देती है। (मु०ता० 26.8.68 पृ०2 मध्य)

•माया भी बलवान है। इतनी बलवान है जो सारी दुनिया को वैश्यालय में डाल दिया है। (मु०ता० 2.1.69 पृ०1 मध्यादि) [मु०ता० 2.11.99 पृ०1 मध्यांत]

• माया के संग में इतना तो तुम गिर पड़े हो कि जिसने तुमको आसमान पर चढ़ाया उनको ही ठिक्कर–भित्तर में ले गए। (मु०ता० 17.8.68 पृ०1 अंत)

• माया भुलावेगी, परमपिता परमात्मा से विमुख करेगी। उनका धंधा ही यह है। जब से उनका राज्य हुआ है, तुम विमुख बनते आए हो। (मु०10.3.72 पृ०1 मध्यादि)

•बाप कहते हैं जितना मैं सर्वशक्तिवान हूँ, उतनी माया भी शक्तिवान है। आधाकल्प है राम–राज्य, आधाकल्प है रावण–राज्य। (मु०23.9.71 पृ०3 आदि) [मु०27.10.96 पृ०3 मध्य]

• यह बाप चला जावेगा। इनका क्रियाकर्म, सिरोमणि(सेरीमनी) आदि कुछ भी नहीं करना होता है। ...और सभी मनुष्यों की क्रियाकर्म करते हैं। (मु०13.9.67 पृ०2 आदि)

• अभी तो माया भी समझ गई है कि अब हमारा राज्य गया कि गया। ... वह भी ब्राह्मण आत्माओं से, श्रेष्ठ आत्माओं से वार करते–2 थक गई है। (अ०वा०ता० 14.12.97 पृ०80 अंत)

क्रोधी क्रिश्चियन

• शरीर को देखकर कहते हैं यह अमेरिकन है, यह फलाना है। (मु०16.9.68 पृ०1 अंत)

• क्रिश्चियन यहाँ से ही साहूकार बने हैं। क्रिश्चियन और कृष्ण की रास मिलती है। पिछाड़ी में फिर उनको आपस में लड़ाकर कृष्ण सभी कुछ ले लेते हैं। (मु०1.5.73 पृ०3 अंत)

• विलायत वाले इतने तमोप्रधान नहीं जितने कि भारतवासी हुए हैं। उन्होंने इतना सुख नहीं देखा है तो तमोप्रधान भी नहीं बने हैं। (मु०29.9.70 पृ०2 अंत)

• क्रिश्चियन का कनेक्शन कृष्ण की राजधानी से बहुत है। वह क्रिश्चियन लोग कृष्ण के(की) राजधानी से बहुत कमाते हैं। पहले कृष्ण की राजधानी को अपने हाथ में ले लेते। फिर देते हैं। कृष्ण कहें अथवा ल०ना० की राजधानी थी न। अभी वही क्रिश्चियन कृष्ण को राजधानी दे देंगे। ... बिल्ली नहीं, बंदर लड़ते हैं। (मु०16.6.73 पृ०1 अंत, पृ०2 आदि)

• क्रिश्चियन डिनायस्टी ने राज्य छीना फिर क्रिश्चियन डिनायस्टी से ही राज्य मिलना है। (मु०17.11.68 पृ०3 अंत)

• क्राइस्ट जब आया उनके पीछे उनकी आत्माएँ आती गईं। उन्हों के पास क्या था? कुछ भी नहीं। जंगल में नंगे रहते थे। पत्तों के कपड़े पहनते थे। उस समय विकार की चेष्टा नहीं रहती थी। (मु०1.3. 73 पृ०2 मध्यांत)

• शुरू में थोड़े ही इतने चित्रों आदि के छपाई का काम था। यह क्रिश्चियन लोग जब आए हैं तब से यह शुरू हुए हैं। (मु०27.8.68 पृ०2 अंत)

• क्रिश्चियन लोग ऐसे पक्के होते हैं जो कब दूसरा कोई का शास्त्र, किताब आदि हाथ में भी नहीं लेते। (मु०19.12.70 पृ०3 अंत)

• पहले–2 क्राइस्ट आदि यूरोप तरफ चले गए। (मु०26.7.71 पृ०1 अंत)

• आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं। (मु०5.5.68 पृ०1 मध्य)

• प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है। ... फिर बाबा भी पास करेंगे। (मु०13.6.72 पृ०2 अंत)

• क्रिश्चियन लोग और किसका लिटरेचर आदि लेते नहीं हैं। उनको अपने धर्म का नशा रहता है। बाप तो कहते देवता धर्म सबसे ऊँच है। वह समझते हमको इन क्रिश्चियन से बहुत मिलता है। (मु०25.11. 73 पृ०6 अंत)

• रमेश बच्चा सर्विस में सबसे तीखा है। कहाँ भी मिनिस्टर्स आदि के पास घुस जाता है। ... शंकर द्वारा विनाश भी होने ही वाला है। ... रमेश और ऊषा दोनों को सर्विस का बहुत शौक है। यह वंडरफुल सर्विसेबुल जोड़ी है। (मु०24.1.73 पृ०4 अंत, 5 आदि)

• क्रिश्चियन का भारत से कनेक्शन बहुत है। राजाई भी ली, फिर रिटर्न भी कर रहे हैं। उन्हों को तो भारत की बहुत सम्भाल करनी है। अगर भारत पर कोई चढ़ाई कर ले तो उन्हों के सब पैसे खतम हो जावें। ... इसलिए हर तरह की कोशिश करेंगे भारत को बचाने की। (मु०13.11.73 पृ०2 अंत)

• कहा भी जाता है– इसमें क्रोध का भूत है। ... इस समय सबसे पावरफुल यह क्रिश्चियन लोग हैं। (मु०ता० 10.12.83 पृ०1 अंत)

• अगर किस पर क्रोध करते होंगे तो डिस्ट्रक्टिव काम किया ना।....यह माँ–बाप की आबरु (इज़्ज़त) गँवाने वाले प्यादों की लाइन में आ जाते। (मु०ता० 3.1.78 पृ०3 अंत)

• क्राइस्ट की कृष्ण के साथ भेंट करते हैं। बुद्ध की नहीं। (मु०ता० 6.8.73 पृ०1 मध्य)

•राजाई तुमको ही मिलनी है; क्योंकि कनेक्शन है कृष्णपुरी और क्रिश्चियनपुरी (का)। इन्होंने कृष्णपुरी को क्रिश्चियनपुरी बनाया। कैसे राजाई ली? भारतवासियों को आपस में लड़ाकर। (मु०ता० 22.10.77 पृ०2 आदि) [मु०ता० 27.10.02 पृ०2 मध्य]

•अभी देखेंगे मनुष्यों में सर्वशक्तिवान क्रिश्चियन लोग हैं। वह सभी पर जीत पहन सकते हैं; परन्तु वह मालिक, यह तो कायदा नहीं। ... नहीं तो इन्हों की संख्या सभी से कम होनी चाहिए; क्योंकि लास्ट में हैं; परन्तु 3 धर्मों में यह धर्म सभी से तीखा है। सभी को हाथ कर बैठे हैं। ... इन द्वारा ही फिर हमको राजधानी मिलनी है। कहानी भी है 2 बिल्ले लड़ते हैं, मक्खन तीसरे को मिल जाता है। (मु०ता० 11.11.72 पृ०6 अंत) [मु०ता० 20.11.03 पृ०3 अंत, 4 आदि]

• हिन्दुओं को क्रिश्चियन बनाते हैं तो नन्स बहुत फिरती रहती हैं। (मु०ता० 28.9.91 पृ०2 मध्य)

•पैसा कमाने के लिए कुछ तो चाहिए न। फिर किस्म–2 के चित्र बैठ बनाए हैं। (मु०ता० 18.8.73 पृ०2 मध्यांत) [मु०ता० 8.8.93 पृ०2 अंत]

• जैसे बाबा रमेश की महिमा करते हैं– प्रदर्शनी विहंग मार्ग की सर्विस का नमूना अच्छा निकाला है। यहाँ भी प्रदर्शनी करेंगे। चित्र तो बहुत अच्छे हैं। (मु०ता० 17.12.73 पृ०3 अंत)

• बॉम्बे पहले क्या थी! 100 वर्ष में क्या हो गई है! ... समुद्र को सुखाया है। ....पानी जैसे कमती होता जाता है। (मु०ता० 20.9.77 पृ०2 अंत)

• वे क्रिश्चियन लोग तो एक ही भाषण में, ...कितने क्रिश्चियन बना लेते हैं। (मु०ता० 7.5.73 पृ०3 मध्यांत)

• क्रिश्चियन की बुद्धि पत्थरबुद्धि नहीं है, जितनी यहाँ वालों की है। वे सुख भी कम तो दुःख भी कम पाते हैं। ...उन्हों की न पारस बुद्धि, न पत्थरबुद्धि होती है। ...साइंस का प्रचार सारा इन क्रिश्चियन से ही निकला है। (मु०ता०11.4.68 पृ०2 मध्यांत)

•क्रिश्चियन लोग खुद भी समझते हैं– हमको कोई प्रेर रहा है, हम अपने ही विनाश के लिए बनाते हैं। कहते हैं हम ऐसे–2 बॉम्ब्स बना रहे हैं, जो एक दुनिया तो (क्या) 10 दुनियाओं को भी एक बम से खत्म करेंगे। (मु०ता० 23.3.68 पृ०4 आदि) [मु०ता० 12.3.99 पृ०3 अंत]

• बड़े प्रोग्राम प्रभावित करते हैं। नाम बाला होता है। एडवर्टाइज़ अच्छी हो जाती है। ...लेकिन छोटे स्थान और छोटे सेंटर्स या तो छोटे–2 स्नेह मिलन करो वा योग शिविर का छोटा–सा प्रोग्राम रखो। (अ०वा०31.1.98 पृ०119 अंत)

• अब यह पोप है क्रिश्चियन धर्म का बड़ा। (मु०ता० 16.11.73 पृ०2 अंत)

•यह भी समझानी है घोस्ट नाम बाइबिल में चला आता है। रावण माना घोस्ट। (मु०ता० 21.12. 73 पृ०2 आदि) [मु०ता० 16.11.83 पृ०1 अंत]

• इस समय बाहुबल भी है, योगबल भी है। ...यह तो दो क्रिश्चियन आपस में तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है; परंतु लॉ नहीं है। (मु०ता० 13.11.72 पृ०2 अंत)

•बाप कहते हैं मैं सदैव परमधाम का रहने वाला हूँ। यहाँ पुरानी दुनिया में आकर तुमको वर्सा देता हूँ। फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो। तब गाया हुआ है कि सद्‌गुरू का निंदक सूर्यवंशी राज्य में ठौर न पा सके। (मु०ता० 13.11.72 पृ०3 मध्यांत) [मु०ता० 15.11.87 पृ०3 मध्य]

{देखिए प्रकरण ' कन्वर्टेड हिंदू कौन? ' में ऊपर से प्वा० नं० 6}

लोभी मुस्लिम

• मुसलमान आदि सबको श्री–2 कहते हैं। (मु०25.2.68 पृ०3 आदि)

• मुसलमानों को 300/400 वर्ष हुआ होगा। इनके पहले नहीं कहेंगे कि घोर अंधियारा था। कोई खिटपिट न थी। अभी तो कितना घोर अंधियारा है। मुसलमान बहुत दूर थे (धनबाद में)। (मु०26.3.73 पृ०2 मध्य)

• भारत जो है उनका दुश्मन कोई नहीं है। यह तो दूसरे धर्म वाले आकर लड़ाते हैं। जैसे मुसलमान लोग आए, फूट डाल भारत को भी आपस में लड़ा दिया। (मु०28.11.65 पृ०5 मध्य)

• मुसलमानों का मजहबी पागलपना यह पुराना है। (मु०13.5.72 पृ०3 मध्यादि)

• भल कहते हैं हिंदू–मुस्लिम भाई–2; परंतु अर्थ नहीं समझते। (मु०12.6.68 पृ०3 आदि) [मु०14.6.74 पृ०3 आदि]

• हिंदू और मुसलमान मिले हुए हैं। (मु०16.2.74 पृ०4 अंत)

• भारत में तो हिंदू–मुसलमान दोनों पुराने रहते आते हैं। ये हैं पुराने दुश्मन। अब उन्हों को कौन भगावे? यवनों और कौरवों की तो लड़ाई है। (मु०12.7.64 पृ०2 मध्यादि) [मु०14.7.73 पृ०2 मध्यादि]

• मुसलमान कब आए? कितना वर्ष हुआ होगा? 5/6 सौ वर्ष समझो। (मु०19.6.72 पृ०1 आदि)

• मुसलमानों के बहुत हैं। अमरीका में कितने साहूकार हैं। सोने, हीरों की खानियाँ हैं। जहाँ बहुत धन देखते हैं तो उस पर चढ़ाई कर धनवान बनते हैं। (मु०ता० 27.8.69 पृ०1 अंत)

•सोमनाथ का मंदिर बनाते हो। ... फिर उन्होंने लूटा भी अनेक मंदिरों को होगा। तो सारी बेहद की हिस्ट्री–जॉग्राफी को तुम जान गए हो। (मु०ता० 22.10.77 पृ०3 आदि) [मु०ता० 27.10.02 पृ०3 मध्य]

•देखो, मुहम्मद गज़नवी ने मंदिर को लूटा था ना। अगर उनको यह मालूम होता कि हमारे बाप का मंदिर है तो लूटेंगे थोड़े ही। (मु०28.10.72 पृ०3 आदि) [मु०12.10.02 पृ०3 मध्य]

•बाबा, हमें टूटी–फूटी रत्न भेज देते हैं। बहुत कट करते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा, हम अधिकारी हैं, जो रत्न मुख से निकलते हैं वह सभी हमारे पास आने चाहिए। (मु०ता० 10.3.72 पृ०2 अंत) [मु०ता० 29.3.02 पृ०3 मध्य]

मोही महर्षि

• लड़ाई तो है ही कौरवों और यवनों की। (मु०26.2.71 पृ०2 अंत)

• आर्य समाजी और मुसलमान दोनों कट्‌टर होते हैं। (मु०2.6.71 पृ०3 आदि)

• वहाँ लड़ाई शुरू हुई और यहाँ यवनों–कौरवों की लग जावेगी। (मु०14.5.72 पृ०3 मध्यांत)

• 60/65 वर्ष आगे यह कुछ न था। (मु०29.9.73 पृ०2 अंत)

• जो सुधरेली आर्य थे वही अभी अनसुधरेली बने हैं। ... बाकी वह जो आर्य–समाजी हैं वह तो मठ–पंथ है। (मु०18.3.68 पृ०1 मध्य)

• गवर्मेंट को लाख–दो की मदद करते हैं तो फिर महाराजा का टाइटल मिल जाता है। वो गवर्मेंट भी टाइटल देती थी– राय साहब, रायबहादुर आदि। यह टाइटल बिकते थे। (मु०9.10.73 पृ०3 अंत, 4 आदि)

• राजा लोग भी प्रजा से कर्जा लेते हैं। अभी देखो, प्रजा साहुकार है, गवर्मेंट कंगाल है, लोन लेती है। सतयुग में भी ऐसा होता है। जो पिछाड़ी में राजा–रानी बनते हैं उनसे प्रजा बहुत साहूकार होती है। (मु०2. 6.73 पृ०3 अंत)

• महाराजा का टाइटल तो गया, फिर भी चाहे तो कांग्रेस को लाख–दो देवे तो टाइटल कायम हो सकता है। (मु०12.6.74 पृ०3 अंत)

• महर्षि भी कहते, खाओ–पिओ, मौज करो, यह सभी आदत आपे ही मिट जावेंगी। अभी सिवाय योग की(के) तो कब कोई आदत मिट नहीं सकती। मिटाने वाला तो ज़रूर चाहिए ना। (मु०8.4.69 पृ०1 मध्यादि) [मु०16.3.74 पृ०1 मध्यादि]

•

• जो अच्छा पहले नम्बर वाला शंकराचार्य होगा वह थोड़े ही भक्ति करता होगा। यह तो भक्ति करते हैं। पहले गवर्मेंट सर्वेंट था, अभी गद्दी मिली हुई है। (मु०28.1.68 पृ०3 अंत)

• आर्यसमाजी शास्त्र बहुत पढ़ते हैं। ... आर्यसमाजी किताब बाँटते हैं ना। (मु०25.2.73 पृ०2 आदि, 3 अंत)

•कितनी झूठ ठगी लगी पड़ी है। महर्षि आदि का कितना नाम है। ... कोई धर्म को मानते ही नहीं। कहा जाता है रिलीजन इज़ माइट। ... अभी भारत में कोई माइट है नहीं।(मु०ता० 28.12.68 पृ०3 मध्यादि) [मु०2. 12.84 पृ०3 मध्यादि]

•बहुतों की बीमारी उथल पड़ती है। मोह जो नहीं था वह भी प्रगट हो जाता है। फँस मरते हैं। ...आर्य समाजी भी हैं हिन्दू। सिर्फ मठ–पंथ अलग कर दिया है।(मु०ता० 24.1.68 पृ०2 अंत, 3 मध्यादि) [मु०ता० 29. 1.04 पृ०3 मध्य–अंत]

• हर एक अपने धर्म की बड़ाई करते हैं। हिंदू धर्म वाले ही हैं जो अपने धर्म को नहीं जानते हैं। इसलिए बाप कहते हैं कि इररिलीजियस हैं। धर्म में ही ताकत है। ...जैसे आर्य समाजी हैं। अभी दयानन्द को कितना समय हुआ? पिछाड़ी के छोटे–2 टार–टारियाँ हैं। जैसे मच्छर जन्मते हैं और मरते हैं। लायक नहीं है। शो तो करते हैं ना। (मु०ता०6.8.73 पृ०1 मध्यांत)

• गवर्मेंट तो कोई धर्म को मानती नहीं। खुद भी मूँझ गए हैं। (मु०ता० 16.2. 74 पृ०2 मध्यांत)

•काँग्रेसियों ने फिरंगियों को निकाला तो राजाओं से भी राजाई छीन ली। राजा नाम ही गुम कर दिया है। (मु०ता० 11.1.73 पृ०2 मध्यादि) [मु०ता० 10.1.93 पृ०2 आदि]

• आर्य समाजी लोग देवताओं के चित्रों को नहीं मानते हैं। तुम्हारे पास चित्र देखते हैं तब ही बिगड़ते हैं। (मु०ता० 5.11.71 पृ०2 मध्य)

• यज्ञ में विघ्न पड़ते हैं; क्योंकि राजा–रानी तो कोई है नहीं। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। (मु०ता० 28.6. 78 पृ०1 अंत)

• यह है प्रजा का प्रजा पर राज्य। अनेक पंच हैं। नहीं तो 5 पंच होते हैं। यहाँ तो सब पंच ही पंच हैं। (मु०ता० 7.12.73 पृ०3 आदि)

• वहाँ वज़ीर तो होते ही नहीं। अभी राजाएँ न हैं तो वजीर ही वजीर हैं। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। (मु०ता०1.4.69 पृ०2 अंत)

•राजाई तो सब खतम हो जानी है, सबको उतार देंगे। फिर प्रजा का प्रजा पर राज्य होगा। कौरव राज्य सारी दुनिया में हो जावेगा। (मु०ता० 14.12.67 पृ०2 मध्यांत) [मु०ता० 13.12.85 पृ०2 अंत]

• मनुष्य तो समझते हैं– स्वर्ग–नर्क यहाँ ही है।(मु०ता० 16.7.73 पृ०2 आदि)

• निमित्त इन्वेन्शन तो जगदीश ने किया। ऐसे ही शुरू से वरदान है इन्वेन्शन करने का। (अ०वा०15.2.00 पृ०84 मध्य)

अहंकारी रशियन्स

• रशिया और अमेरिका (अहंकारी और क्रोधी रूपी) दो भाई हैं। इन दोनों के ही कॉम्पीटीशन है बॉम्ब्स आदि बनाने की। ... कहानी भी दिखाते हैं दो बिल्ले आपस में लड़े, मक्खन बीच में तीसरा खा गया। (मु०22.10.68 पृ०2 आदि) [मु०23.10.74 पृ०2 आदि]

• योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश। (मु०11.2.68 पृ०2 मध्यांत)

•इस समय यह अमेरिका, रशिया आदि जो हैं, यह सभी माया का भभका है। ... 100 वर्ष में यह सभी हुए हैं। ...यह है रुण्य के पानी मिसल राज्य। इसको माया का पॉम्प कहा जाता है। ... देह अहंकार तोड़ना चाहिए। (मु०ता०21.3.72 पृ०2 अंत, 3 मध्यांत) [मु०ता०20.3.07 पृ०3 मध्य–अंत]

• 60–65 वर्ष आ(गे) यह कुछ न था। ... साइंस का घमण्ड 100 वर्ष हुआ है। (मु०ता० 29.9.73 पृ०2 अंत)

• दिन–प्रतिदिन कितनी खिटपिट है। एक/दो के कितने दुश्मन हैं। घर बैठे ही एक/दो को उड़ा देंगे। (मु०3.1.67 पृ०1 मध्यांत)

• योगबल से होती है स्थापना। बाहुबल से होता है विनाश। (मु०ता० 8.3.69 पृ०2 मध्यांत)

•नास्तिक उनको कहा जाता है जो न बाप को, न रचना के आदि–मध्य–अंत को, ड्युरेशन को भी नहीं जानते हैं। (मु०ता० 22.7.68 पृ०3 आदि) [मु०ता० 3.7.04 पृ०3 मध्य]

•देह–अभिमान में आया तो समझो वह नास्तिक है। ... ज़रा भी लड़ते–झगड़ते हैं तो नास्तिक समझो। ... नास्तिक वर्सा थोड़े ही लेंगे। (मु०ता० 24.2.69 पृ०1 अंत) [मु०ता० 1.1.04 पृ०2 मध्यादि]

•उनके पास तो बाहुबल है भी सहज। रशिया और अमेरिका आपस में मिल जाएँ तो राज्य ले सकते हैं; परंतु ऐसा होता नहीं है। (मु०ता० 28.10.72 पृ०3 मध्य) [मु०ता० 12.10.02 पृ०3 अंत]

•आगे तो सुनते थे रशिया से ज़ार आता है। चढ़ाई करेंगे तो डर जाते थे। अभी तो राजाओं को उतारते ही रहते हैं। पंचायती राज्य हो जाता है। (मु०ता० 14.12.67 पृ०2 अंत) [मु०ता० 13.12.85 पृ०2 अंत]

यादव-कौरव-पाण्डव

• तुम कितना भी समझाओ, बुद्धि में बैठेगा नहीं। उन्हों को बाप से प्रीति रखनी नहीं है। इसलिए गायन है कौरवों की विपरीत बुद्धि, पाण्डवों की है प्रीति बुद्धि। (मु०18.11.74 पृ०3 अंत)

• पाण्डव उनको कहा जाता है जो बाप को जानते हैं, बाप से प्रीत बुद्धि हैं। कौरव उनको कहा जाता है जो बाप से विपरीत बुद्धि हैं। (मु०25.12.68 पृ०2 मध्य)

• बाप कल्प–2 आए समझाते हैं। कल्प पूर्व समान समझा रहे हैं। कौरव–पाण्डव दिखाते हैं ना। पाण्डव–कौरव भाई–2 दिखाते हैं। दूसरे गाँव वा देश के नहीं हैं। (मु०20.4.72 पृ०2 आदि)

• एक है यादव मत, दूसरी कौरव मत और यह फिर है पाण्डव मत। पाण्डवों को मिलती है ईश्वरीय मत। (मु०25.5.78 पृ०2 मध्यादि)

• यादव हैं मूसल इन्वेंट करने वाले और कौरव–पाण्डव भाई–2 थे। वह आसुरी भाई, यह दैवी भाई। यह भी आसुरी थे। उन्हों को बाप ने ऊँच बनाकर दैवी भाई बनाया है। (मु०2.11.78 पृ०1 अंत)

- पाण्डव और कौरव यह हैं संगमयुग पर। तुम पाण्डव संगमयुगी हो, कौरव कलियुगी हैं। (मु०19.6.70 पृ०1 अंत)
- पाण्डव सेना में कौन–2 महारथी हैं और कौरव सेना में कौन–2 महारथी हैं? तुम दोनों सेनाओं को जानते हो न। यह भी समझने की बातें हैं। (मु०18.4.73 पृ०4 आदि)
- पाण्डव थे गुप्त। यादव और कौरव प्रत्यक्ष थे। (मु०20.5.73 पृ०3 अंत)
- नाम भी है पाण्डव और कौरव दोनों भाई। वह रावण सम्प्रदाय, यह राम सम्प्रदाय। हैं तो एक ही गाँव के। (मु०7.9.73 पृ०3 मध्यांत)
- पांडवों को तीन पैर पृथ्वी के न मिलते थे। अभी का यह गायन है; परंतु यह किसको पता नहीं है कि वही फिर विश्व के मालिक बने। (मु०18.11.73 पृ०6 अंत)
- कौरव–पांडव भी थे। पांडवों तरफ खुद परमपिता परमात्मा मददगार था। (मु०2.10.71 पृ०1 मध्य)
- नौ रतन दिखाते हैं न। वह कौरव सम्प्रदाय के झूठे रतन। उनके भी नाम निकालेंगे। प्रेसिडेंट, प्राइम मिनिस्टर, होम मिनिस्टर कौरव सम्प्रदाय में कौन–2 बड़े हैं और फिर पाण्डव सम्प्रदाय में कौन–2 बड़े हैं। तो यह समझाना पड़े। (मु०27.12.73 पृ०4 अंत)
- कौरवों और पाण्डवों का अपना–2 झण्डा है। उनको अपनी राजाई, उनको अपनी राजाई है। वह प्रत्यक्ष राज्य है, वह गुप्त राज्य है।(मु०30.1.72 पृ०1 अंत)
- रक्त की नदियाँ यहाँ बहेंगी। यवनों और कौरवों की लड़ाई है। पाण्डव थोड़े ही लड़ते हैं। (मु०7.7.72 पृ०4 अंत)
- पांडवों का स्वयं परमात्मा सारथी था। (मु०20.2.71 पृ०4 आदि)
- अभी तो कौरव राज्य है। यह तो हिस्ट्रियों में भी लगा हुआ है कि पाण्डवों को कौरव बहुत हैरान करते थे; क्योंकि कौरव थे बहुत। पाण्डव थे थोड़े। शास्त्रों में तो बहुत बातें लिख दी हैं। तुम अभी प्रैक्टिकल में देखते हो। राज्य तो दोनों को है नहीं। बाकी कौरव सभा और पाण्डव सभा तो है ना। (मु०3.11.71 पृ०1 अंत)
- पाण्डवों का गायन है! सेवा करने में बहुत मजबूत रहे हैं; इसलिए वह मजबूत शरीर दिखाते हैं; लेकिन हैं मजबूत दिल वाले, मजबूत मन वाले। वह मन व दिल कैसे दिखाएँ? इसलिए शरीर दिखा दिया है। (अ०वा०21.10.87 पृ०99 अंत, 100 आदि)
- गाया हुआ है पाण्डवों को 3 पैर पृथ्वी के नहीं मिलते थे। बाप समर्थ तो उनको विश्व की बादशाही दे दी। अभी भी वही पार्ट बजेगा ना। (मु०25.3.71 पृ०3 आदि)
- एक तरफ हैं अंधे की औलाद अंधे। लाठी के लिए चिल्लाते हैं। दूसरे तरफ हैं पाण्डव, जो चिल्लाते नहीं हैं। उन्हों की तरफ साक्षात् परमपिता परमात्मा है जो रास्ता बताते हैं। (मु०14.10.66 पृ०1 मध्य)
- शास्त्रों में भी है कि कौरव–पाण्डव दिन में लड़ते थे, रात को खीरखण्ड हो जाते हैं। सोचते थे हमारे में तो क्रोध का अंग(अंश) आ गया। बाबा, हम आपसे माफी माँगते हैं। (मु०17.2.78 पृ०2 अंत)
- पांडव अर्थात् सदा मजबूत रहने वाले, इसलिए पाण्डवों के शरीर लम्बे–चौड़े दिखाते हैं, कभी कमज़ोर नहीं दिखाते। आत्मा बहादुर है, शक्तिशाली है, उसके बदले में शरीर शक्तिशाली दिखाए हैं। पाण्डवों की विजय प्रसिद्ध है। कौरव अक्षौहिणी होते भी हार गए और पाण्डव पाँच होते भी जीत गए। क्यों विजयी बने? क्योंकि पाण्डवों के साथ बाप है। पांडव शक्तिशाली हैं, आध्यात्मिक शक्ति है; इसलिए अक्षौहिणी कौरवों की शक्ति उनके आगे कुछ भी नहीं है। ऐसे हो ना! कोई भी सामने आए, माया किसी भी रूप में आए तो भी वह हार खाकर जाए, जीत न सके। इसको कहते हैं विजयी पांडव। माताएँ भी पांडव सेना में हो ना। ... जो कमज़ोर होता है वह घर में छिपता है, बहादुर मैदान में आता है। (अ०वा०3.2.88 पृ०249 अंत)

• कौरव गवर्मेंट और पाण्डव गवर्मेंट दो हैं ना। सतयुग में तो एक ही गवर्मेंट होती है। तो अब यह पांडव गवर्मेंट है नई। वो तो एक ही कांग्रेस गवर्मेंट है। जब कांग्रेस गवर्मेंट शुरू हुई है तो पांडव गवर्मेंट भी शुरू हुई है। (मु०4.2.67 पृ०1 मध्य)

• पांडवों को देश निकाली मिली थी (निकाला मिला था) तो यह गऊशाला बनी न। (मु०17.5.73 पृ०3 अंत)

• पांडवों के चित्र कितने बड़े–2 हैं। इनका मतलब है यह इतने बड़े विशाल बुद्धि थे, उन्हों की बुद्धि विशाल थी। इन्होंने फिर शरीर को बड़ा बना दिया है। (मु०10.3.69 पृ०2 अंत, 3 आदि)

•यह है गुप्त पांडव गवर्मेण्ट, कोई को भी पहचान में नहीं आ सकती। बाप भी गुप्त, ज्ञान भी गुप्त। (मु०13.3.71 पृ०2 मध्यांत) [मु०10.4.86 पृ०2 मध्य]

• तुम हो पांडव सम्प्रदाय। पांडवों का राज्य नहीं था, न कौरवों का राज्य है। (मु०ता० 29.7.70 पृ०2 आदि)

• कौरव तो कलियुग में थे। कौरव और यादवों के समय श्रीकृष्ण कैसे आ सकता! (मु०ता० 16.2.74 पृ०1 अंत)

• गीता में है ना भारतवासी कौरव, पाण्डव क्या करत भये? बरोबर इन्होंने मूसल निकाले, अपने कुल का विनाश किया। यह सब आपस में दुश्मन हैं। (मु०ता० 3.1.67 पृ०1 मध्यांत)

•वो हैं जिस्मानी पंडे, तुम हो रूहानी। इसलिए तुम्हारा नाम पाण्डव सेना गाया हुआ है। तुम सेना भी हो। पण्डे भी हो। रूहानी यात्रा पर ले जाते हो। तुम्हारी यह पाण्डव गवर्मेंट है; परन्तु गुप्त। पाण्डव गवर्मेण्ट, कौरव और यादव गवर्मेण्ट क्या करत भये? यह इस समय की बात है जबकि महाभारत की लड़ाई का समय भी सिर पर है। (मु०11.4.67 पृ०1 अंत, 2 आदि) [मु०1.5.85 पृ०2 आदि]

• यादव, कौरव, पाण्डव किसको कहा जाता है तुम प्रैक्टिकल में देखते हो। यूरोपवासी यादवों ने मूसल निकाले, विनाश हुआ। (मु०7.10.71 पृ०3 अंत)

• साँग बनाते हैं ना। ...पेट से मूसल नहीं, यह बुद्धि से मूसल निकाल रहे हैं, जिससे अपना ही विनाश करेंगे। कौरवों–पाण्डवों की लड़ाई है नहीं। ....तुम हो वैष्णव। लड़ाई होती है यवनों और हिन्दुओं की, जिससे रक्त की नदियाँ बहती हैं। पाण्डव हिंसक लड़ाई कर न सकें। (मु०ता० 14.4.71 पृ०3 अंत)

• यूरोपवासी यादव, भारतवासी कौरव और पाण्डव। वह सभी एक तरफ हैं, इस तरफ दो भाई–2 हैं। ... कौरव और पाण्डव एक ही घर के थे। (मु०ता० 22.10.71 पृ०2 मध्यादि)

• कौरव–पाण्डव इकट्ठे रहते हैं। भाई–2 हैं ना। (मु०11.3.67 पृ०3 आदि)

• सर्व का सद्गति दाता जो बाप है उनको हम जान गए हैं। ... वह हैं मैजॉरिटी, तुम्हारी है मैनॉरिटी। जब तुम्हारी मैजॉरिटी हो जावेगी तब उन्हों को भी कशिश होगी। (मु०ता० 28.9.68 पृ०3 अंत)

• पांडव गाया हुआ है सदा विजयी। (अ०वा० 25.11.01 पृ०2 आदि)

• तुम्हारी बाप से प्रीत जुटी है तो बाप से वर्सा भी तुमको मिलता है। बाकी यादव–कौरवों की है विपरीत बुद्धि अर्थात बाप को जानते ही नहीं हैं। (मु०ता०17.8.73 पृ०1 मध्यादि)

युधिष्ठिर-ब्रह्मा

• युद्ध सिखलाने वाले का नाम युधिष्ठिर रखा है। (मु०26.7.71 पृ०3 आदि)

• यह है युधिष्ठिर के औलाद; क्योंकि बाप युद्ध के मैदान में आकर खड़ा कराते हैं। अंधे जब आकर सज्जा(सोझरे) बनें तब युधिष्ठिर के बच्चे बनें। (मु०12.2.69 पृ०2 मध्यांत) [मु०12.1.74 पृ०2 मध्यांत]

• मैंने तुमको इस युद्ध के मैदान में खड़ा किया है पाँच विकारों से लड़ने लिए। (मु०21.9.68 पृ०3 अंत, 4 आदि)

भीम-शंकर

- भीमसेन ने कीचकों को पकड़ा है। (मु०7.5.73 पृ०2 मध्यांत)
- भील बाहर रहने वाला अर्जुन से भी तीखा हो गया।(मु०4.1.74 पृ०2 आदि)
- लोगों को परखना और शक्तियों की रखवाली करना पांडवों का काम है। (अ०वा०19.6.69 पृ० 75 मध्य)
- तुम्हारी जैसी विशाल बुद्धि और कोई हो न सके।(मु०10.3.69 पृ०3आदि)
- यह नॉलेज तेरे सिवाय अन्य किसी की बुद्धि में नहीं है। (मु०11.2.73 पृ०2 मध्य)
- शंकर समान ज्वाला रूप बनकर प्रज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। (अ०वा०3.2.74 पृ०13 अंत)
- शेर सभी से तीखा होता है। जंगल में अकेला रहता है। हाथी हमेशा झुण्ड में रहता है, अकेला होगा तो कोई मार भी दे। (मु०4.3.73 पृ०3 मध्य)
- आधा में जाम, आधा में रैयत। (मु०21.3.68 पृ०4 मध्यांत)

अर्जुन-बुद्ध

- जापान में वह अपन को सूर्यवंशी कहलाते हैं। वास्तव में सूर्यवंशी तो देवी–देवताएँ ठहरे। (मु०29.1.70 पृ०1 अंत)
- अर्जुन के लिए भी कहते हैं न बहुत गुरू किए थे, शास्त्र आदि पढ़े थे। (मु०22.3.73 पृ०3 मध्यादि)
- बौद्ध धर्म की एक ने स्पीच की और 60/70 हज़ार को बौद्धी बना लिया। (मु०13.3.72 पृ०2 मध्य)
- बुद्ध का भी, इब्राहीम का भी हिसाब निकालते हैं। करके एक/दो जन्म का फर्क पड़ेगा। (मु०22.11.71 पृ०3 अंत)
- अर्जुन बहुत शास्त्र पढ़ा हुआ था, तो उनको कहा– यह भूल जाओ और पढ़ाने वाले को भी भूल जाओ। (मु०ता० 24.1.65 पृ०3 अंत)
- बौद्धी धर्म वाले तो बहुत हैं; परंतु उनमें भी मतभेद बहुत हैं। चीनियों की रसम अलग है, तो बुद्ध धर्म की अलग। चीन, जापान की लड़ाई बहुत लगती है। हैं तो एक ही धर्म के। (मु०ता० 16.11.73 पृ०2 आदि)
- बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है, वह तो आप जानते ही हैं। दीदी तो हैं, साथ में कुमारका मददगार है।(अ०वा०21.1.69 पृ०21अंत, 22 आदि)

नकुल-शंकराचार्य

- कोई की बुद्धि में बैठ जाता है तो समझेंगे यह दैवी कुल का है, न कुल का होगा तो समझेगा नहीं। हाँ, आखिर समय पर कहेंगे यह तो ठीक कहते थे। (मु०26.4.71, 25.4.73 पृ०4 मध्यादि)
- सन्यासी तो आते ही बाद में हैं। इस्लामी–बौद्धी के भी बाद में आते हैं। क्रिश्चियन से कुछ पहले आते हैं। (मु०17.11.74 पृ०2 मध्यादि)
- सन्यास धर्म के 2 करोड़ एक्टर्स हैं। (मु०29.3.72 पृ०2 अंत)
- अभी तुम सन्यासियों, राजाओं आदि को इतना उठाए नहीं सकेंगे। जनक, परीक्षित, संन्यासी आदि सभी पिछाड़ी में ही आए हैं। उनको ज्ञान देंगे तो प्रजा निकल आवेगा। (मु०17.10.72 पृ०3 मध्यांत) [मु०18.10.77 पृ०3 अंत]

- शंकराचार्य आदि यह सब भक्त हैं ना। उन्हों को कहेंगे पवित्र भक्त। भक्ति कल्ट तो है ना। जो पवित्र रहते हैं, (उन्हों के) बड़े–2 अखाड़े बने हुए हैं। उनका मान कितना है। (मु०ता० 9.11.66 पृ०2 मध्य)
- सन्यासी एक तरफ पवित्र रह भारत को मदद करते हैं, दूसरी तरफ बाप से बेमुख कर देते हैं। (मु०ता० 20.2.83 पृ०3 अंत)
- कलियुगी गुरू लोग कह देते श्री–श्री 108 जगत गुरू। इसके लिए फिर बाबा ने समझाया है जब अपन को परमात्मा समझ अपनी पूजा बैठ कराते हैं तो उनको हिरण्याकश्यप कहते हैं। (मु०ता०18.8.73 पृ०2 आदि) [मु०ता०19.8.78 पृ०2 आदि]
- जिनको सन्यास धर्म में जाना है वह घर में ठहरेंगे नहीं। उनसे सन्यासी बनने का पुरुषार्थ ज़रूर होगा। (मु०ता० 7.1.87 पृ०2 अंत)
- सबसे जास्ती कुंभकरण कौन? जिन कुंभकरणों का मेला लगता है, जो अज्ञान नींद में सोए हुए हैं। (मु०ता० 7.1.87 पृ०1 मध्यादि)
- यह मुफ्त में खा–पी खलास कर देते हैं। जैसे मकर टिड्डी आए फसल को खा चले जाते हैं। यह साधु–संत भी मकर हैं। ...बाप समझाते हैं कि यह भक्तिमार्ग के अनेक गुरु हैं। (मु०ता०रात्रि क्ला.10.5.68 पृ०2 मध्य)
- इन सन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया ज़रूर है। ... यह सन्यास धर्म नहीं होता तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता। (मु०ता० 22.6.91 पृ०2 आदि)
- दिखाते भी हैं– कुमारियों ने बाण मारे हैं भीष्म पितामह आदि को। (मु०2.1.72 पृ०2 मध्यादि)
- इन भीष्मपितामह आदि को तो पिछाड़ी में ज्ञान मिलना है। (मु०5.2.72 पृ०2 अंत)

सहदेव-सिक्ख

- प्रवृत्ति मार्ग दूसरे नम्बर में गुरू नानक का चला है। पंजाब में महाराजा–महारानी भी हुए हैं। (रात्रि मु०9.8.73 पृ०1 अंत)
- सिक्खों की ही डिनायस्टी प्रवृत्ति मार्ग की होती है। और सब हैं निवृत्ति मार्ग वाले। छोटे–2 धर्म हैं। सिक्ख धर्म का अच्छा ही नाम है। गुरू नानक को अवतार मानते हैं। और कोई प्रवृत्ति मार्ग का अवतार सिद्ध ना है सिवाय गुरू नानक के। स्थापना कर फिर बादशाही ली है। (मु०9.10.73 पृ०4 मध्यांत)
- सिक्ख लोग अकाल तख्त पर बैठते हैं। समझते हैं वहाँ से हमको पुलिस नहीं पकड़ेगी; परंतु छोड़ेंगे थोड़े ही। जो बहुत ऊँच बनते हैं वही आकर नीचे भी गिरते हैं। (मु०6.12.71 पृ०3 अंत)
- सच्च खण्ड की स्थापना सिवाय बाप के कोई कर नहीं सकता। एक ही सच्चा बाप है, जिसकी महिमा बहुत गाई हुई है। पहले–2 है देवी–देवता धर्म, सेकिंड नम्बर में फिर है सिक्ख धर्म। इसलिए सिक्ख धर्म बहुत नया है; क्योंकि ब्रदर्स–सिस्टर्स हैं। (मु०10.8.73 पृ०2 मध्यांत)
- नानक ने भी कहा है ना– अमृत छोड़ विष काहे खाए। सिक्ख लोग कंगन पहनते हैं। वास्तव में है यह पवित्रता का कंगन। (मु०23.10.73 पृ०3 अंत)

कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स

- परमपिता परमात्मा आकर ब्राह्मण धर्म, सूर्यवंशी, चंद्रवंशी धर्म स्थापन करते हैं। (मु०13.11.72 पृ०3 मध्य)
- बड़ का झाड़ होता है। बीज कितना छोटा होता है। उनसे झाड़ कितना लंबा हो जाता है। ...बड़ का झाड़ कइयों ने न देखा होगा। ... अब उनका फाउंडेशन सारा सड़ गया है। ... झाड़ की अब जड़–जड़ीभूत अवस्था है। (मु०ता० 10.7.71 पृ०3 मध्य) [मु०ता० 27.7.91 पृ०2 अंत]

• 3 धर्मों की वृद्धि होती जा रही है। (मु०ता० 23.12.73 पृ०2 मध्यादि)

• क्रिश्चियन धर्म आया तो ऐसे कहेंगे तमोगुणी थे? नहीं, उनको भी सतो, रजो, तमो से पास करना है। (मु०ता० 18.11.72 पृ०3 आदि)

• सब मुख्य–2 आत्माएँ धर्म स्थापक आदि यहाँ ही हैं। (मु०29.9.78 पृ०1मध्यांत)

• दैवी धर्म का फाउंडेशन ही सड़ गया है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि फाउंडेशन था नहीं। ... प्रायः गुम है। (मु०5.12.71 पृ०2 मध्य) [मु०19.12.01 पृ०2 अंत]

• एक परमपिता परमात्मा ही... धर्म भी स्थापन करते हैं तो डिनायस्टी भी स्थापन करते हैं। वह तो धर्म स्थापन करने आते हैं। (मु०3.4.69 पृ०2 मध्यादि)

• ज्ञान में तो सिर्फ बीज को जानना होता है। बीज के ज्ञान से सारा झाड़ (बुद्धि में) आ जाता है। (मु०ता० 29.9.77 पृ०2 मध्यांत)

• बाप आकर समझाते हैं तुम असल देवी–देवता धर्म के हो। (मु०26.9.68 पृ०3 मध्यांत)

• क्राइस्ट भी क्रिश्चियन धर्म का प्रजापिता है न। जैसे यह प्रजापिता ब्रह्मा वैसे वह प्रजापिता क्राइस्ट, प्रजापिता बुद्ध। यह सब धर्म स्थापन करने वाले हैं। (मु०ता० 16.11.73 पृ०2 अंत)

• क्राइस्ट है तो वह फिर अंत में आवेगा। (मु०ता० 16.11.73 पृ०2 मध्यांत)

• बाप कहते हैं, मैं पहले छोटा ब्राह्मण धर्म स्थापन करता हूँ। फिर साथ में ब्राह्मणों को देवी–देवता बनाता हूँ। (मु०ता० 8.7.73 पृ०3 मध्यांत) [मु०ता० 27.6.93 पृ०3 अंत]

महाविनाश कब होगा?

• विनाश का सारा ताल्लुक तुम्हारी पढ़ाई से है। तुम्हारी पढ़ाई पूरी होगी और वहाँ लड़ाई शुरू होगी। (मु०18.1.71 पृ०3 अंत)

• अभी थोड़ी–2 आग लगेगी, फिर बन्द हो जावेंगे। .... विनाश के पहले बाप को याद करना है। ....राजधानी पूरी स्थापन हो जावेगी फिर विनाश होगा। (मु०5.9.71 पृ०3 अंत)

• जब पूरी स्थापना हो जाती है तब सभी धर्मों का विनाश हो जाता है। (मु०2.11.68 पृ०2 मध्यादि)

• जब तक सूर्यवंशी राजधानी तुम्हारी स्थापन न हुई है तब तक विनाश नहीं हो सकता। (मु०10.1.73 पृ०3 अंत)

• अभी पुरुषार्थ चलता रहता है। जब विनाश होगा फिर रेस बन्द हो जावेगी। (मु०17.1.74 पृ०3 मध्यांत)

• राजधानी स्थापन हो, बच्चों की कर्मातीत अवस्था हो तब फाइनल लड़ाई होगी। तब तक रिहर्सल होती रहेगी। (मु०10.1.73 पृ०3 अंत)

• एक तरफ पढ़ाई पूरी होगी और विनाश शुरू हो जावेगा। बाकी रिहर्सल तो होती रहेगी। (मु०8.3.73 पृ०4 आदि)

• जब कम्प्लीट दैवी गुण आ जावेंगे तब लड़ाई भी लगेगी। (मु०24.2.69 पृ०3 मध्य)

• जब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम लायक बन जावेंगे तो फिर पुरानी दुनिया का विनाश होगा। (मु.16. 5.71 पृ०3 आदि)

• आप विशेष आत्माएँ वा सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ अपने श्रेष्ठ स्टेज को देख नहीं पातीं। इतनी ही देरी है विनाश आने में। जब तक आप निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपनी सम्पूर्ण स्टेज का स्पष्ट साक्षात्कार हो जाए। अब बताओ विनाश में कितना समय है? (अ०वा०7.8.78 पृ०1 मध्यांत)

• स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात् विनाशकारियों को ऑर्डर मिलना है। जैसे समय समीप अर्थात् पूरा होने पर सूई आती है और घंटे स्वतः ही बजते हैं। ऐसे बेहद की घड़ी में स्थापना की सम्पन्नता अर्थात् समय पर सूई का आना और विनाश के घंटे बजना। तो बताओ सम्पन्नता में एवररेडी हो?
(अ०वा० 1.1.79 पृ०164 आदि)

• इस तरफ तुम्हारी स्थापना की तैयारी उस तरफ विनाश की तैयारी है। स्थापना हो गई तो विनाश ज़रूर होगा। ...बाप आया हुआ है ज़रूर स्थापना करेंगे। (मु०5.8.71 पृ०3 मध्य)

• ऐसा न हो, 2000 का हिसाब ही लगाते रहो। पुरुषार्थ का हिसाब अलग है और सृष्टि परिवर्तन का हिसाब अलग है। ऐसा नहीं सोचो कि अभी 15 वर्ष पड़ा है, अभी 18 वर्ष पड़ा है। 99वें में होगा, 88 में होगा... यह नहीं सोचते रहना। हिसाब को समझो। (अ०वा०20.1.86 पृ०179 अंत)

• तुम्हारा इम्तहान तब होगा जब तुम्हारी राजधानी पूरी स्थापन हो जावेगी। फिर और सब खत्म हो जावेंगे। (मु०13.2.68 पृ०1 मध्यांत)

• इस ज्ञान यज्ञ से ही यह विनाश ज्वाला निकली है। पूछते हैं– बाबा, विनाश में कितना समय है? बच्चे, यह तो समझने की बात है। ब्रह्मा की आयु भी पूरी ही है। (मु०27.6.72 पृ०4 मध्य)

• अगर पूछे विनाश कब होगा? बोलो, पहले अल्फ को तो समझो। (मु०ता० 24.2.69 पृ०3 आदि)

• अभी ... 8 वर्ष के अंदर हाहाकार हो जावेगा। हाय–2 करते रहेंगे। (मु०ता० 28.12.68 पृ०3 मध्य)

• विनाशकारी ग्रुप अब भी एवररेडी है, सिर्फ ऑर्डर की देरी है। ऐसे स्थापना के निमित्त बने हुए ग्रुप एवररेडी हो? क्योंकि स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात् विनाशकारियों को ऑर्डर मिलना है। (अ०वा०1.1.79 पृ०163 अंत, 164 आदि)

• विनाश होना है अचानक। पूछकर नहीं आएगा कि हाँ, तैयार हो? सब अचानक होना है। (अ०वा०ता० 23.2.97 पृ०30 मध्य)

• विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है, अचानक होना है। बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है। उस समय नहीं उलाहना देना कि बाबा, थोड़ा इशारा तो देते। अचानक होना है, एवररेडी रहना है। (अ०वा०ता० 3.4.97 पृ०57 मध्य)

विनाश किसका होगा?

• भारत में कौन बचेंगे? जो राजयोग सीखते हैं, नॉलेज लेते हैं वही बचेंगे। विनाश तो सबका होना है। (मु०20.1.71 पृ०2 आदि)

• जो ज्ञान नहीं लेते उनका विनाश हो जाता है। भक्तिमार्ग का विनाश, ज्ञानमार्ग वालों की स्थापना हो जाती है। वह सज़ाएँ भी खाते हैं। पद भी नहीं पाते। (मु०25.11.72 पृ०2 मध्य)

• जंगल को आग ज़रूर लगती है। गुलगुल बगीचे को कब आग नहीं लगती। (मु०11.2.68 पृ०1 मध्यादि)

• ऐसे मत समझना कि अभी एकदम खलास होनी है। तुम लोग विचार नहीं चलाते हो। .... पहले–2 इस्लामी जावेंगे। देखने में भी आता है वहाँ इस्लामियों का बहुत हंगामा है। पहले वह तो मरें। शुरू वहाँ से होना चाहिए। पीछे फिर बौद्धी, फिर क्रिश्चियन जाने चाहिए। हमको बादशाही क्रिश्चियन्स से ही मिलनी है। .... मुसलमान तो अभी के पड़ोसी हैं। वह हमारे साथ मरेंगे। (मु०13.2.73 पृ०2 मध्य)

• जैसे यज्ञ रचने के निमित्त ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बने, तो यज्ञ से प्रज्वलित हुई यह जो विनाश ज्वाला है, इसके लिए भी जब तक ज्वाला रूप नहीं बनते तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। (अ०वा०16.1.75 पृ०14 मध्य)

- विनाश तो होगा। सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी कौन बचेंगे? जो श्रीमत पर पवित्र रहते हैं वही बाप की मत पर चल विश्व की बादशाही का वर्सा पाते हैं। (मु०5.2.71 पृ०2 आदि)
- यह महाभारत लड़ाई तो नामीग्रामी है। गॉड फादर भी यहाँ है ज़रूर। वही ब्रह्मा द्वारा स्थापना कर रहे हैं स्वर्ग की। शंकर द्वारा विनाश भी होना है कलियुग का। (मु०24.10.71 पृ०2 आदि)
- आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो। उसको लंबा–2 झाड़ू दिया है, सफा करो। ... गोल्डन एज में यह सफाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफाई करेगी। (अ०वा० 13.2.99 पृ०55 मध्य, 56 मध्य)

महाभारत विनाश

- महाभारी महाभारत लड़ाई का समय अभी नहीं है। अभी तो गली–2 में सेंटर होना है। (मु०3.10.72 पृ०2 अंत)
- आपे ही कहेंगे यह तो वही महाभारत लड़ाई है। ज़रूर भगवान भी होगा; परंतु कौन है यह बिचारों को पता नहीं है। .... हैं ही ...धृतराष्ट्र के औलाद अंधे। (मु०12.2.69 पृ०2 मध्यांत) [मु०12.1.74 पृ०2 मध्य]
- तुम्हारी धर्मयुद्ध हुई है विद्वान–पंडितों के साथ। धर्मयुद्ध को लड़ाई नहीं कहा जाता। (मु०22.5.64 पृ०3 आदि)
- महाभारी महाभारत युद्ध भी है। शास्त्रों में नाम भी है, फिर उसको कहते हैं थर्ड वर्ल्ड वार। यह रिहर्सल होती रहेगी। फर्स्ट वर्ल्ड वार, सेकिंड वर्ल्ड वार, थर्ड वर्ल्ड वार, फोर्थ वर्ल्ड वार भी है। (मु०1. 7.73 पृ०1 अंत)
- कोई हिन्दू थोड़े ही आपस में लड़ेंगे। यह लड़ाई है ही यवनों और कौरवों की। (मु०6.10.65 पृ०6 मध्यादि)
- महाभारी लड़ाई में मेल्स का नाम है। (मु०25.1.67 पृ०2 अंत)
- कहेंगे, लड़ाई तो विलायत में भी होती है ना। फिर भी इसको महाभारत लड़ाई क्यों कहते हैं? भारत से ही निकलती है। भारत में ही यज्ञ रचा हुआ है। उससे यह विनाश ज्वाला निकलती है। तुम्हारे लिए तो नई दुनिया चाहिए ना। तो उसके लिए पुरानी दुनिया का ज़रूर विनाश ही करना पड़े। तो इस लड़ाई की जड़ ही यहाँ से निकलती है। इस रुद्र यज्ञ से महाभारत महाभारी लड़ाई की विनाश ज्वाला निकलती है। (मु०10.3.67 पृ०3 आदि) [मु०8.3.75 पृ०2 अंत]
- दिन–प्रतिदिन प्रकृति द्वारा विकराल रूप परिस्थितियाँ दिखाई देती जावेंगी। अब तक यह साधारण परिस्थितियाँ हैं। विकराल रूप तो अब प्रकृति धारण करेगी, जिसमें विशेष आपदाओं का वार अचानक ही होगा। (अ०वा०14.9.75 पृ०109 आदि)
- बहुत हैं जो टूट जावेंगे। थोड़ी आफतें आने दो फिर देखना, कैसे भागते हैं। तुम भागे हो ज्ञान के पिछाड़ी। ज्ञान न होता तो भागते थोड़े ही। तुम इनके पिछाड़ी थोड़े ही भागे हो। इसने जादू आदि कुछ नहीं किया। जादूगर शिवबाबा को कहते थे। (मु०6.11.71 पृ०3 आदि) [मु०5.11.76 पृ०2 अंत]
- बड़ी आफतें आनी हैं। मदद उनको मिलेगी जो बाप के बनेंगे। जो अच्छी रीति सर्विस करते हैं उनको अंत में सहायता भी मिलती है। (मु०19.5.72 पृ०3 अंत)
- आफतों आदि में घबराना नहीं चाहिए। अर्थक्वेक हो, तूफान लगे, मरते रहेंगे, घबराना नहीं है। यह तो होना ही है। धड़कना न चाहिए। बड़ी आफतें आवेंगी। उपद्रव मचेंगे। हाय–2 होगी। फिर जयजयकार होना है। (मु०8.7.73 पृ०4 अंत) [मु०8.7.78 पृ०3 अंत]

• आगे चल दुनिया की हालत बिल्कुल ख़राब होनी है। खाने के लिए अनाज नहीं मिलेगा तो घास खाने लगेंगे। फिर ऐसे थोड़े ही कहेंगे, माखन बिगर हम रह नहीं सकते। (मु०5.3.76 पृ०3 मध्यांत)

• जैसे प्रकृति के 5 तत्व विकराल रूप को धारण करेंगे वैसे ही 5 विकार भी अपना शक्तिशाली रूप धारण कर अंतिम वार अति सूक्ष्म रूप में ट्रायल करेंगे अर्थात् माया और प्रकृति दोनों ही अपना फुल फोर्स का अंतिम दाँव लगाएँगे। जैसे किसी भी स्थूल युद्ध में भी अंतिम दृश्य ह्रास पैदा करने वाला होता है और हिम्मत बढ़ाने वाला भी होता है, ऐसे ही कमज़ोर आत्माओं के लिए भी ह्रास पैदा करने वाला दृश्य होगा– मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के लिए वह हिम्मत और हुल्लास देने वाला दृश्य होगा। (अ०वा० 14.9.75 पृ०110 आदि)

• जब ब्रह्मा बाप समान सब कॉपियाँ तैयार हो जाएँगी तब बेहद का बारूद चलेगा, पटाखे छूटेंगे और ताजपोशी होगी। तो अब यह डेट फिक्स करो। जब आप सब ब्रह्मा बाप की बिल्कुल फोटो कॉपी होंगे तब ही यह डेट आएगी। (अ०वा०24.10.81 पृ०76 अंत)

• अभी टाइम बहुत थोड़ा है। लड़ाई थोड़ी छिड़ी तो फ़ैमिन हो जावेगा। (मु०27.6.72 पृ०4 अंत)

• जब नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब लड़ाई शुरू होगी। (मु०22.6.70 पृ०3 अंत)

• विनाश ज्वाला भी सामने है। ...... बरोबर यह वही महाभारत लड़ाई है। यह नामीग्रामी है। तो ज़रूर इस समय भगवान भी है। (मु०ता० 5.10.71 पृ०2 अंत) [मु०ता० 30.10.01 पृ०3 मध्य]

• महाभारत लड़ाई भी लिखी हुई है। ... इस ईश्वरीय ज्ञान यज्ञ में सारी सृष्टि स्वाहा हो जावेगी। (मु०ता० 15.9.71 पृ०2,3)

• इस महाभारत लड़ाई से ही (स्वर्ग के) गेट्स खुलने हैं। (मु०ता० 22.10.71 पृ०2 अंत) [मु०ता० 5. 11.96 पृ०3 आदि]

• कई समझते हैं यह तो सिर्फ कहते रहते हैं कि 'मौत आया कि आया।' होता तो कुछ नहीं। इस पर एक मिसाल भी है ना– उसने कहा शेर है, शेर; परन्तु शेर आया नहीं। आखिर एक दिन शेर आ गया, बकरियाँ सब खा गया। यह सब बातें यहाँ की हैं। एक दिन काल खा जाएगा। (मु०ता० 18.12.83 पृ०3 अंत) [मु०ता० 28.12.03 पृ०4 मध्य]

• अब तो बहुत ज़ोर से लगेगी। करके लड़ाई लग फिर बंद हो जावेंगे; क्योंकि जब राजाई भी स्थापन हो, कर्मातीत अवस्था भी हो ना। ... भंभोर को आग तो लगनी ही है। फटाफट विनाश हो जावेगा। इनको खूनी नाहक खेल कहा जाता है। नाहक सब मर जावेंगे। खून की नदी बहेंगी। फिर दूध की नदी बहेंगी। हाहाकार से फिर जयजयकार हो जावेगी। बाकी सभी अज्ञान अंधरे में सोते ही खत्म हो जावेंगे। (मु०ता० 10.2.69 पृ०3 आ) [मु०7.1.04 पृ०3 अंत]

• अब विनाश तो होना ही है। हंगामा हो जावेगा जो विलायत से फिर आ न सकेंगे। ज़बरदस्त लड़ाई लगेगी फिर वहाँ के वहाँ रह जावेंगे। 50–60 लाख देंगे तो भी मुश्किल आ सकेंगे। (मु०5.2.71 पृ०3 अंत)

• ऐसा विनाश करते हैं जो एकदम खत्म हो जाएँ। हॉस्पिटलें आदि तो रहेंगी नहीं जो दवाई आदि कर सकें। बाप जानते हैं बच्चों को कोई तकलीफ न होनी चाहिए। इसलिए गाया हुआ है नैचुरल कैलेमिटीज़, मूसलधार बरसात...। (मु०ता० 18.8.71 पृ०3 आदि) [मु०ता० 5.9.81 पृ०3 आदि]

• यहाँ ही बैठे–2 सुनेंगे और देखेंगे। हाँ, तुम बच्चों को यहाँ बैठे सा० भी हो सकते हैं कि कैसे आग लगती है, क्या–2 होता है। रेडियो में, अख़बारों में भी सुनेंगे। टी०वी० में भी देख सकते हो। आगे चलकर ऐसी–2 चीज़ें निकलेंगी जो घर बैठे दिखाई पड़ेगा। (मु०ता० 29.11.76 पृ०2,3) [मु०ता० 25.12.01 पृ०3 मध्य]

• बरसात, नैचुरल कैलेमिटीज़ आदि भी होंगी। यह भी अचानक होता रहेगा। ... धरती भी ज़ोर से हिलती है। तूफान, बरसात आदि सभी होता है। बॉम्ब्स भी फेंकते तो हैं ना; परंतु यहाँ एडीशनल है सिविल वार। (मु०21.7.69 पृ०3 मध्य) [मु०2.8.85 पृ०3 मध्य]

• अभी बाकी जो एटॉमिक बम रही पड़ी है वह भी तैयार कोहर(हो कर) बैठे हैं। सभी समझते हैं यह कोई रखने की चीज़ नहीं है, इनसे विनाश होना है ज़रूर। ... महाभारत लड़ाई लगी, 5 पांडव बचे...। वह भी गल मरे; परंतु इसकी रिज़ल्ट कुछ भी नहीं। (मु०23.2.68 पृ०3 मध्यांत) [मु०25.2.74 पृ०3 अंत]

• कोई कहाँ, कोई कहाँ विनाश होगा, तो होलसेल से मौत होगा। ...होलसेल महाभारत लड़ाई लगेगी। फिर सभी ख़त्म हो जावेंगे। बाकी एक खंड रहेगा। भारत बहुत छोटा होगा, बाकी सभी खलास हो जावेंगे। (मु०ता० 7.1.69 पृ०3 आदि) [मु०ता० 11.1.06 पृ०3 मध्य]

• हाहाकार बाद फिर जयजयकार होना है। ... कितनी हाहाकार करेंगे, जबकि नैचुरल कैलेमिटीज़ आदि आए। (मु०16.10.69 पृ०2 आदि) [मु०1.11.00 पृ०2 मध्य]

माला

• ऐसे नहीं कि पिछाड़ी में आने वाले माला का दाना नहीं बन सकेंगे, वह भी बनेंगे। (मु०21.2.69 पृ०1 मध्यांत)

• माला में ऊपर में हूँ मैं; फिर दो युगल हैं– ब्रह्मा–सरस्वती। वही सतयुग के महाराजा–महारानी बनने हैं। उन्हों की फिर सारी माला है जो नम्बरवार गद्दी पर बैठते हैं। मैं इस भारत को इन ब्रह्मा–सरस्वती और ब्राह्मणों द्वारा स्वर्ग बनाता हूँ। (मु०5.2.71 पृ०2 मध्य)

• जब ज्ञान कम्प्लीट हो जावेगा तो कोई अनन्य से भूल न होगा। तब माला के दाने बनेंगे। (मु०27.11.71 पृ०3 मध्यादि)

• शुरू में बाबा ने बड़ी युक्ति से पद बतलाए। अभी वह हैं थोड़े ही। अब तो फिर नए सिरे माला बननी है। (मु०27.3.70 पृ०3 अंत)

• वह शिवबाबा है फूल। उनको अपना शरीर नहीं है। ...माला शरीरधारियों की बनी हुई है। ...... माला हाथ में ले बैठ राम–2 कहते हैं। (मु०ता० 4.11.73 पृ०2 अंत)

• विष्णु की माला है। वह जोड़ा हुआ प्रवृत्ति मार्ग का विष्णु। (मु०ता० 7.11.72 पृ०3 अंत)

• आज अच्छे चलते हैं ....कल गिर पड़ते। तो माला बन न सके। आगे माला बनाते थे फिर 3–4 नं० में आने वाले आज हैं नहीं। यह युद्ध का मैदान है ना। (मु०ता० 29.9.77 पृ०2 अंत) [मु०ता० 5.9.02 पृ०3 मध्य]

• जोड़ियों की माला है। सिंगल की माला नहीं होती। सन्यासियों की माला होती नहीं। (मु०ता० 8.9.68 पृ०3 आदि)

• ऊँच ते ऊँच है बाप। उनकी माला। ऊपर में है रुद्र, वह है निराकार, फिर साकार ल०ना०, उनकी भी माला है। ब्राह्मणों की माला अभी नहीं बनती। ...इन बातों में जास्ती प्रश्न–उत्तर करने की भी दरकार नहीं। (मु०ता० 16.4.68 पृ०2 मध्यादि) [मु०ता० 20.4.89 पृ०2 आदि]

• माला तो बहुत बड़ी बनती है। उसमें 8, 108 अच्छी मेहनत करते हैं। (मु०ता० 7.8.67 पृ०2 मध्यादि)

रुद्रमाला

• पहले–2 रुद्रमाला वह बनेंगे जो निरन्तर याद करेंगे। (मु०13.8.73 पृ०2 आदि)

• यूँ तो सारी दुनिया रुद्रमाला भी है। प्रजापिता ब्रह्मा की भी माला है। (मु०25.2.68 पृ०1 अंत)

• तुमको रुद्रमाला में पिरोना है। .... यह है रुद्रमाला और ज्ञानी तू आत्माओं की माला। (मु०8.3.73 पृ०3 मध्यांत)

• जब शिवबाबा के दिल पर चढ़े तब रुद्रमाला के नज़दीक हों। (मु०10.11.73 पृ०1 अंत) [मु०14.11.78 पृ०1 मध्य]

• तुम जान गए हो कि सबसे अच्छा पार्ट उनका है जो पहले शिव की रुद्रमाला में हैं। नाटक में जो बड़े अच्छे–2 एक्टर्स होते हैं, उनकी कितनी महिमा होती है। सिर्फ उनको देखने लिए लोग जाते हैं। (मु०20.2.71 पृ०1 मध्यादि)

• विजयमाला के मणके बनना बड़ी बात नहीं है; लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना यही खुशनसीबी है। (अ०वा०20.5.74 पृ०47 आदि)

• रुद्रमाला है आत्माओं की माला और विष्णु की माला है मनुष्यों की। (मु०ता० 5.2.71 पृ०2 मध्य)

• तुम बच्चे जानते हो कि एक माला निराकार की। एक है साकार की। ...पहले–2 निराकार का सिजरा बनेगा। (मु०ता० 17.8.69 पृ०1 आदि)

• रुद्रमाला कितनी ज़बरदस्त है। उनकी भेंट में विष्णु की माला कितनी छोटी होगी। (मु०ता० 26.2.72 पृ०2 अंत) [मु०ता० 26.2.97 पृ०3 मध्य]

• पहले तो रुद्र की माला बनती है। ऊँच ते ऊँच बिरादरियाँ हैं। (मु०ता० 17.12.67 पृ०2 मध्यादि)

• श्लोक भी है ना...। सारी सृष्टि की आत्माएँ तुम्हारे में जैसे पिरोई हुई हैं। यह जैसे माला है। उनको बेहद की रुद्रमाला भी कह सकते हैं। सूत्र में बाँधी हुई हैं। (मु०ता० 22.7.68 पृ०2 मध्यांत) [मु०ता० 3.7.04 पृ०2 अं, 3 आदि]

• रुद्रमाला (के) बाद होती है विष्णु की माला। ... यह रुद्रमाला फिर विष्णु की माला में पिरोनी है यानी विष्णु के राज्य में जाते हैं। (मु०ता० 20.2.72 पृ०3 आदि)

अष्टरत्न व नौरत्न

• मुख्य हैं 8 दाने। इम्तहान तो बड़ा भारी है ना। बड़े इम्तहान में थोड़े पास होते हैं; क्योंकि गवर्मेंट को फिर नौकरी देनी पड़े। बाप को भी विश्व का मालिक बनाना पड़े। (मु०27.11.71 पृ०6 मध्य) [मु०26.11.76 पृ०3 मध्यादि]

• 8 दाना बनना कोई मासी का घर थोड़े ही है। करोड़ों में से 8 रत्न बनते हैं। भारत के(में) ही 33 करोड़ देवताएँ कहते हैं। अगर वह भी कहो तो 33 करोड़ में से 8 फुल प्रूफ निकलते हैं। ज़्यादा करके 108 तो बड़ी भारी मंज़िल है। (मु०26.7.72 पृ०4 मध्यांत)

• अष्ट रत्नों में सिर्फ शक्तियाँ हैं वा पांडव भी आ सकते हैं? जब भाई–2 हैं तो आत्मिक रूप की स्थिति में स्थित हुई आत्मा ही अष्ट रत्न बन सकते हैं। इसमें शक्तियों अथवा पांडवों की बात नहीं है, अपितु आत्मिक स्थिति की बात है। (अ०वा०18.6.73 पृ०101 मध्य)

• आठ रत्न बनते हैं तो ज़रूर 8 घंटा शिवबाबा को याद करते हों। (मु०17.4.68 पृ०4 मध्यांत) [मु०8.5.69 पृ०4 मध्यादि]

• वास्तव में 9 रत्न गाए हुए हैं। सिर्फ इन्होंने गुप्त मेहनत की होगी। (मु०9.2.68 पृ०1 अंत) [मु०6.2.74 पृ०1 अंत]

• 108 की माला चाहे कोई भी धर्म वाला हो सभी सुमिरते हैं। नौ रत्न की माला भी सुमिरते हैं; क्योंकि उन्होंने सभी पतितों को पावन बनाया है। सभी का कल्याण करने वाले हैं। इतनी तुम सर्विस करते तो इतना मगज भरपूर होना चाहिए। सभी धर्म वाले हमारी माला फेरते हैं। 108 की माला तो कॉमन है। 8 की भी माला क्रिश्चियन लोग उठाते हैं; क्योंकि तुम जो नौ रत्न हो अनन्य। (मु०12.9.73 पृ०3 आदि)

• गायन भी है नौ रत्न। ये कहाँ से आए? सो मनुष्य थोड़े ही जानते हैं। रत्न तो हैं ही, उन्हों को पुरुषार्थ कराने वाला सबसे बड़ा है बाबा। उनको बीच में रखते हैं। आठ रत्न हैं जो रुद्र की माला बनती(बनते) हैं। (मु०24.10.73 पृ०2 अंत)

• अष्ट में भी पहला नं० और आठवाँ नम्बर में क्या अंतर है? पूजते तो आठ ही हैं; लेकिन पूजा में भी अंतर, विजय में भी अंतर है। हरेक की विशेषता भी विशेष है और फिर जो कमी रह जाती है वह भी विशेष है, जिसके आधार पर फिर नं० बनते हैं। (अ०वा०27.5.77 पृ०177 मध्य)

• विशेष बॉम्बे और देहली में आदि रत्न ज़्यादा हैं। (अ०वा०29.11.78 पृ०84 अंत)

• मास्टर ज्ञानसूर्य अर्थात् बाप समान। सितारे होते हुए भी बाप समान स्टेज। वह तो अष्ट रत्न ही प्राप्त करेंगे ना। (अ०वा० 15.9.74 पृ०133 अंत)

• आठ/नौ रतन हैं तो उन्होंने राजाई की न। उनमें भी मोस्ट वैल्युएबल, नॉन वैल्युएबल भी दिखाते हैं। (रात्रिक्लास मु०30.1.74 पृ०1 अंत)

• पिछाड़ी में आठ ही विन करेंगे। (मु०17.8.73 पृ०3 अंत)

• अष्ट शक्तियों का प्रैक्टिकल स्वरूप अष्टदेव प्रत्यक्ष होते हैं। (अ०वा०23.1.80 पृ०236 मध्य)

• तेज याद करने वाले का ही ऊँच नाम होगा। विजयमाला का दाना बनेंगे। (मु०22.9.69 पृ०3 अंत)

• पूरा पावन बनने वाले ही सूर्यवंशी विजयमाला के दाने बनते हैं। वह धर्मराज के डण्डे नहीं खावेंगे। (मु०27.2.73 पृ०1 अंत)

• एक हैं स्थापना के आदि रत्न और दूसरे हैं सेवा के आरंभ के आदि रत्न। दोनों आदि रत्नों का महत्व है। (अ०वा० 28.2.03 पृ०93 मध्य)

• 8 रत्न मुख्य गाए जाते हैं। 8 रत्न और बीच में है बाप। 8 हैं पास विद ऑनर्स, सो भी नम्बरवार। (मु०ता०3.10.69 पृ०3 आदि)

• 8 बहुत अच्छे महावीर हैं, 108 उनसे कम, 16 हज़ार उनसे कम। (मु०ता० 24.11.73 पृ०1 अंत)

• पिछाड़ी में 8 विन करते हैं, याद करते–2 सबसे पहले जाते हैं। (मु०ता०18.8.78 पृ०3 अंत)

• इन्द्र सभा में कोई सब्ज परी, पुखराज परी भी हैं। हैं तो सब मदद करने वाले। जवाहरातों में किसम–2 (के) होते हैं ना। इसलिए 9 रतन दिखाए हुए हैं। (मु०7.2.76 पृ०3 मध्य)

• मुख्य 8 पास होते हैं। फिर 108 की माला बनती है। पुरुषार्थ कर ऊँच पद पाना है। रिजर्व कराया जाता है न। फर्स्ट क्लास, एयर कंडीशन। ऐसी कंडीशन में कुछ गर्म हवा नहीं लगेगी। तुमको कोई भी इस दुनिया के माया का वार न लगे। (मु०ता० 6.9.73 पृ०2 आदि)

• साथ में जाने वाले तो धर्मराज को टाटा करेंगे, धर्मराज के पास जाएँगे ही नहीं। (अ०वा०ता० 9.10. 81 पृ०33 मध्यांत)

• जो पूरा पुरुषार्थ कर विजयमाला का दाना बनते हैं वह सज़ाएँ से छूट जाते (हैं)। (मु०ता० 8.9.68 पृ०2 अंत)

• माला भी 9 रत्न की बनती है। क्रिश्चियन लोग बाँह में माला डालते हैं। बाकी जीवनमुक्ति वाले, प्रवृत्ति मार्ग वाले ठहरे। उनमें फिर फूल के साथ युगल दाना भी होगा। (मु०ता० 21.3.72 पृ०2 मध्य)

• 9 रत्न की मुंडी भी बनाते हैं। बहुत एडवर्टाइज़ करते हैं। नाम तो रत्न ही है ना। यहाँ बैठे हैं ना; परंतु उनमें भी कहेंगे– यह हीरा है, यह पन्ना है, यह माणिक, पुखराज, यह पिरोज़ा बैठे हैं। रात–दिन

का फ़र्क है। उनकी वैल्यू 100 तो उनकी वैल्यू एक रुपया। बहुत फ़र्क होता है। (मु०ता०7.9.68 पृ०1 अंत) [मु०ता०9.8.99 पृ०2 मध्य]

• आज बाप के सामने अति सिकीलधे, सदा दिलतख़्तनशीन 9 रत्न सामने हैं। अष्ट और इष्ट आत्माएँ सामने हैं। वह भी जान रहे हैं कि हमें बापदादा याद कर रहे हैं। ...... ऐसे रत्नों की विशेषताओं की बापदादा सदा माला सिमरण करते हैं। (अ०वा०ता० 6.10.81 पृ०19 अंत)

100 और 16000

• 16,108 की माला बहुत बड़ी है। अंत में आकर पूरी होगी। त्रेता अंत तक इतने प्रिंस–प्रिंसेज़ बनते हैं। कुछ तो नशा है ना। 8 की भी निशानी है। ...यह बिल्कुल राइट है। त्रेता अंत में इतने 16,108 प्रिन्स–प्रिन्सेज़ होते हैं। शुरू में तो नहीं होंगे। पहले थोड़े होते हैं, फिर वृद्धि होती जाती है। वे सभी बनते यहाँ हैं। चांस अभी बहुत अच्छा है; परन्तु मेहनत बहुत है। (मु०9.5.73 पृ०2 मध्यांत)

• राजा–रानी जो बनते हैं उनकी माला बनी हुई है। माला 8 की भी है तो 108 की भी है तो 16108 की भी है। इतनी बड़ी माला कैसे उठा सकेंगे? इसलिए ही 108 की छोटी बनाई है। 108 तो बहुत कम हैं। आधा कल्प में वृद्धि तो होती होगी ना। (मु०1.2.67 पृ०2 मध्य)

• आज भी बाबा बोले, अब माला तैयार करो। माला तैयार होना अर्थात् खेल खतम। .... ब्रह्मा अपने तीव्र पुरुषार्थ के संस्कार प्रमाण माला बनाने लगे और बाप मुस्कुराने लगे। .... 100 की माला फिर भी 90: बन गई; लेकिन 8 की माला में बदली बहुत थी। किसको 4 नं० दें, किसको 5 नं० दें।
(अ०वा०18.1.79 पृ०230 अंत–231 आदि)

• चाहे 16000 का लास्ट दाना भी हो; लेकिन उसमें भी कोई न कोई विशेषता है; इसलिए ही बाप की नज़र उस आत्मा के ऊपर पड़ती है। भगवान की नज़र पड़ जाए वा भगवान अपना बनावे तो ज़रूर विशेषता समाई हुई है। (अ०वा०26.1.88 पृ०233 आदि)

• एक भी पावरफुल संगठन होने से एक–दूसरे को खींचते हुए 108 की माला का संगठन एक हो जावेगा। एक मत का धागा हो और संस्कारों की समीपता हो, तब ही माला भी शोभेगी। (अ०वा०9.12.75 पृ०272 मध्य)

• 16,108 की माला में जाना, उनसे तो प्रजा में बड़े अच्छे धनवान होते हैं। (मु०8.1.68 पृ०4 मध्य)

• अभी तीव्र पुरुषार्थ की पॉलिश हो रही है। पॉलिश में थोड़ी बहुत कमी छिप जाती है। जब आठ नम्बर हैं तो कुछ तो कमी होगी ना पहले से; लेकिन इतनी नहीं होगी जो स्पष्ट दिखाई दे। (अ०वा०19.12.78 पृ०136 अंत)

• ऐसे नहीं है कि प्रवृत्ति वाले 108 की माला में नहीं आ सकते हैं। मन से सरेंडर, सरेंडर की लिस्ट में ही हैं। (अ०वा० 28.2.03 पृ०93 अंत)

• मुख्य है 108 की माला। तो (दिलवाड़ा मंदिर में) 108 कोठरियाँ बना दी हैं। 108 की ही पूजा होती है। (मु०ता० 4.11.73 पृ०2 मध्यांत)

• यह नहीं सोचो कि 108 में कितने आएँगे, हम कहाँ आएँगे– यह नहीं सोचो। पहले गिनती करने लग जाते हैं– दादी आएँगी, दीदी आएँगी, फिर दादे भी आएँगे ... हमारा नं० आएगा या नहीं, पता नहीं। ... एक दाना बीच से टूट जाए, निकल जाए तो माला अच्छी नहीं लगेगी। सिर्फ यह नहीं करना, बाकी बाबा की गारंटी है आप ज़रूर आएँगे। (अ०वा० 6.3.97 पृ०40 मध्य)

सीढ़ी-

इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?

- ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में ख़त्म होगी। यह कोई अमरलोक नहीं है। (मु०26.10.68 पृ०2 अंत)
- बाप तुम बच्चों को 21 जन्मों लिए 100 प्रतिशत हेल्दी बनाते हैं। (मु०21.10.74 पृ०1 मध्यादि)
- तुम 21 जन्म स्थायी पवित्र रहते हो। (मु०10.11.68 पृ०1 अंत)
- घर में ही हास्पिटल खोलो। बोर्ड लिख दो– यहाँ से ऐसी दवाई मिलती है, जो तुम भविष्य 21 जन्म कब बीमार नहीं पड़ोगे। (मु०14.10.73 पृ०4 अंत)
- मैं तुमको 21 जन्म लिए पढ़ाकर स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी घराने की बरोबर स्थापना होती है। (मु०4.7.71 पृ०2 आदि)
- अब की कमाई वहाँ 21 जन्म चलती है। (मु०25.2.67 पृ०2 आदि)
- यह अभी का तुम्हारा पुरुषार्थ भविष्य 21 जन्मों के लिए हो जावेगा। (मु०24.2.75 पृ०3 अंत)
- ज्ञान गीता एक ही ज्ञान सागर सुनाते हैं, जिससे 21 जन्म सद्‌गति होती है अथवा 100 प्रतिशत पवित्रता, सुख–शांति, अटल, अखण्ड सतयुगी दैवी स्वराज्य मिलता है 21 जन्मों के लिए। (मु०7.2.69 पृ०1 मध्य)
- इस अंतिम जन्म के लिए मूत छोड़ो। यह छोड़ो तो 21 जन्मों के लिए तुम्हारी काया कल्पतरु कर दूँगा। है बहुत सहज बात। (मु०20.4.72 पृ०1,2) [मु०20.4.77 पृ०2 आदि]
- तुम ब्राह्मणों का यह एक ही जन्म है। देवता वर्ण में तुम 21 जन्म लेते हो। वैश्य, शूद्र वर्ण में 63 जन्म लेते हो। ब्राह्मण वर्ण का यही एक अंतिम जन्म है, जिसमें ही पवित्र बनना है। ... अभी इस अंतिम जन्म में तुम पावन बनेंगे तो 21 जन्म पावन ही बने रहेंगे। (मु०10.2.67 पृ०1 अंत) [मु०12.2.75 पृ०1 अंत]
- आप सबका वायदा है कि हम बाप द्वारा 21 जन्मों के लिए जीवनमुक्त अवस्था का पद प्राप्त कर रहे हैं, करेंगे ही। ... 21 जन्म में एक जन्म संगम का है। आपका वायदा 21 जन्मों का है, 20 जन्मों का नहीं है। (अ०वा०18.1.08 पृ०2 अंत)
- बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है। ... बच्चे जो विचार–सागर–मंथन कर ऐसे–2 चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनको शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है। (मु०ता० 29.2.76 पृ०2,3)
- सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का। जिन्न की भी कहानी बताते हैं। यह सभी दृष्टांत आदि इस समय के ही हैं। तुम्हारे ऊपर ही बने हुए हैं। (मु०ता० 18.11.70 पृ०2 अंत)
- 84 जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिनका आदि से अंत तक पार्ट है। (मु०ता० 11.3.73 पृ०1 मध्यादि)
- यह 84 जन्मों की कहानी जो बाप सुनाते हैं, यह भी भारतवासियों के लिए है। (मु०ता० 9.2.71 पृ०1,2)
- देवी–देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हैं। (मु०ता० 16.7.73 पृ०2 अंत)
- बाप कहते हैं मैंने तुमको राजाई दी। तुम सब धन–दौलत खत्म कर भीख माँग रहे हो। (मु०ता० 17.11.76 पृ०3 मध्य) [मु०ता० 20.11.96 पृ०3 अंत]
- वह कलियुगी सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं और तुम पुरुषोत्तम संगमयुगी सीढ़ी ऊपर चढ़ते जाते हो। (मु०ता० 28.3.89 पृ०2 मध्यादि)
- काली की भी महिमा गाते हैं– असुरों के संघार करने वाले हैं। ... काली को माता कहते हैं। ... ऐसे नहीं कहेंगे जगदंबा कोई असुरों का संघार करते हैं। (तो काली कौन?) (मु०ता० 27.2.72 पृ०1 मध्यादि)
- बाप कहते हैं मैं सन्मुख आता हूँ। तुम बच्चों को बेगर टू प्रिन्स बनाकर फिर मैं चला जाता हूँ।(मु०ता० 16.2.74 पृ०3 आदि) [मु० 17.2.99 पृ०3 आदि]

• यह ब्र०कु०कुमारियाँ। ब्राह्मण वर्ण एक जन्म। यह है मोस्ट वैल्युएबुल जन्म। लीप युग है। (मु०ता० 25.9.77 पृ०2 आदि) [मु० 29.9.07 पृ०2 अंत]

• हीरे जैसा जन्म सतयुग में नहीं कहेंगे। हीरे जैसा जन्म इस समय है; क्योंकि इस समय तुम ईश्वरीय सन्तान हो। (मु०ता० 26.10.72 पृ०1 अंत)

• तुम परमपिता परमात्मा शमा के आगे जीते जी मरते हो। तो यह है मरजीवा जन्म। जन्म तो ज़रूर माता–पिता साथ(पास) लिया जाता है। (मु०31.1.73 पृ०1 अंत) [मु०7.1.03 पृ०2 आदि]

• तुम विश्व का मालिक बनते हो 21 पीढ़ी। ... स्वर्ग की बादशाही तुम्हारे लिए है 21 पीढ़ी; क्योंकि तुम काल पर जीत पहन लेते हो। (मु०25.5.69 पृ०2 आदि) [मु०16.4.99 पृ०2 मध्य]

• श्रेष्ठ सूर्यवंशी–चंद्रवंशी 21 जन्मों के लिए महाराजा–महारानी बन जावेंगे। (मु०ता० 8.7.73 पृ०2 आदि)

संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि

• गीता, भागवत, महाभारत आदि में जो भी लिखा हुआ है उसकी अभी भेंट कर सकते हो कि बाप ने कैसे सहज राजयोग सिखलाया था, जो अभी फिर से सिखला रहे हैं। (मु०19.4.73 पृ०1 आदि)

• भागवत के साथ गीता का, गीता के साथ फिर महाभारत लड़ाई का कनेक्शन है। (मु०21.3.73 पृ०1 मध्यांत)

• अभी तुम समझते हो हमारा ही यादगार दिलवाला, गुरू शिखर है। बाप बहुत ऊँच रहते हैं ना। (मु०19. 7.68 पृ०3 मध्य)

• मंदिर भी अभी का पूरा यादगार है। हमने इस संगमयुग पर कर्तव्य किया है उनका यह यादगार मंदिर है। यादगार ईश्वर से शुरू होता है। (मु०19.11.72 पृ०2 आदि)

• जो होकर जाते हैं उनकी यादगार बनाते हैं। ....साधु–सन्त, शास्त्री आदि उनके कोई मंदिर नहीं हैं। देवताओं के मंदिर तो हैं ना। ज़रूर राज्य करके गए हैं, तो उनकी पूजा होती है। (मु०11.2.69 पृ०2 मध्य)

• कलियुग में भी जो रीति–रसम होते हैं वह सभी यहाँ संगम पर ही किस न किस रूप में होते हैं। (अ०वा०14.5.70 पृ०2 मध्य)

• ऊपर तुम्हारी पिछाड़ी की रिज़ल्ट की यादगार है। अभी तो ग्रहण लगता है। (मु०15.9.73 पृ०3 अंत)

• अभी जो कुछ होता है वह प्रैक्टिकल सभी कुछ हो रहा है। फिर इनका भक्तिमार्ग में गायन होगा। (मु०29.4.68 पृ०1 आदि)

• त्यौहार भी सभी इसी समय के ही हैं। (मु०11.3.67 पृ०3 अंत)

• इस समय जो कुछ भी प्रैक्टिकल में होता है उनके फिर भक्तिमार्ग में त्योहार मनाए जाते हैं। (मु०ता० 26.8.69 पृ०2 अंत) [मु०11.9.85 पृ०2 आदि]

• जो अच्छा कर्तव्य करके जाते हैं, उनका यादगार बनाते हैं। एक शिवबाबा ही है जिसका गायन भी होता है और पूजा भी होती है। ज़रूर वो शरीर द्वारा कर्तव्य करते हैं तब तो उनका गायन है। (मु०ता० 1. 10.66 पृ०1 मध्यांत) [मु०ता० 19.10.96 पृ०1 अंत]

• इस समय तुमको बाप जो समझाते हैं उनके फिर त्योहार भक्तिमार्ग में मनाए जाते हैं। (मु०ता० 1. 5.74 पृ०2)

• यह त्योहार आदि सब इस समय के हैं। (मु०ता० 17.11.91 पृ०3 आदि)

• दिलवाड़ा मंदिर में आदि देव का महावीर नाम रख दिया है। अब महावीर तो हनुमान को कहा जाता है। ... इस मंदिर में तुम्हारा हूबहू एक्युरेट यादगार है। ऊपर में स्वर्ग है। (मु०ता० 17.11.76 पृ०3 आदि)

• इस समय का ही गायन है गोप–गोपियों के अतीन्द्रिय सुख का। (मु०ता० 7.7.66 पृ०2 आदि)

संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर

• कृष्ण की राजधानी अपनी, राधे की राजधानी अपनी, फिर उन्हों की आपस में सगाई होती है। कृष्ण और राधे कोई भाई–बहन नहीं हैं। भाई–बहन की शादी तो कब होती नहीं। (मु०31.10.65 पृ०2 आदि) [मु०3.11.77 पृ०2 मध्यादि]

• राधे, कृष्ण के महल में आती थी, फिर उनके साथ प्यार हो गया। ऐसे नहीं, राधे–कृष्ण एक ही बाप के बच्चे थे। नहीं, अलग–अलग थे। राधे आती थी, फिर स्वयंवर हुआ। राधे–कृष्ण कोई भाई–बहन नहीं थे, दोनों अलग–2 अपनी–2 राजधानी में थे। (मु०14.7.73 पृ०3 मध्य)

• ल०ना० और राधे–कृष्ण का क्या कनेक्शन है? वह राजकुमारी, वह राजकुमार, अलग–2 राज्य के हैं। ऐसे नहीं कि दोनों आपस में भाई–बहन थे। वह अलग अपनी राजधानी में थी, वह अलग अपनी राजधानी का राजकुमार था। उन्हों का स्वयंवर होता है तो ल०ना० बनते हैं। (मु०26.10.73 पृ०2 मध्य)

• राधे का(के) और श्रीकृष्ण का(के) माँ–बाप राजे–रजवाड़े थे ना। फिर दोनों की शादी हुई है। दोनों अलग–2 गाँव के थे। एक गाँव से दूसरे गाँव ले जाते हैं डोली में बिठाए। फिर शादी होती है वा कोई कहे कृष्ण गया राधे पास उनको ले आने के लिए। फिर डाज(दहेज) में गाँव आदि सब देते हैं ना।
(मु०1.9.65 पृ०1 मध्य) [मु०3.9.77 पृ०1 मध्य]

• राधे–कृष्ण ही फिर ल०ना० बने हैं; परंतु वह बच्चे किसके थे, यह किसको पता नहीं है। कृष्ण की महिमा की है, राधे की कहाँ है! दोनों अलग–2 गाँव के प्रिंस–प्रिंसेज़ थे। ...... बगीचे में घूमने–फिरने जाती थी। फिर ड्रामा अनुसार उन्हों की आपस में दिल लगती है और सगाई हो जाती है। राधे–कृष्ण ही स्वयंवर बाद ल०ना० बनते हैं। (मु०13.11.71 पृ०2 अंत)

• प्रिंस–प्रिंसेज़ की शादी होती है तो 4/5 अपनी ही दासियाँ दे देते हैं; क्योंकि अगर वहाँ पर नई दासियाँ मिलेंगी तो उनसे माथा मारना पड़े सिखलाने के लिए। इसलिए ही अनन्य दासियाँ दे देते हैं कि कोई भी तकलीफ वो फील न करे। सतयुग में तो भाव–स्वभाव होता ही नहीं है।(मु०19.8.68 पृ०3 मध्यादि)

• स्वर्ग में राधे–कृष्ण होंगे। उन्हों की सगाई कोई पतित बनने लिए थोड़े ही होगी। वह तो पावन हैं ना। पावन होने से वहाँ योगबल से बच्चे पैदा होते। (मु०ता० 19.3.77 पृ०2 मध्य) [मु०ता० 18.3.07 पृ०2 मध्य]

• स्वर्ग में ल०ना० का राज्य था। अगर राधे–कृष्ण का राज्य कहते हैं तो भूल करते हैं। राधे–कृष्ण का राज्य होता नहीं; क्योंकि दोनों अलग–2 राजाई के प्रिन्स–प्रिन्सेज़ थे। राजाई के मालिक तो फिर स्वयंवर के बाद बनेंगे। (मु०ता० 11.9.68 पृ०1 मध्यादि)

• जमुना के कण्ठे पर राधे–कृष्ण, लक्ष्मी–नारायण थे। ऐसे नहीं राधे–कृष्ण राज्य करते। नहीं, राधे दूसरी राजधानी की थी, कृष्ण दूसरी राजधानी के। दोनों का फिर स्वयंवर हुआ। जमुना के कण्ठे पर रहते थे। यह उन्होंने भूल की है जो सिर्फ राधे–कृष्ण का नाम दे दिया है। स्वयंवर के बाद यही लक्ष्मी–नारायण बनते हैं, फिर इस परिस्तान में रहते थे। (मु०ता० 9.2.82 पृ०1 मध्यादि) [मु०ता० 13.02.97 पृ०1 मध्य]

संगमयुगी कृष्ण जन्म

• पहले–2 राधे–कृष्ण हुए। उन्हों को जन्म देने वाले ऊँच नहीं गिने जावेंगे। वह तो कम पास हुए हैं न। महिमा शुरू होती है कृष्ण से। राधे–कृष्ण दोनों अपनी–2 राजधानी में आते हैं। उन्हों के माँ–बाप से बच्चे का नाम जास्ती है। कितनी वंडरफुल बातें हैं! (मु०15.12.73 पृ०3 अंत)

• पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण। उनको वर्सा मिला है। उसने क्या कर्म किए जो अपने माँ–बाप से भी जास्ती मर्तबा पाया? राधा–कृष्ण के माँ–बाप की इतनी महिमा नहीं है जितनी राधे–कृष्ण की है। यह क्यों हुआ जो बच्चों का नाम जास्ती हो गया? वह महाराजा–महारानी कहाँ के थे जिनके पास राधे–कृष्ण ने जन्म लिया? यह बड़ी समझने की बातें हैं। (मु०22.1.72 पृ०1 अंत)

• कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का नाम ही नहीं। उनका बाप कहाँ है? ज़रूर राजा का बच्चा होगा ना। ....कृष्ण जब है तब थोड़े ही पतित रहते हैं। जब वह बिल्कुल खलास हो जाते हैं तब यह गद्दी पर बैठते हैं, अपना राज्य ले लेते हैं। तब से ही उनका संवत् शुरू होता है। लक्ष्मी–नारायण से ही संवत् शुरू होता है। (मु०29.1.71 पृ०3 अंत)

• भल पहले जब कृष्ण जन्मता है उस समय भी दूसरे कोई न कोई थोड़े बहुत रहते हैं जिनको वापिस जाना है। पतित से पावन बनने का यह संगमयुग है ना। जब पूरा बन जाते हैं तो फिर ल०ना० का नया राज्य, नया संवत् शुरू होता है, जिसको विष्णुपुरी कहते हैं। विष्णु के दो रूप ल०ना० से पालना होती है। (मु०3.9.72 पृ०2 आदि)

• कृष्ण जन्मता है जैसे रोशनी हो जाती है। चाहते भी हैं कृष्ण जैसा बच्चा मिले। तुम यहाँ आए ही हो प्रिंस–प्रिंसेज़ बनने, बेगर टू प्रिंस बनने। (मु०13.11.71 पृ०4 आदि)

• जब कोई भी छी–2 नहीं रहेगा तब कृष्ण आवेगा। (तब) तक तुम आते–जाते रहेंगे। कृष्ण को रिसीव करने वाले माँ–बाप आदि तो पहले ही से चाहिए ना। फिर सब अच्छे–2 रहेंगे बाकी सभी चले जावेंगे। तभी उसको स्वर्ग कहा जावेगा। तुम कृष्ण को रिसीव करने के लिए रहेंगे। भल तुम्हारा छी–2 जन्म होगा; क्योंकि रावण–राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो नहीं सकता। गुल–2 जन्म तो पहले–2 कृष्ण का ही होगा। (मु०4.10.69 पृ०2 अंत)

• कृष्ण का जन्म सतयुग में हुआ है। राधे का भी सतयुग आदि में कहेंगे। करके थोड़ा 2/4 वर्ष का फर्क होगा। (मु०18.8.72 पृ०2 अंत)

• कृष्णपुरी और कंसपुरी। दिखलाते हैं कृष्ण को उस पार ले गए। है इस संगम की बात। कृष्ण को उस पार नहीं ले गए। यह तो बेहद की बात है। अभी हम उस पार जा रहे हैं ना। (मु०17.11.72 पृ०3 आदि)

• देवकी को आठवाँ नम्बर श्रीकृष्ण बच्चा पैदा हुआ। अब आठवाँ नम्बर कृष्ण जन्म लेगा। कब? ...सतयुग में। ... सतयुग में कृष्ण के माँ–बाप को 8 बच्चे तो होते नहीं। ... फिर दिखलाते हैं उनका बाप उनको नदी से पार ले जाता था। (मु०18.8.72 पृ०2 मध्यादि, 3 अंत)

• कृष्ण जन्माष्टमी मनाते हैं। अब बच्चा तो माता के गर्भ से ही निकला। फिर दिखाते हैं उनको टोकरी में ले जाते हैं। अब कृष्ण तो वर्ल्ड का प्रिंस है, उनको फिर डर काहे का? वहाँ कंस आदि कहाँ से आए? ... ... अभी तुमको अच्छी रीति बैठकर समझाना चाहिए। (मु०20.3.69 पृ०1 अंत)

• जयंती भी श्रीकृष्ण की मनाते हो। ल०ना० की क्यों नहीं? पूरा ज्ञान न होने कारण श्रीकृष्ण को द्वापर में ले गए हैं। (मु०1.3.68 पृ०3 मध्यांत)

• जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं तब कृष्ण का जन्म होता है। ...गुल–2 जन्म कृष्ण का ही पहले–2 होता है। उसके बाद नई दुनिया वैकुण्ठ कहा जाता। ... कृष्ण से पहले जिनका जन्म होता है वह योगबल का जन्म नहीं कहेंगे। (मु०ता० 4.10.75 पृ०2,3)

• कृष्ण तो स्वर्ग में अपने माँ–बाप का बच्चा है। ...ज़रूर महारानी के गर्भ से पैदा होता है। ... वो वैकुण्ठ का प्रिन्स है। (मु०ता० 22.8.69 पृ०1 मध्य) [मु०ता० 7.9.85 पृ०1 मध्य]

• कृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो ज़रूर राजा पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़े ही कहलावेगा। ... कृष्ण का कितना नाम बाला है। बाप का ऊँच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है जो सिर्फ निमित्त बनते हैं कृष्ण को जन्म देने। (मु०ता० 21.7.69 पृ०2 मध्य)

• पहले सतयुग में ना० होगा। श्री ल० से भी पहले ना० आवेगा। वह तो बड़ा होगा ना। इसलिए कृष्ण का नाम गाया हुआ है। ... कृष्ण की ही जन्माष्टमी मनाते हैं, ना० का बर्थ डे नहीं मनाते। यह कोई नहीं जानते कि कृष्ण सो ना०। नाम तो बचपन का ही चलेगा ना। (मु०23.7.71 पृ०2,3)

संगमयुगी बालकृष्ण

- कृष्ण की डिनायस्टी नहीं कहेंगे। राधे–कृष्ण तो अलग–2 डिनायस्टी, अलग–2 राजाई के थे। प्रिंस–प्रिंसेज़ थे। अलग रहते थे। इसलिए कृष्ण की महिमा गाते रहते हैं। (मु०12.2.73 पृ०3 मध्यादि)
- राधे–कृष्ण का राज्य नहीं कह सकते, राज्य ल०ना० का कहेंगे। राधे एक घर की, कृष्ण दूसरे घर का तो उनके लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि इनका राज्य है। कृष्ण को सभी बहुत प्यार करते हैं, याद करते हैं। राधे को इतना नहीं करते हैं। वास्तव में माताओं की हमजिंस राधे है। उनको जास्ती प्यार करना चाहिए। (मु०13.8.76 पृ०1 आदि)
- कृष्ण को बहुत याद करते हैं। झूले में झुलाते हैं। (मु०13.8.76 पृ०1 मध्यादि)
- पहले नम्बर में है कृष्ण। वो है कुमार, इसलिए ही उनकी महिमा जास्ती है। (मु०5.5.67 पृ०2 अंत)
- भारत का पहले नम्बर का प्रिंस है कृष्ण, जिसको झूले में झुलाते भी हैं। (मु०6.4.71 पृ०1 मध्यांत)
- कृष्ण की बहुत ग्लानि की है। (मु०11.8.68 पृ०2 आदि)
- मटकी फोड़ी, माखन खाया– यह सब उस (कृष्ण) के लिए झूठ बोलते हैं। (मु०23.8.68 पृ०3 आदि) [मु०23.8.74 पृ०3 आदि]
- कृष्ण को महात्मा, योगेश्वर कहते हैं। (मु०30.6.64 पृ०3 अंत)
- कहते हैं– बाबा, बच्चे बहुत अशांत करते हैं। स्वर्ग में कृष्ण थोड़े ही माँ–बाप को अशांत करेगा। शास्त्र में लिखा है माँ को तंग किया, उनको बाँधा गया। ऐसा हो नहीं सकता। स्वर्ग में कोई किसको जानवर भी तंग नहीं करते हैं तो मनुष्य कैसे करेंगे? (बात संगम की है) (मु०17.5.73 पृ०4 आदि)
- कृष्ण को कितना झुलाते हैं। उनके लिए ही कहते हैं कृष्ण साँवरा और कृष्ण गोरा। (मु०21.7.72 पृ०2 मध्यादि)
- कृष्ण का शरीर सतयुग में होता है (और आत्मा संगम में)। (मु०27.5.74 पृ०1 मध्य)
- दिखाते हैं, गोप–गोपियों ने कृष्ण को डांस कराया। यह बात इस समय की है। (मु०4.4.73 पृ०3 मध्य)
- कृष्ण को योगेश्वर कहते हैं; परंतु वह तो प्रिंस है। योगेश्वर तुम हो, जिनका ईश्वर से सच्चा योग है। (मु०25.9.73 पृ०4 अंत)
- कृष्ण के साथ कितनी सुंदर गइयाँ दिखाते हैं। ... वहाँ की गइयाँ भी बहुत अच्छा दूध देती थीं। ...... वहाँ का नाम भी है कपला गऊ। दिखाते हैं, गइयाँ चोरी कर ले गए। अभी तुम समझते हो तुमको चोरी कर ले जाते थे ना। (मु०18.3.68 पृ०4 आदि)
- माताएँ श्रीकृष्ण के मुख में मक्खन देखती हैं। वह है स्वर्ग रूपी मक्खन। (मु०25.4.77 पृ०2 मध्यांत)
- द्वापर में कृष्ण के साथ कंस, जरासिंधी आदि बैठ दिखाए हैं। वास्तव में इस समय सब हैं राक्षस सम्प्रदाय। (मु०10.10.73 पृ०3 मध्य)
- कृष्ण के लिए भी दिखाते हैं ना उनको रस्सी से बाँध लेते थे। ऐसी चंचलता कोई वहाँ होती नहीं है। (मु०23.9.77 पृ०2 अंत)
- फिर भी ल०ना० से कृष्ण तीखा ठहरा ना; क्योंकि बाल ब्रह्मचारी है ना। (मु०31.3.69 पृ०3 आदि)
- राधे–कृष्ण के माँ–बाप की इतनी महिमा नहीं है, जितनी राधे–कृष्ण की है। (मु०22.1.72 पृ०1 अंत)

• यह नहीं जानते दोनों अलग–2 राजधानी के हैं। फिर उनका स्वयंवर होता है, ल०ना० बनते हैं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। (मु०29.1.70 पृ०1 अंत)

• भगवानुवाच..., भूल से ...भगवानुवाच कृष्ण समझ लिया है; क्योंकि कृष्ण हुआ नेक्स्ट टू गॉड। (मु०ता० 16.9.68 पृ०3 अंत)

• कृष्ण को भी श्याम–सुन्दर कहते हैं ना। उनकी आत्मा इस समय काली हो गई है। ....फिर ज्ञान चिता पर बैठने से गौरा बनेंगे। तुम अभी पवित्र बनने से 21 जन्म सुन्दर बनेंगे, फिर श्याम बन जावेंगे। ... श्याम से सुन्दर बनना सेकेण्ड का काम है। सुन्दर से श्याम बनने में आधा कल्प लग जाता है। (मु०ता०19.3.77 पृ०3 मध्य) [मु०ता०18.3.07 पृ०3 अंत]

• कृष्ण के लिए भी कहते हैं सांवरा और गोरा। यह समझानी है इस समय की तुम्हारे लिए। ....काम चिक्षा पर बैठने से सांवरा बन गया, फिर उनको गाँव का छोरा भी कहा जाता है। बरोबर था ना। कृष्ण तो हो न सके। इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में बाप प्रवेश कर गोरा बनाते हैं। (मु०29.12.67 पृ०1 अंत) [मु०8.12.00 पृ०2 मध्य]

• कृष्ण को कहा जाता है श्याम–सुंदर। ... सतयुग से कलियुग में कैसे आते हैं, तुमको नं०वन से लेकर मालूम पड़ा है। ... उनकी जन्मपत्री मिल गई तो सारे चक्र की मिल गई। (मु०ता० 11.4.68 पृ०3 मध्यांत)

• कृष्ण के बचपन से लेकर बड़ेपन तक सारी 84 जन्मों की कहानी तुम बच्चे समझ जाते हो। (मु०ता०12.4.68 पृ०1 अंत) [मु०ता०4.3.04 पृ०2 आदि]

• श्रीकृष्ण को ल०ना० से भी ऊँच समझते हैं; क्योंकि वह फिर भी शादी किए हुए हैं। कृष्ण तो जन्म से ही पवित्र है इसलिए कृष्ण की बहुत महिमा है। श्रीकृष्ण को ही झूले में झुलाते हैं। (मु०ता० 25.3.69 पृ०3 मध्यांत)

• सबसे पुराने ते पुराना यह है कृष्ण। नए ते नया भी कृष्ण ही था। ... सांवरा कृष्ण देखकर भी बहुत खुश होते हैं। झूले में भी सांवरे को ही झुलावेंगे। उनको क्या पता कि गोरा कब था....। कृष्ण को कितना प्यार करते हैं। राधा ने क्या किया? (मु०ता० 17.8.68 पृ०3 अंत)

• कृष्ण भी राजयोग सीख रहे हैं। ... राधे–कृष्ण कोई आपस में बहन–भाई नहीं थे। (मु०ता० 22.8.73 पृ०3 मध्यांत)

• कृष्ण तो संगम पर हो नहीं सकता। हाँ, कृष्ण की आत्मा ज़रूर है। वह भी सीखकर फिर औरों को सिखलाती है। यह है मुख्य। पहला नंबर प्रिन्स। ... राधे भी साथ में है; परंतु फर्स्ट प्रिन्स यह है, राधे तो फिर भी बाद में जन्म लेती है। (मु०11.12.71 पृ०2 आदि)

• राधे–कृष्ण के माँ–बाप इतने मार्क्स नहीं उठा सकते, जितने राधे–कृष्ण उठाते हैं। उनके माँ–बाप इतने ऊँच नहीं बनते हैं। ऊँच यह पढ़ाई पढ़ते हैं। फिर जन्म तो ज़रूर किसके पास लेना पड़े। तो जिसके पास जन्म लिया उनका इतना नाम नहीं होता। यह सभी बातें बुद्धि में अच्छी रीत रखनी पड़ती हैं। पहले तो ज़रूर उनके माँ–बाप आते होंगे। फिर यह बच्चे का नाम बाला होता है। यह बातें बड़ी गुप्त हैं। (मु०ता० 11.12.71 पृ०2 अंत)

• पहले नं० में है श्रीकृष्ण फर्स्ट प्रिंस। श्री नारायण तो बाद में बनता है जब बड़ा होता है। वह भी 15/20 वर्ष कम हो जाती(जाते) हैं। उनको भी पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे। नं० वन है श्रीकृष्ण। (मु०28.8.71 पृ०1 मध्यांत)

संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स

• बाप के नेक्स्ट (दूसरा नम्बर) है कृष्ण। वह परमधाम का मालिक, तो यह विश्व का मालिक। सूक्ष्मवतन में तो कुछ होता ही नहीं है। (मु०6.1.69 पृ०3 मध्यांत)

• कृष्ण को भगवान क्यों कह देते? क्योंकि भगवान ने कृष्ण को ऐसा बनाया है। इसलिए उनको भी भगवान–भगवती कह देते हैं। कहेंगे, उन्हों को ऐसा किसने बनाया? भगवान ने। (मु०9.6.69 पृ०4 आदि)

• कृष्ण भगवान है नहीं। वह तो सबसे जास्ती अर्थात् पूरे 84 जन्म लेते हैं। इस समय वह कहाँ होगा? ज़रूर बेगर होगा। जैसे क्राइस्ट के लिए भी कई समझते हैं कि वह बेगर के रूप में है। (मु०13.9.68 पृ०2 मध्य)

• कृष्ण को तो कोई भी जान लेंगे। सभी विलायत वाले भी उनको जानते हैं, लॉर्ड कृष्ण कहते हैं ना। ... अभी भगवान को भला लॉर्ड कहा जाता है क्या? लॉर्ड कृष्ण कहते हैं। लॉर्ड का टाइटल वास्तव में बड़े आदमी को मिलता है। (मु०13.10.68 पृ०1 मध्य)

• समझते हैं कृष्ण गीता का भगवान था। उसके समय महाभारत की लड़ाई लगी थी। फिर जय–जयकार हुआ था और वैकुण्ठ के द्वार खुले थे। कृष्ण ने जाकर पहले राज्य किया था। (मु०26.9.73 पृ०3 आदि)

• अभी तो कृष्ण को भी डुबो देते। यहाँ कृष्ण की पूजा कर फिर कृष्ण को डुबो दिया है। (मु०23.8.74 पृ०2 अंत)

• कृष्ण के मंदिर को भी सुखधाम कहते हैं। (मु०12.8.68 पृ०3 मध्यादि)

• पूरे कर्मातीत अवस्था वाले राधे–कृष्ण ही हैं। (मु०4.10.75 पृ०3 आदि)

रावण-राज्य की शूटिंग

(1) अर्धविनाश (2) सोमनाथ स्थापना

• भक्तिमार्ग में सोमनाथ का मंदिर बनता है। सो भी कुछ समय बाद में बनता होगा, फिर पूजा शुरू होगी। (मु०24.8.73 पृ०2 मध्यांत)

• जो सम्पूर्ण निर्विकारी होकर जाते हैं उनके मंदिर बनाकर विकारी लोग उनकी जाकर पूजा करते हैं। (मु०16.10.73 पृ०1 आदि)

• चैतन्य देवताओं के जड़ मंदिर बनाकर उन्हों को फिर विकारी लोग पूजते हैं। (मु०6.3.73 पृ०3 मध्य)

• देवी–देवताएँ वाममार्ग में आते हैं तो सोमनाथ का मन्दिर बनाते हैं। (मु०ता० 19.8.73 पृ०1 मध्य) [मु०ता० 12.8.83 पृ०1 मध्यांत]

• तुमको पहले–2 पूजा करनी होती है अव्यभिचारी एक शिवबाबा की। सोमनाथ का मंदिर बनाने की और किसकी ताकत नहीं है। (मु०6.3.70 पृ०3 मध्यांत)

• जिन्होंने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं उन्होंने ही जास्ती बुलाया है। वही शिव अथवा सोमनाथ मंदिर की स्थापना करते हैं। (मु०ता०25.9.73 पृ०1 आदि)

• ऐसे नहीं कि फट से मंदिर, चित्र आदि बन जाते हैं। वह तो आहिस्ते–2 (धीरे–2) बाद में बनते जाते हैं। पहले–2 शिव का बनेगा। वह भी पहले घर में सोमनाथ का मंदिर बनाते हैं। (मु०ता० 11.11.73 पृ०1 अंत)

(3) गणेश-हनुमान की पूजा

• बॉम्बे में गणेश पूजा बहुत होती है। लाखों खर्चा करते हैं। (मु०29.10.73 पृ०3 आदि)

• बाप ने समझाया है भक्ति वास्तव में प्रवृत्तिमार्ग वालों को ही करनी है। (मु०ता० 4.10.75 पृ०3 मध्य)

• पूजा भी पहले शुरू होती है अव्यभिचारी। पहले शिव की ही पूजा करते हैं। उनके मंदिर बनाते हैं, फिर ल०ना० के बनावेंगे। ... फिर राम–सीता के मंदिर बनाने लग पड़ेंगे। फिर कलियुग में देखो– गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि–2 का अनेकानेक देवियों आदि के चित्र बनाते रहते हैं। (मु०ता० 9.2.71 पृ०2 आदि) [मु०ता० 6.9.96 पृ०2 मध्य]

• पुजारी बनते हो तो पहले–2 शिव की पूजा करते हो। देवताओं की पूजा को भी व्यभिचारी पूजा कहेंगे। सतयुग में वो सतोप्रधान, फिर सतो, फिर देवताओं से भी उतरकर पानी के(की), मनुष्यों की, पक्षियों की पूजा करने लग पड़ते हैं। (मु०ता० 27.8.69 पृ०1 मध्यांत)

• आजकल तो देखो हनुमान बंदर आदि की भी पूजा करते रहते हैं। जानवर की पूजा करनी है तो सबसे अच्छा मोर है। (मु०ता० 7.8.67 पृ०3 अंत) [मु०ता० 21.8.85 पृ०3 अंत]

• देवताओं को तो फिर भी वैकुण्ठ में देखेंगे। हनुमान तो फिर भी वैकुण्ठ में नहीं होगा। (मु०ता० 17. 8.69 पृ०3 मध्यांत)

• पहले–2 अव्यभिचारी भक्ति शुरू हुई। अभी कितनी व्यभिचारी भक्ति है। शरीरों की भी पूजा करते हैं, उनको भूत पूजा कहा जाता है। शरीर 5 भूतों का बना हुआ है। (मु०ता० 11.8.91 पृ०2 मध्य)

• भक्ति तो जन्म–जन्मांतर करते आए हैं। अब कितने व्यभिचारी भक्त हैं। शरीरों की भी पूजा करते रहते हैं। इनको भूत पूजा कहा जाता है। शरीर 5 भूतों का बना हुआ है ना। (मु०ता० 23.7.71 पृ०2 अंत)

(4) चित्रकला प्रदर्शनी

• आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं। (मु०8.5.74 पृ०1 मध्यांत)

• भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती है। शिव के मंदिर में जाओ तो वहाँ और भी ढेर चित्र रखे हुए होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे ना। (मु०29.2.68 पृ०2 मध्य)

• बहुत चित्र होने से मनुष्यों का खयालात सारा चित्रों में ही चला जाता है। ...... पहाका है ना टू मैनी क्वीन्स...। (मु०23.2.69 पृ०2 अंत)

• सभी के चित्र रखते रहेंगे तो उनको क्या कहेंगे? व्यभिचारी भक्ति ठहरी ना। (मु०ता० 19.12.70 पृ०3 अंत)

• अभी तो देखो– देवताओं के चित्र कितने जगह रख दिए हैं। (मु०17.9.68 पृ०2 मध्यादि)

• चित्र आदि जो भी बनाए हैं बेसमझी के। (मु०ता० 13.3.71 पृ०2 मध्य)

• प्रदर्शनी पर कितना खर्च करते है! लिखते भी हैं अच्छा प्रभावित हुआ। (मु०ता० 10.6.76 पृ०3 आदि)

• प्रदर्शनी आदि द्वारा प्रजा तो ढेर बनती रहती है। (मु०ता० 4.1.74 पृ०3 मध्यांत) [मु०ता० 27.1.99 पृ०4 आदि]

• प्रदर्शनी अथवा म्युज़ियम में शांति थोड़े ही रहती है। वहाँ तो बहुत ही आवाज़ हो जाता है। उनको स्कूल नहीं कहा जाता। वह जैसे मेला हो जाता है। .... इसलिए तुम कहते हो एकांत में आ करके समझना। (मु०4.10.68 पृ०1 अंत)

(5) शास्त्र निर्माण

• ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू होते हैं। नहीं। बाद में बनते हैं। पहले तो चित्र बनते, फिर उनकी जीवन कहानी बनाते हैं। पहले चित्र बनावे, तब फिर शास्त्र बनावे। टाइम लगता है। दो/पाँच सौ बरस बाद में बैठ शास्त्र बनाए हैं। (मु०9.8.64 पृ०3 अंत) [मु०7.8.73 पृ०3 मध्यादि]

• वेदों–शास्त्रों (को) कहा जाता है भक्ति मार्ग, ज्ञान नहीं। (मु०ता०31.8.68 पृ०2 मध्य)

• यह सभी धर्मशास्त्र बनते ही बाद में हैं। कितने अनेक मठ–पंथ हैं। सभी के अपने–2 शास्त्र हैं। (मु०ता० 19.2.70 पृ०3 आदि)

• मनुष्यों की बुद्धि में भक्तिमार्ग के शास्त्रों की बातें ही भर गई हैं। शास्त्र ही बैठ पढ़कर सुनाते हैं। ... वास्तव में भारत के इतने शास्त्र होनी(ने) न चाहिए। (मु०ता० 17.9.68 पृ०2 मध्यादि)

• शास्त्र पढ़ते ही हैं भगवान को पाने के लिए और भगवान कहते हैं मैं किसको भी शास्त्र पढ़ने से नहीं मिलता। (मु०ता० 27.7.70 पृ०2 अंत)

• दिन–प्रतिदिन बड़े किताब बनाते जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं! (मु०ता० 24.5.64 पृ०1 अंत)

• जीवन कहानी में ही नाम बदल लिया है। बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है। (मु०ता० 7.8.74 पृ०3 आदि)

• गीता में सिर्फ नाम बदल लिया है। संगम होने कारण यह भूल कर दी है। (मु०ता० 8.7.73 पृ०2 मध्य)

• व्यास भगवान ने तो वहाँ भी भ्रष्टाचारी लिख दिया है। ... अपने बड़ों को गालियाँ देना, यह भारत में ही होता है। (मु०ता० 5.1.72 पृ०2 अंत)

(6) मेला में मैला

• मेले–मलाखड़े सब दुर्गति में ले जाने वाले हैं। बाप तो बच्चों को समझावेंगे ना। (मु०25.11.72 पृ०2 अंत)

• अभी तो भक्ति की कितनी धूम–धाम हो गई है। मेले–मलाखड़े आदि भी लगते रहते हैं, तो मनुष्य जाकर दिल बहला कर आवें। (मु०22.5.69 पृ०1 अंत)

• जो कुम्भकरण की अज्ञान नींद में बहुत सोए हुए हैं वही कुम्भ का मेला मनाते रहते हैं। यह नागे साधु लोग कुम्भ का मेला लगवाते हैं। इनकी बहुत नेशनलिटी और हैं। उन्हों की फिर मीटिंग होती है। (मु०6.1.72 पृ०1 आदि) [मु०7.1.77 पृ०1 आदि]

• मेले–मलाखड़े में कितने मैले हो जाते हैं। मिट्टी बैठ कर ज़ोर से मलते हैं। (मु०ता० 1.5.74 पृ०2)

• उन मेलों पर तो मनुष्य मैले जाकर होते हैं। पैसे बरबाद करते रहते हैं, मिलता तो कुछ भी नहीं। (मु०ता० 14.5.70 पृ०2 अंत)

• कुम्भ के मेले में बहुत छोटे–2 नागे लोग आते हैं। दवाई खा लेते हैं, जिससे कि कर्मेन्द्रियाँ ठंडी पड़ जाती हैं। (मु०ता० 31.8.68 पृ०2 अंत) [मु०ता० 21.8.84 पृ०2 मध्य]

(7) तीर्थ यात्राएँ

• बाप कहते हैं जो धक्के खाते हैं वे मुझे नहीं जानते हैं। उनको पता नहीं है कि बाप पढ़ाकर वर्सा दे रहे हैं विश्व का मालिक बनाने। तुम अभी धक्के खाने से छूट गए हो। (मु०2.6.73 पृ०3 मध्य)

• जिस्मानी पण्डों को तीर्थ कितने याद पड़ते हैं; क्योंकि घड़ी–2 जाते हैं। (मु०4.9.73 पृ०1 मध्य)

• परमात्मा कोई पहाड़ (पर) तो नहीं बैठा है। जाते हैं अमरनाथ, बदरीनाथ। अभी वहाँ रखा क्या है? जड़ चित्रों का दर्शन करने जाते हैं; क्योंकि वह पवित्र हैं। (मु०4.9.73 पृ०3 आदि)

• बाबा थोड़े ही तुमको कहेंगे कि जिस्मानी यात्रा पर चलो या जाओ। (मु०ता०13.5.73 पृ०1 मध्यांत)

• वहाँ तीर्थ यात्राओं पर जाते हैं तो कितने पैसे खर्च करते हैं। ... बड़े–2 आदमी, राजाएँ आदि भी जाकर दान–पुण्य करते हैं। ... वह हैं जिस्मानी यात्राएँ, तुम्हारी है रूहानी यात्रा। (मु०ता० 7.7.66 पृ०2 अंत)

(8) हाय शिवबाबा बचाओ...

• बाप कहते हैं इस समय हरेक दुर्योधन और द्रौपदियाँ हैं। दुर्योधन, द्रौपदी को नगन करते हैं। ... द्रौपदियाँ तो वास्तव में सभी ठहरीं। कुमारी अथवा माता सभी द्रौपदियाँ हैं। कीचक तो ढेर हैं जो पिछाड़ी पड़ते हैं। ... कीचक आदि की अभी की बात है। (मु०ता० 7.5.73 पृ०2 मध्य)

• विघ्न भी इसमें पड़ते हैं; क्योंकि बाप पवित्र बनाते हैं। द्रौपदी ने भी पुकारा....। सारी दुनिया में द्रौपदियाँ और दुर्योधन हैं। (मु०26.3.89 पृ०2 आदि)

संगमयुगी स्वर्ग

• यह है ही उल्लुओं की दुनिया। सतयुग है अल्लाहों की दुनिया। भगवती–भगवान को अल्ला कहेंगे। (अभी तो) सभी उल्टे लटके हुए हैं। (मु०5.3.73 पृ०1 मध्यांत) [मु०5.3.78 पृ०1 मध्यांत]

• गाते हैं ना पियर घर से चली ससुर घर। तो तुम्हारा यह है ब्रह्मा का पियर घर। तुम अभी स्वर्ग, ससुर घर जावेंगे। (मु०1.4.73 पृ०3 आदि)

• वहाँ भी बाप साथ होगा। यहाँ सरस्वती साथ ब्रह्मा है। वहाँ भी ज़रूर दोनों चाहिए। निशानी चाहिए। (मु०4.7.77 पृ०2 मध्यादि)

• सतयुग में लॉ नहीं, काल खा गया। वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे। एक खाल छोड़ दूसरी ले लेते हैं, जैसे सर्प खाल बदलते हैं। वहाँ सदैव खुशी ही खुशी रहती है। (मु०12.2.73 पृ०3 अंत)

• वहाँ तो पवित्र रहते हैं। शादी बड़ी धूम–धाम से होती है। महाराजा–महारानी बनते हैं। सारी दुनिया कहती है सतयुग हैविन, वायसलेस वर्ल्ड है। (मु०18.4.73 पृ०2 अंत)

• जब सतयुग था तो चढ़ती कला थी और बाकी सब आत्माएँ मुक्तिधाम में थीं। (मु०22.2.71 पृ०2 मध्यादि)

• सतयुग में पहले–2 डीटी डिनायस्टी का राज्य होगा। उनके गाँव होंगे। छोटे–2 इलाके होंगे। यह भी विचार–सागर–मंथन करना है। साथ–2 शिवबाबा से बुद्धियोग लगाना है। हम याद से ही बादशाही लेते हैं। (मु०5.4.71 पृ०2 अंत)

• सतयुग में तुम विष्णु के गले का हार बनते हो, जिसकी वैजन्तीमाला बनी हुई है। पहले रुद्रमाला में पिरोते हो। यह है ही राजसूय रुद्र ज्ञान यज्ञ। (मु०11.9.73 पृ०1 मध्य)

• हर 5000 (वर्ष) बाद बाप आते हैं। भारत ही पैराडाइज़ बनते हैं। कहते भी हैं क्राइस्ट से इतने वर्ष पहले पैराडाइज़ था, स्वर्ग था। अभी नहीं है। (मु०1.2.71 पृ०3 अंत)

• यह संगम की दरबार सतयुगी दरबार से भी ऊँची है। ... सतयुगी ताज इस ताज के आगे कुछ नहीं है। (अ०वा०14.5.70 पृ०251 मध्य)

• संगमयुगी स्वर्ग, सतयुगी स्वर्ग से भी ऊँचा है। (अ०वा०20.11.85 पृ०48 मध्य)

• सतयुग में ल०ना० के हीरे–जवाहरों के महल थे। (मु०3.4.71 पृ०3 मध्य)

• थोड़े ही दिन इस दुनिया में हो, फिर तुम बच्चों को यह स्थूलवतन भासेगा ही नहीं, सूक्ष्मवतन और मूलवतन ही भासेगा। (मु०ता० 7.3.67 पृ०2 अंत)

• कृष्ण का राज्य जमुना नदी किनारे कहा जाता है। दिल्ली को ही परिस्तान कहा जाता है। इस समय है कब्रिस्तान।(मु०ता० 7.4.73 पृ०2 मध्यांत)